www.deshbandhu.co.in खबरें लगातार ...
पत्र नहीं; मित्र
RNI No. - MPHIN/2018/76121

देशबन्धु

वर्ष – 7 । अंक – 339 । नर्मदापुरम, सोमवार 17 मार्च 2025 । पृष्ठ–8 । मूल्य – 2.00 रुपए

राज्यसभा सांसद ने वैगन रिपेयर वर्कशॉप में परस्थ रेलकर्मी का किया सम्मान पृष्ठ 2
मुस्लिम के बिना भारत की राजनीति नहीं चल सकती
आम लोगों के गिरते जीवन स्तर और बेरोज़गारी पैदा कर रही सामाजिक तनाव पृष्ठ 4
जैन धर्मशाला को लेकर 2 पक्षों में विवाद का वीडियो वायरल पृष्ठ 6
राजगढ़ अंचल में स्थापित होंगे नए उद्योग पृष्ठ 8

सार-समाचार

प्रसिद्ध कवि रमाकांत रथ का निधन

भुवनेश्वर, एजेंसी। ओडिया भाषा के प्रसिद्ध कवि और पूर्व प्रशासनिक अधिकारी रमाकांत रथ का रविवार को उनके खारवेल नगर स्थित आवास पर निधन हो गया. वह 90 वर्ष के थे. उनके परिवार में तीन बेटियां और एक बेटा है. राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उनके निधन पर शोक व्यक्त किया।

राष्ट्रपति ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर लिखा कि रमाकांत रथ भारतीय साहित्य जगत के प्रमुख हस्तियों में से एक थे और उन्होंने ओडिया साहित्य को समृद्ध किया. प्रधानमंत्री मोदी ने भी अपनी संवेदना प्रकट करते हुए कहा कि उनकी रचनाएं समाज के सभी वर्गों में लोकप्रिय थीं। ओडिशा के मुख्यमंत्री मोहन चरण मांझी ने गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि रमाकांत रथ का योगदान प्रशासन और साहित्य दोनों क्षेत्रों में अविस्मरणीय रहेगा। रमाकांत रथ का जन्म 13 दिसंबर 1934 को कटक में हुआ था. उन्होंने रवेंसॉ कॉलेज से अंग्रेजी साहित्य में एमए करने के बाद 1957 में भारतीय प्रशासनिक सेवा (ह्लूस) जॉइन की. उन्होंने कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया और 1992 में ओडिशा के मुख्य सचिव के पद से सेवानिवृत्त हुए। रमाकांत रथ को ओडिया साहित्य में उनके योगदान के लिए जाना जाता है. उनकी प्रमुख काव्य संग्रहों में 'केते दिनारा' (1962), 'अनेका कोठारी' (1967), 'संदिग्ध मृगया' (1971), 'सप्तम ऋतु' (1977), 'श्री राधा' (1985) आदि शामिल हैं. उनकी कविताओं का अनुवाद कई भाषाओं में किया गया है।

मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों से की टीकाकरण अभियान में सहयोग की अपील

भोपाल, देशबन्धु। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि स्वस्थ बचपन, सशक्त भविष्य का आधार है। टीकाकरण बच्चों को गंभीर बीमारियों से बचाकर उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्युनिटी) को मजबूत बनाता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस पर बच्चों को गंभीर बीमारियों से बचाने के लिए प्रदेशवासियों से टीकाकरण अभियान को सफल बनाने में सक्रिय भागीदारी निभाने की अपील की है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस पर उत्तम स्वास्थ्य और स्वस्थ भारत के लिए टीकाकरण के शत-प्रतिशत लक्ष्य की पूर्ति के लिए सहभागिता करने का संकल्प लेने का आव्हान किया है।

नशे में धुत कार सवार ने 3 को मारी टक्कर, 1 की मौत

मेरठ, एजेंसी। मेरठ में परतापुर थाना क्षेत्र के दिल्ली-दून हाईवे पर होली के दिन एक स्विफ्ट कार चालक ने तीन अलग-अलग युवकों को टक्कर मार दी, जिसमें एक युवक की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि 2 युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। जिनका निजी अस्पताल में उपचार चल रहा है। जानकारी के अनुसार कार चला रहे दिल्ली निवासी मोहित ने लापरवाही से कार दौड़ते हुए पहले साइकिल सवार सिक्योरिटी गार्ड को उड़ा दिया और फिर सड़क पार कर रहे 2 युवकों को टक्कर मारकर भागने की कोशिश की। कार के अगले पहिये में सिक्योरिटी गार्ड की साइकिल फंसने से आरोपी भाग नहीं सका और भीड़ ने उसे दबोचकर पहले पीटा और पुलिस के हवाले कर दिया। जबकि अन्य दोनों घायल युवकों की पहचान डूंगरावली निवासी पवन कुमार और मुजफ्फरनगर निवासी वकील के रूप में की गई। उन्होंने कार रुकवाने का प्रयास किया लेकिन मोहित ने कार नहीं रोकी। पवन के सिर और रीड की हड्डी में चोट लगी है जबकि वकील के पैर और सिर में चोट आई है।

आसियान देशों के रक्षा मंत्रियों की बैठक बुधवार को

नई दिल्ली, एजेंसी। आसियान देशों के रक्षा मंत्रियों की बैठक-प्लस (एडीएमएम-प्लस) और आतंकवाद रोधी विशेषज्ञ कार्य समूह (ईडब्ल्यूजी) की 14वीं बैठक आगामी 19 से 20 तारीख तक नयी दिल्ली में होगी। भारत और मलेशिया इस बैठक की सह-अध्यक्षता करेंगे। दस आसियान सदस्यों (ब्रुनेई, कंबोडिया, इंडोनेशिया, लाओ पीडीआर, मलेशिया, म्यांमार, फिलीपींस, वियतनाम, सिंगापुर और थाईलैंड) और आठ संवाद भागीदारों (ऑस्ट्रेलिया न्यूजीलैंड, कोरिया , जापान, चीन, अमेरिका और रूस) के प्रतिनिधिमंडल तिमोर लेस्ते और आसियान सचिवालय के साथ बैठक में भाग लेंगे।

मऊगंज में ग्रामीणों के हमले में जान गवाने वाले एएसआई की राजकीय सम्मान के साथ हुई अंत्येष्टि

स्व. गौतम को शहीद का दर्जा देगी सरकार

परिजन को 1 करोड़ की सहायता और नौकरी दी जाएगी

रीवा/भोपाल, देशबन्धु। मऊगंज जिले में आदिवासी परिवार के हमले में जान गंवाने वाले एएसआई रामचरण गौतम का राजकीय सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार किया गया, उनके बड़े बेटे ने उन्हें मुखाग्नि दी।

इसके पहले रविवार दोपहर को एएसआइ की पार्थिव देह सतना जिले में गृह ग्राम पवैया पहुंची। तिरंगे में लिपटे शव को देखकर वहां का माहौल गमगीन हो गया। स्व. गौतम को गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। इसके बाद अंत्येष्टि की गई। इधर, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने जिला मऊगंज के शाहपुर थाना क्षेत्र के गड़रा गांव में हुई घटना में कर्तव्य निर्वहन के दौरान अपनी जान गवांने वाले एएसआई रामचरण गौतम को शहीद का दर्जा दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि स्व. गौतम के आश्रितों को 1 करोड़ रुपए की सहायता राशि उपलब्ध कराई जाएगी। डॉ. यादव ने कहा कि शहीद रामचरण गौतम के पात्र उत्तराधिकारी को शासकीय सेवा में लिया जाएगा। यह उनके बलिदान के प्रति श्रद्धा, आस्था और राज्य सरकार की परंपरा व कर्तव्य है। उन्होंने कहा कि शहीद रामचरण गौतम की कर्तव्य परायणता और उनका बलिदान चिर-स्मरणीय रहेगा। उन्होंने कहा कि दुर्घटना में घायलों के इलाज के लिए यथा योग्य व्यवस्था की जा रही है।

उल्लेखनीय है कि गड़रा गांव में 2 पक्षों के बीच लंबे समय से विवाद चल रहा था। इस विवाद के कारण एक युवक को अपनी जान भी गंवानी पड़ी थी। मामले की जानकारी मिलते ही पुलिस की टीम मौके पर पहुंची और दोनों पक्षों को शांत कराने का प्रयास किया, लेकिन ग्रामीणों ने अचानक पुलिस टीम पर हमला बोल दिया। इस दौरान ग्रामीणों ने लाठी-डंडों और पत्थरों से पुलिसकर्मियों पर हमला किया, जिसमें एएसआई रामगोविंद गौतम की मौत हो गई है। इसके अलावा थाना प्रभारी शाहपुर संदीप भारती, तहसीलदार पानिका, एएसआई जवाहर सिंह यादव और बृहस्पति पटेल गंभीर रूप से घायल हो गए। सभी घायलों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। मौके पर स्थिति नियंत्रण में है और अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया गया है।

मुख्यमंत्री यादव ने कहा- कर्नाटक के मुख्यमंत्री पर कार्रवाई करें खड़गे

धर्म आधारित आरक्षण का प्रावधान अनुचित

भोपाल, देशबन्धु। कर्नाटक की सिद्धारमैया सरकार ने सरकारी ठेकों में अल्पसंख्यक समुदाय के ठेकेदारों के लिए 4 फीसदी कोटा देने के फैसले पर मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की तीखी प्रतिक्रिया सामने आई है। उन्होंने एक्स पर ट्वीट किया कि कर्नाटक में कांग्रेस सरकार द्वारा शासकीय कार्यों में ठेकेदारों को धर्म आधारित आरक्षण की व्यवस्था का प्रावधान करना अनुचित एवं निंदनीय है। लोकतांत्रिक देश में इस तरह किसी धर्म विशेष को लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से नियम-प्रावधान कैबिनेट से पास कर लागू करना, यही कांग्रेस का अनैतिक चरित्र है। मुख्यमंत्री ने लिखा कि कांग्रेसी भारत जोड़ो नहीं, भारत तोड़ो की विचारधारा पर काम कर रही हैं। कर्नाटक सरकार का यह फैसला इसी राजनीति का उदाहरण है। इस तरह के धर्म आधारित फैसलों के खिलाफ पूर्व में भी कई बार न्यायालयों द्वारा निर्णय दिए गए हैं और इस बार भी कांग्रेस सरकार का यह फैसला न्यायालय में नहीं टिक पाएगा। उन्होंने इस आरक्षण को अनुचित बताते हुए कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे से कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया पर कार्रवाई की मांग की है। सूत्रों के मुताबिक कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने शुक्रवार को कैबिनेट बैठक में कर्नाटक ट्रांसपेरेंसी इन पब्लिक प्रोक्योर्मेंट एक्ट में बदलाव का ▪ शेष पृष्ठ 8 पर

स्पेस स्टेशन में सुनीता से मिले अंतरिक्ष यात्री

गले लगाकर किया स्वागत, जल्दी धरती पर लौटेंगे

न्यूयॉर्क, एजेंसी। नासा और स्पेसएक्स का क्रू-10 मिशन इस समय इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन (आईएसएस) पर पहुंच चुका है। फाल्कन 9 रॉकेट द्वारा भेजे गए ड्रैगन स्पेसक्राफ्ट के जरिए क्रू-10 के अंतरिक्ष यात्री आईएसएस पहुंचे।

सफल डॉकिंग के बाद, जब हैच खुला, तो अंतरिक्ष यात्रियों की मुलाकात भारतीय मूल की सुनीता विलियम्स और उनके साथी अंतरिक्ष यात्री बुच विल्मर से हुई। हैच खुलते ही सुनीता विलियम्स और बुच विल्मर ने रविवार को आए सभी अंतरिक्ष यात्रियों को गले लगाया। ▪ शेष पृष्ठ 8 पर

अंतरिक्ष यान में 4 अंतरिक्ष यात्री सवार थे

इस अंतरिक्ष यान में चार अंतरिक्ष यात्री सवार थे, जिनमें नासा से ऐनी मैकक्लेन और निकोल एयर्स, जापान की अंतरिक्ष एजेंसी जेएक्सए से ताकुया ओनिशी और रूस के रोस्कोस्मोस से किरिल पेस्कोव शामिल हैं।

पाक सेना के काफिले पर आत्मघाती हमला

7 जवानों की मौत, बीएलए ने किया 90 सैनिकों को मारने का दावा

क्वेटा, एजेंसी। पाकिस्तान के बलूचिस्तान में एक बार फिर पाकिस्तानी सेना के काफिले पर बड़ा हमला हुआ है। रिपोर्ट के अनुसार, बलूचिस्तान के नोशकी जिले में एक आत्मघाती हमले में काफिले को निशाना बनाया गया और उसके बाद भारी गोलीबारी की गई। समूह ने 90 पाकिस्तानी सैनिकों की मौत का दावा किया है। हालांकि, मीडिया आउटलेट खुरासान डायरी ने स्वतंत्र स्रोतों ने अब तक 7 लोगों की मौत और लगभग 35 लोगों के घायल होने की पुष्टि की है।

बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी के प्रवक्ता जीयांद बलूच ने कहा कि एक आत्मघाती हमलावर ने एक बस को निशाना बनाया और उसके बाद दूसरी बस पर गोलीबारी की। काफिले में आठ बसें थीं, जिनमें से एक आत्मघाती हमले में पूरी तरह नष्ट हो गई। प्रवक्ता ने आगे कहा कि हमले के तुरंत बाद बीएलए के फतह दस्ते ने बस को पूरी तरह से घेर लिया और उसमें मौजूद सभी सैनिकों को मार डाला। बीएलए ने दावा किया कि पूरी कार्रवाई में कुल 90 पाकिस्तानी सैनिक मारे गए। खुरासान डायरी ने अपनी रिपोर्ट में बताया है कि पाकिस्तानी सैन्य बलों के काफिले में 8 बसें और दो कारें शामिल थीं। एक पुलिस अधिकारी के हवाले से इसने बताया है कि एक बस को व्हीकल बॉर्न आईईडी से निशाना बनाया गया है, जो संभवत: एक आत्मघाती हमला है, जबकि दूसरी बस को रॉकेट से संचालित ग्रेनेड से निशाना बनाया गया।

उत्तराखंड के वित्त मंत्री अग्रवाल ने दिया इस्तीफा

विधानसभा में दिया था विवादित बयान

देहरादून, देशबन्धु। उत्तराखंड के वित्त मंत्री प्रेमचंद अग्रवाल ने आज इस्तीफा दे दिया है। प्रेमचंद अग्रवाल ने प्रेस कॉन्फ्रेंस बुलाकर इस्तीफे का ऐलान किया। इस दौरान प्रेमचंद अग्रवाल काफी भावुक हुए। रोते हुए प्रेमचंद अग्रवाल ने अपने पद से इस्तीफा दिया। इसके साथ ही प्रेमचंद अग्रवाल ने अपने आप को राज्य आंदोलनकारी बताया। इस्तीफे के ऐलान के बाद प्रेमचंद अग्रवाल सीएम धामी से मिलने पहुंचे। जहां उन्होंने सीएम धामी को अपना इस्तीफा सौंपा। इसके बाद सरकारी गाड़ी छोड़ निजी वाहन से प्रेमचंद अग्रवाल वापस अपने आवास लौट गए। इससे पहले प्रेमचंद अग्रवाल ने प्रेस कॉन्फ्रेंस की। जिसमें उन्होंने कहा मैं राज्य आंदोलकारी रहा हूं। उन्होंने कहा मुझे टारगेट किया जा रहा है। मेरी बातों को तोड़ मरोड़कर पेश किया गया।

उल्लेखनीय है कि बीते दिनों प्रेमचंद अग्रवाल ने विधानसभा सत्र के दौरान दिए विवादित बयान दिया था। जिसके बाद से ही प्रदेश की सियासत गर्म हो गई थी। उनके विवादित बयान के बाद से ही विपक्षी पार्टियां लगातार बीजेपी के साथ ही धामी सरकार पर हमलावर हो गई थीं।

न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री समेत 20 देशों के विदेश मंत्री करेंगे शिरकत

भारत का प्रमुख कूटनीतिक सम्मेलन रायसीना संवाद आज से

नई दिल्ली, देशबन्धु। भू-राजनीति और भू-अर्थशास्त्र पर भारत के प्रमुख कूटनीतिक सम्मेलन रायसीना संवाद 17-19 मार्च के बीच होगा, जिसमें न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री क्रिस्टोफर लक्सन के अलावा कम से कम 20 देशों के विदेश मंत्री शिरकत करेंगे।

रायसीना संवाद के 10वां संस्करण का उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 17 मार्च को करेंगे। न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री क्रिस्टोफर लक्सन, मुख्य अतिथि के रूप में उद्घाटन सत्र में शामिल होंगे और मुख्य उद्बोधन देंगे। अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के सामने सबसे चुनौतीपूर्ण मुद्दों पर चर्चा एवं आगे का मार्ग खोजने के लिए प्रतिबद्ध दसवें रायसीना संवाद में मंत्रियों, पूर्व राष्ट्राध्यक्षों और सरकार के प्रमुखों, सैन्य कमांडरों, उद्योग के कप्तानों, प्रौद्योगिकी नेताओं, शिक्षाविदों, पत्रकारों, रणनीतिक मामलों के विद्वानों, अग्रणी थिंक टैंक और युवाओं के विशेषज्ञों सहित लगभग 125 देशों के प्रतिनिधियों की भागीदारी होगी। वर्ष 2025 के संस्करण का विषय कालचक्र – लोग, शांति और पृथ्वी है। तीन दिनों के दौरान, निर्णय निर्माता और दुनिया के विचार नेता छह विषयगत स्तंभों पर विभिन्न प्रारूपों में बातचीत में एक-दूसरे को संलग्न करेंगे:(1) राजनीति की बाधाएं: रेत हटाना और ज्वार को बढ़ाना; (2) ग्रीन ट्रायलेमा को हल करना : कौन, कहां, और ▪ शेष पृष्ठ 8 पर

जमीन विवाद में दंपत्ति की लाठियों से पीट-पीटकर हत्या

पलेरा/टीकमगढ़, देशबन्धु। पलेरा थाना क्षेत्र के करोला गांव में एक दलित दंपति की जमीन विवाद के चलते पीट-पीटकर हत्या कर दी गई। घटना को नशे में धुत आरोपियों ने शनिवार की रात अंजाम दिया। आरोपियों ने दंपत्ति रामकिशन अहिरवार और उनकी पत्नी रामबाई पर उस समय हमला किया जब वे गहरी नींद में सोए हुए थे।

हत्या की खबर मिलते पुलिस अधीक्षक मनोहर सिंह मंडलोई मौके पर पहुंच गए। उन्होंने निर्देश दिए कि तत्काल आरोपियों को गिरफ्तार किया जाए। एफएसएल टीम को भी बुलाया गया है। मृतक दंपति के परिजनों की शिकायत पर मामला दर्ज किया जाएगा। पुलिस पूरे मामले की विवेचना कर रही है।

पुलिस के अनुसार, मृतक दंपति का अपने ही परिजनों से जमीनी विवाद चल रहा था। यह विवाद काफी पुराना था और दोनों पक्षों ने पलेरा तहसील में इसके लिए आवेदन भी दिया था। लेकिन समय पर समाधान न होने के कारण यह विवाद बढ़ता गया और अंतत: इस दर्दनाक घटना का रूप ले लिया। मृतक परिजन लालाराम के बयान के आधार पर मामला दर्ज किया जाएगा और आरोपियों की जल्द से जल्द गिरफ्तारी की जाएगी। वहीं आरोपियों ने मृतक की बेटी रोशनी और रामसखी के साथ भी मारपीट की है। पलेरा थाना प्रभारी मनीष मिश्रा ने बताया कि 9 लोगों को पुलिस ने हिरासत में लिया है। जांच बाद आरोपियों पर संबंधित धाराओं में कार्यवाही की जाएगी।

परिजनों का आरोप

मृतक के पुत्र लालाराम ने बताया कि 25 साल से चले आ रहे जमीनी विवाद के चलते इस घटना को अंजाम दिया गया है। लालाराम अहिरवार के अनुसार गोवर्धन अहिरवार, बाबूलाल अहिरवार, पंचुआ अहिरवार, कन्हैया अहिरवार, नंदराम, कल्लन, चंदा समेत अन्य लोगों ने मिलकर उनके माता-पिता की हत्या की है।

भाजपा नेत्री की बेटी की सड़क हादसे में मौत

भिलाई, देशबन्धु। होली के दिन दुर्ग-राजनांदगांव बायपास रोड पर भीषण सड़क हादसा हो गया। इस हादसे में भाजपा नेत्री की कार सवार बेटी गंभीर रूप से घायल हो गई थी। उन्हें रायपुर के एक अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां उपचार के दौरान उनकी मौत हो गई। वहीं हादसे का सीसीटीवी फुटैज सामने आया है, जिसमें यह देखा जा सकता है कि हादसा कितना भीषण था।

दरअसल, होली के दिन हुए इस हादसे में गंभीर रूप से घायल भिलाई भाजपा महिला मोर्चा की अध्यक्ष स्वीटी कौशिक गंभीर रूप से घायल हो गई थीं। उन्हें सिर में गंभीर चोट आने के कारण रायपुर के रामकृष्ण केयर अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां इलाज के दौरान बीजेपी नेता की बेटी की मौत हो गई। यह हादसा सीसीटीवी कैमरों में रिकार्ड हो गया, जिसमें देखा जा सकता है कि गाड़ी तेज गति से चल रही थी। इसी दौरान वह पलटी खाते हुए पेट्रोल पंप के खंभे से टकरा गई थी। कार में अन्य लोग भी सवार थे। फिलहाल इस बात की पुष्टि नहीं हो पाई है कि कार कौन चला रहा था., जिला अध्यक्ष स्वीटी कौशिक की बेटी या बेटा।

चंपारण से शुरू हुई 'पलायन रोको, नौकरी दो' यात्रा

कांग्रेस ने बिहार में शुरू की पदयात्रा

14 अप्रैल को पटना पहुंचेगी यह यात्रा

बेतिया, एजेंसी। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की कर्मभूमि बिहार के पश्चिमी चंपारण से रविवार को कांग्रेस की पलायन रोको- नौकरी दो पदयात्रा शुरू हुई। पदयात्रा जिले के भीतिहरवा गांधी आश्रम से शुरू हुई है।

पदयात्रा में कांग्रेस नेता कन्हैया कुमार के साथ बिहार कांग्रेस अध्यक्ष अखिलेश सिंह और बिहार कांग्रेस प्रभारी कृष्णा अल्लावरू भी शामिल हुए। यह यात्रा 14 अप्रैल को पटना पहुंचेगी। यात्रा के दौरान कांग्रेस नेता कन्हैया कुमार ने सरकार पर विभिन्न मुद्दों को लेकर निशाना साधा। उन्होंने पदयात्रा के उद्देश्यों को लेकर कहा कि यह पदयात्रा लोकसभा और विधानसभा में सीट मिलने की यात्रा नहीं है, बल्कि यह यात्रा नौकरी में सबको सीट मिले, उसकी यात्रा है। जो पढ़-लिख चुके हैं, उन्हें दफ्तर में नौकरी मिले, उसके लिए यह यात्रा है। इस यात्रा के जरिए हम पलायन के मुद्दों को उठा रहे हैं। उन्होंने कहा कि पलायन शिक्षा और नौकरी की कमी के कारण होता है। सरकार जब ये दोनों चीजें दे नहीं पाती है, तो उन्माद फैलाती है और लोगों को भड़काती है। कन्हैया कुमार ने कहा कि अगर बिहार को बेहतर बनाना है, तो राज्य की युवा शक्ति को काम देना होगा, रोजगार देना पड़ेगा, यही इस यात्रा का उद्देश्य है। यह बेरोजगार युवकों को रोजगार दिलाने की यात्रा है। उन्होंने सरकार पर हमला बोलते हुए कहा कि जितना लव लेटर लीक नहीं होता है, उतने भर्ती परीक्षा के प्रश्न पत्र लीक हो जा रहे हैं। बिहार विधानसभा चुनाव लड़ने के संबंध में उन्होंने बताया कि अभी तो पदयात्रा की शुरुआत हुई है, उसके बाद इसका खुलासा करेंगे।

बेरोजगारी के कारण युवा कर रहे पलायन

बिहार कांग्रेस अध्यक्ष अखिलेश प्रसाद सिंह ने कहा कि आज बिहार की जनता के मुद्दों को लेकर यह यात्रा भीतिहरवा गांधी आश्रम से प्रारंभ की गई है। यह यात्रा पूरे बिहार में महंगाई, पेपर लीक, भ्रष्टाचार और मजदूरों के पलायन जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों को जनता के समक्ष लाएगी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार इन समस्याओं पर ध्यान नहीं दे रही है। कांग्रेस का मानना है कि राज्य में बेरोजगारी के कारण युवाओं को पलायन करना पड़ रहा है।

लेक्स फ्रिडमैन के पॉडकास्ट में बोले मोदी

भारतीयों में संघर्ष व टकराव का समर्थन करने की आदत नहीं है

नई दिल्ली, एजेंसी। पॉडकास्टर लेक्स फ्रिडमैन के साथ एक इंटरव्यू के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 140 करोड़ देशवासियों को अपनी ताकत बताई और पाकिस्तान के साथ देश के रिश्तों पर बात की।

प्रधानमंत्री मोदी ने पॉडकास्ट इंटरव्यू के दौरान कहा, मेरी ताकत मोदी नहीं है, 140 करोड़ देशवासी और हजारों साल की महान संस्कृति और परंपरा हमारी ताकत है। इसलिए मैं जहां भी जाता हूं, मैं अपने साथ हजारों साल की वैदिक परंपरा, स्वामी विवेकानंद की शिक्षाओं और 140 करोड़ भारतीयों के आशीर्वाद, सपनों और आकांक्षाओं का सार लेकर जाता हूं। जब मैं विश्व के नेताओं से हाथ मिलाता हूं, तो मोदी हाथ नहीं मिलाता है, 140 करोड़ लोगों की ताकत उनसे हाथ मिलाती है। इसलिए यह मेरी ताकत नहीं है, बल्कि यह भारत की ताकत है। उन्होंने कहा कि जब भी हम शांति की बात करते हैं, तो दुनिया हमारी बात सुनती है, क्योंकि भारत गौतम बुद्ध और महात्मा गांधी की भूमि है। भारतीयों में संघर्ष और टकराव का समर्थन करने की आदत नहीं है। हम इसकी बजाय सद्भाव और समन्वय का समर्थन करते हैं। हम न तो प्रकृति के खिलाफ युद्ध छेड़ना चाहते हैं, न ही राष्ट्रों के बीच संघर्ष को बढ़ावा देना चाहते हैं। हम शांति के पक्षधर हैं, और जहां भी हम शांति निर्माता के रूप में कार्य कर सकते हैं, हमने खुशी-खुशी ▪ शेष पृष्ठ 8 पर

भारत-चीन को प्रतिस्पर्धा करनी चाहिए, टकराव नहीं

राष्ट्रपति शी के साथ मेरी बैठक के बाद हमने सीमा पर सामान्य स्थिति की वापसी देखी है। हम 2020 से पहले के स्तर पर स्थितियों को बहाल करने के लिए काम कर रहे हैं। विश्वास में समय लगेगा, लेकिन हम बातचीत के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने संघर्ष के बजाय स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की आवश्यकता पर भी जोर दिया। 21वीं सदी एशिया की सदी है। भारत और चीन को स्वाभाविक रूप से प्रतिस्पर्धा करनी चाहिए, टकराव नहीं।

नर्मदा नियरे

सार-समाचार

स्व. जैसानी की याद में सम्मान समारोह एवं श्रद्धांजलि सभा मंगलवार को

हरदा, देशबन्धु। क्रांतिकारी नेता, किसान मजदूर नेता, पत्रकार, लोकतंत्र सेनानी स्वर्गीय जमना प्रसाद जैसानी की याद में जमना जैसानी फाउंडेशन एवं विभिन्न संगठनों द्वारा मंगलवार को जैसानी चौक पर शाम 7 बजे सम्मान समारोह एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया जाएगा ।

जैसानी फाउंडेशन के अनिल वैध ने बताया कि इस दौरान विभिन्न समाजसेवी संगठन ,मजदूर संगठनो द्वारा मोमबत्ती जलाकर श्रद्धांजलि अर्पित की जाएगी ।जैसानी फाउंडेशन के सदस्य शांति कुमार जैसानी ने बताया कि आयोजन में ऐसी प्रतिभाओं का सम्मानित किया जाएगा जिन्होंने हरदा को गौरवान्वित किया है ।सम्मान समारोह में जैसानी चौक के आसपास के ऐसे परिवार का सम्मान भी किया जाएगा जिनके घर से बेटियां है उन्हें रेवा शक्ति सम्मान से सम्मानित किया जाएगा। हरदा के कम उम्र के कवि दुहित गौर जिन्होंने 4 साल की उम्र से कविता पाठ कर हरदा का नाम रोशन किया ।सर्व ब्राह्मण समाज पौधारोपण समिति जिन्होंने हर रविवार को पौधारोपण साल भर तक किया ,वही टीम कला शास्त्रम , वीर तेजाजी रक्तदान समूह, जय महाराणा रक्तदान समूह , हैंडबॉल में नेशनल तक हरदा का नाम रोशन करने वाले प्रतीक शर्मा एवं टीम को सम्मानित किया जाएगा । सोशल मीडिया पर प्रसिद्ध हो चुके मदिक रुणवाल एवं कृष्णा अग्रवाल , प्रसिद्ध लेखिका श्रीमती निधि पस्टारिया आदि को सम्मानित किया जाएगा।

क्षेत्रवासियों व कांग्रेसजनों ने धूमधाम से मनाया विधायक का जन्मदिन

हरदा, देशबन्धु। हरदा विधायक डॉ. रामकिशोर दोगने का जन्मदिन रविवार को क्षेत्रवासियों व कांग्रेसियों ने धूमधाम से मनाया । क्षेत्रवासियों द्वारा विधायक को सोशल मीडिया के माध्यम से एवं प्रत्यक्ष रूप से मिलकर जन्मदिवस की शुभकामनाएं प्रेषित की गई ।साथ ही मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ, राज्यसभा सांसद दिग्विजय सिंह, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी, म.प्र. नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार, म.प्र. विधानसभा के अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तौमर, प्रमुख सचिव म.प्र. विधानसभा, कसरावद विधायक सचिन यादव, पूर्व मंत्री बाला बच्चन सहीत अन्य वरिष्ठ नेतागणों द्वारा भी शुभकामनाएं प्रेषित की गई।

विधायक डॉ. दोगने अपने जन्मदिवस के अवसर पर सिद्धवीर हनुमान मंदिर पहुंचकर बजरंगबली को चोला अर्पित किया तत्पश्चात मां नर्मदा के तट ग्राम हंडिया पहुंचकर मां नर्मदा एवं रिद्धनाथ मंदिर में भगवान भोलेनाथ का पूजन-अर्चन कर आशीर्वाद प्राप्त किया एवं क्षेत्र की खुशहाली की कामना की। इसके पश्चात ग्राम हंडिया, हीरापुर, देवास, अबगांवकला, मसनगांव, बरंगा, छिपाबड़, चरूवा, खिरकिया सहित हरदा शहर में जगह-जगह कांग्रेसजनों व क्षेत्रवासियों द्वारा भव्य स्वागत कर केक काटकर व मिठाई खिलाकर हरदा विधायक डॉ. दोगने का जन्मदिवस मनाया एवं उन्हें बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित की गई। हरदा विधायक द्वारा स्वयं के प्रतिष्ठान विजन इंटरनेशनल पब्लिक स्कूल हरदा में भी स्कूल के छोटे-छोटे बच्चों एवं समस्त शिक्षको के साथ मिलकर केक काटकर जन्मदिन मनाया गया। डॉ. दोगने ने आभार व्यक्त करते हुए कहा मैं क्षेत्र की जनता के साथ उनके हर सुख-दुख में सदा खड़ा रहूंगा और क्षेत्र की प्रत्येक समस्या को स्वयं व शासन स्तर से हल करने की कोशिश करता रहूंगा। इस अवसर पर मोहन पटेल, लक्ष्मीनारायण पटेल, महेश पटेल, भगीरथ पटेल, भूपेश पटेल, आहत खान, राजेश पटेल, आमीर पटेल, गोविंद व्यास, सुरेन्द्र बिश्नोई, दशरथ पटेल, शंकर सोलंकी, संजय भायरे, राहुल पटेल, गौरी शंकर शर्मा, अमर रोचलानी, विनय मालवीय, पूनम यादव सहित बड़ी संख्या में क्षेत्रवासियों ने हरदा विधायक को बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित की।

मदिरा के अवैध संग्रहण व विक्रय के विरूद्ध 14 प्रकरण दर्ज

हरदा, देशबन्धु। कलेक्टर आदित्य सिंह के निर्देश पर जिले में मदिरा के अवैध विनिर्माण, विक्रय, संग्रहण व परिवहन के विरूद्ध कार्यवाही की जा रही है। जिला आबकारी अधिकारी रितेश कुमार लाल ने बताया कि शनिवार को आबकारी विभाग के दल ने हरदा की बंगाली कॉलोनी, टंकी मोहल्ला, पीलियाखाल, न्यू महाँकाल ढाबा कुकरावद, झुण्डगाँव, गौर ढाबा आलमपुर, राजपुत ढाबा नांदवा, ग्राम सुल्तानपुर, पटेल ढाबा भिरंगी, ठाकुर ढाबा सिराली में दबिश दी। दबिश के दौरान कुल 68 पाव देशी शराब, 16 लीटर हाथ भट्टी कच्ची महुआ शराब एवं 525 किलोग्राम महुआ लाहन जप्त कर आबकारी अधिनियम 1915 के तहत कुल 14 प्रकरण दर्ज किये। जप्त मुद्देमाल का अनुमानित बाजार मूल्य 60460 रूपये है।

श्रीकृष्ण यादव समाज कल्याण समिति ने मनाया होली मिलन

इटारसी, देशबन्धु। श्रीकृष्ण यादव समाज समिति द्वारा होली के रंग यादव समाज के संग का आयोजन रविवार की दोपहर में श्रीयादव भवन में धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ किया गया। बड़ी संख्या में उपस्थित यदुजनों के बीच यादव समाज की मासिक बैठक भी आयोजित की गई। इस दौरान प्रतिभावान विद्यार्थियों एवं वरिष्ठ महिला एवं पुरुष कार्यकर्ताओं का सम्मान भी किया गया।

कार्यक्रम की शुरूआत भगवान श्रीकृष्ण की पूजा अर्चना से की गई। समिति के अध्यक्ष आरके यादव ने होली के रंग यादव समाज के संग के महत्व पर जोर देते हुए कहा, हमें समाज में एकता, अखंडता और बंधुत्व को बनाए रखने की आवश्यकता है। इस तरह के आयोजनों से हम आपसी प्रेम और सौहार्द्र का वातावरण बना सकते हैं। इस अवसर पर उमरिया से आए अशोक यादव, ढाबाकलॉ के धीरज यादव एवं सिवनी जिला से आए प्रतीक यादव ने भी कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अपने विचार साझा किए। वहीं यादव समाज के वरिष्ठ सदस्य राम अवतार यादव ने इस पहल को आगामी पीढ़ियों के लिए प्रेरणादायक बताया और ऐसी गतिविधियों के आयोजन को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर जोर दिया। फूलों की होली में उपस्थित समस्त यदुजनों ने एक-दूसरे पर रंग-बिरंगे फूलों की वर्षा की और गुलाल का तिलक लगा कर एक दूसरे से गले मिलकर खुशियां मनाई। यह नजारा वाकई अद्भुत रहा। इस दौरान समिति की महिला सदस्यों ने नृत्य की प्रस्तुति भी दी। वहीं सदस्यों ने होली के उत्सव से संबंधित प्रसंग पर प्रस्तुति दी, जिसने सभी का मन मोह लिया।

इस अवसर पर समिति अध्यक्ष आरके यादव, अशोक यादव, फूलचंद यादव, डॉ. मनोज यादव, किशोर सीरिया, डॉ. वीके सीरिया, राम अवतार यादव, डॉ. मनोज यादव सहित महिला मंडल से श्रीमती शोभा यादव, श्रीमती उमा यादव श्रीमती धर्मिशा यादव सहित बड़ी संख्या में यदुजन उपस्थित रहे।

जल्द होंगे त्रैवार्षिक चुनाव - श्रीकृष्ण यादव समाज कल्याण समिति द्वारा सर्व यादव समाज की महिला-पुरुष एवं युवाओं की संयुक्त मार्च माह की बैठक में सदस्यों द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव पर भी विचार किया। समिति अध्यक्ष आरके यादव ने बताया कि समिति कार्यकारिणी के 3 वर्ष पूर्ण होने वाले हैं। आगामी दिनों में समिति के त्रैवार्षिक चुनाव संपन्न कराए जाएंगे। जल्द ही चुनाव निर्वाचन अधिकारी घोषित किए जाएगा, जिनकी उपस्थिति में 3 वर्षों के लिए यादव समाज समिति के पदाधिकारियों के चुनाव कराए जाएंगे। इस अवसर पर बैठक में अनेक मुद्दों पर चर्चा की गई।

प्रतिभाओं का हुआ सम्मान - होली के रंग यादव समाज के संग के उत्साह भरे आयोजन में प्रतिभावान विद्यार्थियों एवं वरिष्ठ कार्यकर्ताओं का सम्मान किया। इस दौरान गोकुल नगर खेड़ा निवासी 12 वीं के छात्र आदित्य यादव का 70 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर सम्मान किया। पथरोटा के बी-टेक के छात्र अनिकेत यादव का सम्मान किया। इसके अलावा वरिष्ठ कार्यकर्ता का सम्मान राम अवतार यादव एवं श्रीमती उमा यादव को दिया जिनका शाल श्रीफल देकर सम्मान किया।

माली सैनी समाज के होली मिलन समारोह में उड़ा गुलाल

नर्मदापुरम, देशबन्धु। संयुक्त माली सैनी समाजिक कल्याण समिति नर्मदापुरम ने यहां नेहरू पार्क में होली मिलन समारोह का आयोजन किया। इस आयोजन में बड़ी संख्या में माली सैनी समाज के लोग से सहपरिवार शामिल हुए। सभी ने मिलकर एक दूसरे को गुलाल लगाकर बधाई शुभकामनाएं प्रेषित की। सर्वप्रथम राधा कृष्ण के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की गयी। उसके पश्चात सभी ने गुलाल उड़ाकर होली के गीतों पर नाचकर कार्यक्रम में मनोरजन किया। इस दौरान समाज के अजय सैनी, ब्रजमोहन सैनी, गोविंदा सैनी, राजेश सैनी, स्वदेश सैनी, अंकित सैनी, कपिल सैनी, अलोक सैनी, अनिल सैनी, गोलू सैनी, रमित सैनी, महेश सैनी, सुरेश सैनी, पप्पू सैनी, बंटी सैनी आदि सामाजिक बंधु एवं नारी शक्ति उपस्थित रही।

रंग पंचमी पर 19 मार्च को श्री द्वारिकाधीश मंदिर में होगी फूलों की होली

इटारसी ।श्री द्वारिकाधीश मंदिर में रंग पंचमी के अवसर पर फूलों की होली खेली जाएगी। ठाकुरजी के साथ भक्तगण फूलों की होली खेलेंगे। रंगपंचमी के मौके पर यह आयोजन 19 मार्च को मंदिर परिसर में आयोजित किया जाएगा। मंदिर समिति के रमेश चांडक ने बताया कि 19 मार्च को मंदिर परिसर में रंग पंचमी के अवसर पर श्री द्वारिकाधीश मंदिर परिसर में दोपहर 12 बजे से फूलों की होली उत्सव का आयोजन होगा। उन्होंने भक्तों से आग्रह किया है कि इस आयोजन में शामिल होकर ठाकुरजी के साथ फूलों की होली खेलने सौभाग्य प्राप्त करें।

श्रीराम जन्मोत्सव अंतर्गत श्री द्वारिकाधीश मंदिर में श्रीराम कथा 30 मार्च से

इटारसी, देशबन्धु। श्री द्वारिकाधीश मंदिर में चैत्र शुक्ल एकम 30 मार्च रविवार से श्री राम कथा का आयोजन प्रारंभ होगा। चैत्र शुक्ल नवमी 6 अप्रैल, रविवार को इसका समापन होगा। श्री राम जन्मोत्सव के अंतर्गत होने वाले इस आयोजन में चित्रकूटधाम के आचार्य महेन्द्र मिश्र मानस मणि कथावाचन करेंगे। श्री द्वारिकाधीश श्री राम जन्मोत्सव समिति की ओर से बताया गया है कि कथा प्रतिदिन शाम 7 से रात 9:50 बजे तक चलेगी। आयोजन समिति में अध्यक्ष डॉ. नीरज जैन, कार्यकारी अध्यक्ष विपिन चांडक, सचिव अभिषेक तिवारी, कोषाध्यक्ष प्रकाश मिश्रा हैं। श्री राम जन्मोत्सव का आयोजन 6 अप्रैल, रविवार को सुबह 11 बजे से दोपहर 1 बजे तक चलेगा। इसी दिन शाम को 5 बजे से मंदिर परिसर से शोभायात्रा निकाली जाएगी, जो नगर के विभिन्न मार्गों से होकर वापस मंदिर परिसर में संपन्न होगी।

रासेयो के शिविर में एमजीएम कालेज के छात्रों ने किए सेवाकार्य

इटारसी , देशबन्धु। शासकीय महात्मा गांधी स्मृति स्नातकोत्तर महाविद्यालय इटारसी की राष्ट्रीय सेवा योजना बालक इकाई के सात दिवसीय विशेष शिविर में ग्राम जुझारपुर में अनेक सेवा कार्य किये। इन सात दिनों में स्वयंसेवकों ने ग्राम में न सिर्फ स्वच्छता से संबंधित बल्कि स्वास्थ्य और जागरुकता के कार्यक्रम करके ग्रामीणों को इनका महत्व भी बताया।

एनएसएस के छात्र-छात्राओं ने स्वच्छता अभियान, वृक्षारोपण, नशा मुक्ति अभियान, पर्यावरण संरक्षण रैली, मतदाता जागरूकता रैली आदि एवं नुक्कड़ नाटक के माध्यम से नशे के दुष्प्रभाव के बारे में ग्राम वासियों में जन चेतना फैलाई गई। इस दौरान स्वास्थ्य शिविर में स्वयं सेवकों के साथ-साथ स्कूली छात्र-छात्राओं एवं ग्रामवासियों का भी स्वास्थ्य परीक्षण किया। बौद्धिक सत्र में वित्तीय साक्षरता, कैरियर

मार्गदर्शन, महिला सशक्तिकरण, मौसमी बीमारियों से बचाव आदि विषय पर विषय विशेषज्ञों ने स्वयंसेवकों को ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिए।

शिविर के सातों दिनों में स्वयंसेवकों ने खेल गतिविधि के अंतर्गत राम-रावण युद्ध, कितने भाई कितने, आदि खेल खेले एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लिया। सातवें दिन शिविर के समापन समारोह की अध्यक्षता महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ राकेश मेहता ने की। इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य ओपी चौरे विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। कार्यक्रम अधिकारी राष्ट्रीय सेवा योजना बालक इकाई, डॉ आशुतोष मालवीय ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम अधिकारी राष्ट्रीय सेवा योजना बालक इकाई, डॉ आशुतोष मालवीय ने बताया कि इस दौरान विभिन्न गतिविधियों के संचालन के लिए समितियां गठित कीं, जिनमें परियोजना समिति, अनुशासन समिति, बौद्धिक समिति, भोजन समिति, खेल समिति, सांस्कृतिक समिति। प्राचार्य डॉ राकेश मेहता ने स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए बताया कि इस प्रकार के शिविरों से स्वयंसेवकों में टीम के रूप में कार्य करने की क्षमता विकसित होती है, समय का पाबंद होना, आत्मनिर्भर बनना एवं सेल्फ निर्णय लेने की क्षमता का विकास होता है। डॉ आशुतोष मालवीय ने आभार व्यक्त किया।

आज मेंटेनेंस के चलते दो घंटे से अधिक समय तक नहीं मिली बिजली

इटारसी , देशबन्धु।। मध्यप्रदेश मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के पीपल मोहल्ला उपकेन्द्र में वैक्यूम सर्किट ब्रेकर में आई खराबी को को ठीक करने आज दो घंटे से अधिक का समय लगा। मौसम में आयी गर्मी के कारण ये दो घंटे भी नागरिकों को बड़े भारी लगे। नगर के कई इलाकों में बिजली नहीं होने से लोग परेशान हो गये। बिजली विभाग ने एक दिन पूर्व ही घोषित कर दिया था कि शहर पीपल मोहल्ला सब स्टेशन में वैक्यूम सर्किट ब्रेकर में आयी खराबी को ठीक किया जाएगा। इस कार्य के चलते दो फीडर्स से जुड़े एरिया में बिजली नहीं मिलेगी।

पीपल मोहल्ला उपकेन्द्र में वीसीबी मेंटेनेंस के चलते 33 केवी इटारसी से निकले न्यास उपकेन्द्र से संचालित 11 केवी बैंक कालोनी फीडर और बूढ़ी माता उपकेन्द्र से नाला मोहल्ला फीडर के क्षेत्र प्रभावित रहे। इस दौरान बैंक कॉलोनी फीडर, सूरज गंज फीडर, नाला मोहल्ला फीडर, मालवीयगंज फीडर, गांधीनगर फीडर एवं ग्रैंड एवेन्यू मार्केट उपकेंद्र से संचालित 11 केवी फेस 1 एवं फेस 2 फीडर की विद्युत सप्लाई सुबह 9 बजे से 11 तक बंद रही। इस दौरान अनेक क्षेत्र में बिजली नहीं मिलने से लोग परेशान होते रहे। हालांकि इस दौरान कंपनी की टीम लगातार सोशल मीडिया पर काम की प्रगति का अपडेट देती नहीं, बावजूद इसके गर्मी से परेशान होते लोग सोशल मीडिया पर पोस्ट करके बिजली आने संबंधी सवाल करते रहे।

राज्यसभा सांसद ने वैगन रिपेयर वर्कशॉप में पदस्थ रेलकर्मी का किया सम्मान

इटारसी, देशबन्धु। राज्यसभा सांसद माया नारोलिया ने पिछले दिनों रेलवे के उत्कृष्ट कार्यों के लिए सम्मानित रेलकर्मी के घर पहुंचकर उको सम्मानित किया। इटारसी के वैगन रिपेयर वर्कशॉप में पदस्थ वेल्डर कल्पना चौरे को रेलवे ने उत्कृष्ट कार्य करने पर सम्मानित किया है। कल्पना पूरे देश से चुनी गई 33 महिला रेल कर्मचारियों में शामिल हैं। वे पथरोटा गांव की रहने वाली हैं।

राज्यसभा सदस्य माया नारोलिया, जेडआरयूसीसी सदस्य राजा तिवारी ने उनके निवास पर पहुंचकर शॉल श्रीफल से सम्मान कर प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर मंगल अध्यक्ष रूपेश राजपूत, शैलेंद्र दीक्षित, दीपक अग्रवाल, योगीराज पटेल, हरीश चौधरी मौजूद रहे। कल्पना चौरे ने बताया कि उनका सलेक्शन वेस्ट सेंट्रल रेलवे में वर्ष 2020 में जबलपुर डिविजन के न्यू कटनी जंक्शन में हुआ था। शेड में वेल्डर सीएंडडब्ल्यू विभाग में 2 साल कार्य किया। उसके उपरांत रेलवे के भोपाल डिवीजन में ट्रांसफर हुआ। इटारसी के वैगन रिपेयर शेड में पदस्थ हुई।

भ्रष्टाचार के मामले में फरार टीआई की जमानत अर्जी खारिज

अदालत ने कहा- अपराध को देखते हुए जमानत उचित नहीं

भोपाल,देशबन्धु। भोपाल में जोन-1 की एडिशनल डीसीपी रश्मि दुबे और एसीपी सुरभी मीणा सहित क्राइम ब्रांच की टीम ने ऐशबाग थाना टीआई जितेंद्र गढ़वाल के कहने पर एएसआई पवन रघुवंशी को पांच लाख की रिश्वत लेते हुए रकम के साथ पकड़ा था। हालांकि बाद में एएसआई पवन चकमा देकर फरार हो गया था। इसके बाद से ही टीआई गढ़वाल भी फरार हैं।

इधर निलंबित टीआई जितेंद्र गढ़वाल की ओर से प्रताप मिश्रा की अदालत में अग्रिम जमानत की अर्जी लगाई गई थी, लेकिन अदालत ने उन पर दर्ज अपराध को गंभीर माना और ऐसे में जमानत का लाभ देने से इनकार कर दिया। जमानत अर्जी खारिज होने के बाद टीआई के पास उच्च न्यायालय जाने का ही एक मात्र रास्ता बचा है।

दरअसल, ये मामला हाल ही में भोपाल में पकड़ाए ठगी के एक कॉल सेंटर से जुड़ा है। बताया जा रहा है कि इस मामले के आरोपियों में से एक आरोपी मोइन खान को बचाने के एवज में टीआई जितेंद्र गढ़वाल के कहने पर एएसआई पवन रघुवंशी ने उससे 25 लाख रुपए में सौदा किया था। इसकी पहली किस्त के रूप में एएसआई 5 लाख रुपए ले रहा था। तभी उसे दबोच लिया गया था। रिश्वत के इस मामले में निलंबित टीआई जितेंद्र गढ़वाल के खिलाफ भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत प्रकरण दर्ज है। उनके साथ निलंबित एएसआई पवन रघुवंशी, प्रधान आरक्षक धर्मेंद्र, टीकमगढ़ से रिश्वत देने के लिए आने वाले भाजपा पार्षद अंशुल उर्फ मोना जैन और भाजपा नेता मोइन खान भी आरोपी हैं। यह सभी फिलहाल फरार हैं। पुलिस इनकी भी तलाश कर रही है।

होली पर रंग लगाने को लेकर हुआ विवाद

पिकअप वाहन चालक ने युवक को कुचला, मौत

भोपाल,देशबन्धु। राजधानी भोपाल में शुक्रवार शाम को होली खेल रहे युवकों ने एक पिकअप वाहन चालक पर रंग डाल दिया। इस बात को लेकर वाहन चालकऔर युवकों के बीच विवाद हो गया। लोगों ने विवाद को शांत कराया। इसके बाद वाहन चालक जाने लगा, लेकिन कुछ दूर जाने के बाद उसने वाहन को तेजी से पीछे किया। गाड़ी तेजी से पीछे देख कुछ युवकों ने इधर-उधर होकर अपनी जान बचा ली। लेकिन एक युवक वाहन की चपेट में आ गया, वह अगले टायर के नीचे आया और फंस गया। युवक को चपेट में लेने के बाद भी वाहन चालक तेजी से गाड़ी चलाता रहा। करीब 200 मीटर दूर एक गति अवरोधक पर टायर में फंसा युवक निकल पाया। इसके बाद उसे अस्पताल पहुंचाया गया, जहां देर रात को उसकी मौत हो गई। पुलिस का कहना है कि फिलहाल मर्ग कायम किया है। जांच के बाद साफ होगा कि मामला हिट एंड रन का है या हत्या का है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार शैलेंद्र सिंह उर्फ अप्पू उम्र 27 वर्ष सुभाष कॉलोनी अशोका गार्डन में रहता था। वह सुभाष नगर स्थित एक फर्नीचर शोरूम में काम करता था। बताया गया है कि शैलेन्द्र शुक्रवार शाम को अपने कुछ दोस्तों के साथ घर के बाहर होली खेल रहा था। तभी वहां से अशोक लीलैंड का एक लोडिंग वाहन गुजरा। उसके चालक को रंग लगा दिया। इससे नाराज होकर उसने विवाद शुरू किया। कुछ लोगों ने उसे शांत कराया और जाने के लिए कहा। तब वह आगे की ओर बढ़ा लेकिन अचानक तेजी से गाड़ी को पीछे करने लगा। यह देख सभी युवक इधर-उधर हो गए, लेकिन शैलेंद्र इसकी चपेट में आ गया। सभी ने शोर मचाया। तोआरोपी चालक ने तेजी से भागने का प्रयास किया। वह तेज रफ्तार में वाहन चलाने लगा। इस बीच टक्कर लगने के बाद शैलेंद्र अगले पहिए में फंस गया। इसके बावजूद चालक वाहन को दौड़ाता रहा। अन्य युवक उसे बचाने पीछे दौड़ रहे थे। करीब 200 मीटर की दूरी पर स्थित रुचि रेस्टोरेंट की अगली गली में एक गति अवरोधक पर वाहन धीमा होने पर शैलेंद्र वाहन से निकला। तब तक वह बेसुध हो चुका था। उसे पास के एक प्राइवेट अस्पताल में लेकर पहुंचे। वहां उन्होंने इलाज से इनकार कर दिया गया। उसे अरेरा कॉलोनी के दूसरे निजी अस्पताल पहुंचाया। जहां रात में उसे मृत घोषित कर दिया गया। अस्पताल से ही पुलिस को सूचना दी गई थी। इसके बाद पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए पहुंचाया ओर शनिवार को पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया। साथ ही मर्ग दर्ज कर विवेचना शुरु कर दी है।

इस मामले में थाना प्रभारी हेमंत श्रीवास्तव ने बताया कि घटना का एकवीडियो भी सामने आया है, जिसमें युवक अगले पहिए में फंसा घसीटता दिखाई दे रहा है। ऐसा कोई तस्वीर फिलहाल नहीं मिली है, जिससे यह साफ हो सके कि चालक ने जान-बूझकर टक्कर मारी। श्रीवास्तव का कहना है कि मामले के सभी पहलुओं पर जांच की जा रही है। परिवार के शोकाकुल होने के कारण विस्तृत बयान भी दर्ज नहीं किए जा सके हैं।

सगाई हो चुकी थी, दो महीने बाद शादी थी

शैलेंद्र के दोस्त सागर ने बताया कि शैलेंद्र की सगाई तीन महीने पहले हो चुकी थी। 5 मई को उसकी शादी होने वाली थी। वह अपनी शादी की तैयारियों में लगा था। इससे पहले ही उसकी मौत से परिवार में मातम छा गया है। बड़ी बहन और एक बड़ा भाई है। दोनों की शादी हो चुकी है। भाई सेना में है।

होली खेलकर लौटे युवक ने फांसी लगाकर की खुदकुशी

भोपाल,देशबन्धु। सीटीओ बैरागढ़ में रहने वाले एक युवक ने घर में फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली। उसके पास से कोई पत्र नहीं मिला है। लेकिन आखिरी बार उसने घर लौटकर पत्नी से बात की थी। बताया था कि भांग पी रखी है, नशा हो रहा है। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार ईश्वर मालवीय पुत्र विक्रम सिंह मालवीय उम्र 24 वर्ष मूल रूप से राजगढ़ के भीलवाड़िया का रहने वाला था। तीन साल से भोपाल में सीटीओ बैरागढ़ में रह रहा था। एक साल पहले रुकमा से उसका विवाह हुआ था। वहं शुक्रवार रात होली मनाने के बाद घर में लौटा था। पत्नी को बताया था कि मैं भांग पीकर आया हूं। पत्नी ने उसे नहाने के बाद आराम करने की सलाह दी। इसी बीच पत्नी काम में लग गई। वहीं ईश्वर अपने कमरे में गया और उसने फांसी लगा ली। इसका पता चलते ही परिजन उसे फंदे से उतारकर अस्पताल ले गए। यहां चिकित्सकों ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। अस्पताल की सूचना के बाद पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए पहुंचाया और मर्ग दर्ज कर जांच शुरु कर दी। फिलहाल ईश्वर ने फांसी क्यों लगाई, इस बात का खुलासा नहीं हो सका है। उधर मृतक के दादा मांगीलाल ने बताया कि पोता भांग के नशे में घर लौटा था। उसने कभी कोई परेशानी का जिक्र नहीं किया था। नशे की हालत में उसने खुदकुशी किया है। पत्नी से उसका कोई विवाद भी नहीं हुआ था। जब पोते ने फांसी लगाई, उसकी पत्नी काम में गई थी। चंद मिनटों बाद उसने देखा तो पति फांसी लगा चुका था।

जैन धर्मशाला को लेकर 2 पक्षों में विवाद का वीडियो वायरल

तहसीलदार और थाना प्रभारी की मौजूदगी में हुआ राजीनामा

टीकमगढ़, देशबन्धु। दिगौड़ा कस्बा के मुख्य बाजार में स्थित जैन धर्मशाला का निर्माण कार्य जैन समाज के द्वारा कराया जा रहा है। इसी निर्माण कार्य को लेकर 15 मार्च को जैन समाज के कई लोग व अन्य मजदूरों द्वारा धर्मशाला के सामने मिट्टी का पुराव किया जा रहा था। इस दौरान धर्मशाला के बगल में निवासरत इकबाल खान व उनके परिजनों ने मिट्टी का पुराव करने से मना किया, तो दोनों पक्षों में विवाद हो गया। इस दौरान मौके पर लोगों की भारी भीड़ जमा रही। इस विवाद का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। जिसमें जैन समाज व इकबाल खान के परिजन में गाली गलौज के साथ विवाद हो गया। पुलिस ने मौके पर पहुंच कर विवाद को शांत कराया। आज रविवार को पुलिस थाने में तहसीलदार व थाना प्रभारी की मौजूदगी में दोनों पक्षों में आपसी सहमति बनने पर राजीनामा हो गया। जानकारी के अनुसार दिगौड़ा कस्बा के मुख्य बाजार में जैन समाज की जमीन पर कई वर्षों से पुराने कमरों का निर्माण था। इन कमरों में पहले सहकारी बैंक संचालित होता था और सरकारी डॉक्टर भी अपना निवास करते थे। पिछले साल से इसी जमीन पर जैन समाज पुराने कमरों को तुड़वाकर नया निर्माण कार्य करा रहे थे। धर्मशाला में कमरों का निर्माण होने के बाद उसके आगे मिट्टी का पुराव हो रहा था जिस पर यह विवाद हो गया। आपको बता दें यहां धर्मशाला की जमीन के आगे करीब 45 साल से वंशीधर रैकवार चाय की गुमटी रखे हुए थे, जो अभी भी वहीं पर रखी हुई है। वंशीधर का निधन होने के बाद उनके पुत्र द्वारा इसी गुमटी की जमीन को लेकर यह मामला न्यायालय में विचाराधीन है। वहीं गुमटी के पीछे इकबाल खान का मकान स्थित है। इस मकान में पहले सामने से दरवाजे थे लेकिन पिछले कुछ सालों से इन्होंने गुमटी के पीछे दो शटर लगा ली थी और अब पिछले कुछ दिनों से जूतों की दुकान खोल ली है। जैन समाज का यह विवाद इसी गुमटी व इकबाल खान द्वारा खोली गई दुकान को लेकर हो रहा है।

इस मामले में जैन समाज के अध्यक्ष अशोक जैन का कहना है कि यह हमारी धर्मशाला की जमीन है, जिस पर इकबाल खान ने शटर लगाकर दुकान खोल ली और हमारी ही जमीन पर एक चाय की गुमटी रखी है। हम लोग न्यायालय में यह केस जीत गए हैं, फिर भी हमें हमारी जमीन नहीं मिल रही है। इस संबंध में गुमटी वाले धर्मेंद रैकवार ने बताया है कि करीब 45 से 50 सालों से इस स्थान पर मेरी चाय की गुमटी रखी हुई है। 1993 से हम इस जमीन को लेकर केस लड़ रहे हैं। 2016 में केस हारने के बाद हाईकोर्ट न्यायालय में अपील की गई, जहां यह मामला अभी विचाराधीन है। इस वायरल वीडियो की जानकारी मिलते ही थाना प्रभारी नीरज लोधी पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंच गए। पुलिस ने दोनों पक्षों को समझाया गया व शांति व्यवस्था बनाए रखने की अपील की। पुलिस ने 15 मार्च की शाम को धर्मशाला के सामने हो रहे पुराव को बंद करवा दिया। पुलिस ने दोनों पक्षों से अपने अपने जमीन संबंधित दस्तावेज पेश करने को कहा। आज रविवार की शाम की शाम 5 बजे पुलिस थाने में जैन समाज के लोग व इकबाल खान व उनके परिजन पुलिस थाने में पहुंचे। यहां पर तहसीलदार पीयूष दीक्षित व थाना प्रभारी नीरज लोधी की मौजूदगी में इस विवाद को आज शांत कराया गया। पुलिस थाने में जैन समाज के लोगों व इकबाल खान के परिजनों में आपसी सहमति बनने पर राजीनामा हो गया। इस राजीनामा में जैन समाज द्वारा इकबाल खान की दुकान से लगी हुई दो फुट चौड़ी जमीन सड़क तक दिए जाने पर सहमति बन गई।

तीसरी आंख से जिले के चप्पे-चप्पे पर नजर रखेगी पुलिस

टीकमगढ़, देशबन्धु। नगर सहित पूरा जिला अब तीसरी आंख की नजर में है। सीसीटीवी कैमरों से निगरानी हो रही है, जिससे अपराधों पर सुदृढ़ नियंत्रण होगा। करीब 98 महत्वपूर्ण स्थानों पर अत्याधुनिक तकनीक से लैस कैमरे लगाए गए हैं। जिसका कंट्रोल सेंटर कंट्रोल रूम कार्यालय के बाजू में बनाया गया है। इन कैमरों से पल-पल की निगरानी हो रही है। प्रतिदिन नगर की प्रमुख गतिविधियों पर नजर रखी जा रही है। पुलिस अधीक्षक मनोहर सिंह मंडलोई ने बताया कि ऑपरेशन थर्ड आई के तहत नगर सहित पूरे जिले में अत्याधुनिक तकनीक के पीटीजेड और एएनपीआर तकनीक के कैमरे मुख्य स्थानों पर लगाए गए हैं। इसमें 360 डिग्री व्यू वाले कैमरे भी शामिल किए गए हैं। जिससे चारों ओर का व्यू मिल रहा है। इनकी क्वालिटी पर विशेष ध्यान दिया गया है, जिससे साफतस्वीरें मिल सकें। इसके लिए ट्रेंड पुलिसकर्मी 24 घंटे सीसीटीवी का संचालन कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि दुकानदारों और सक्षम लोगों से अपील की गई है कि वह अपने घरों, दुकानों के फ्रंट में सीसीटीवी कैमरा लगाएं, जिससे नगर पूरी तरह सुरक्षित हो सके। इसके लिए ऑपरेशन थर्ड आई अभियान चलाया गया है।

267 कैमरो से जिले भर पर नज़र

एसपी मनोहर सिंह मंडलोई ने बताया कि शहर के अलावा जिले के थाना, चौकी क्षेत्रों में 267 सीसीटीवी कैमरे लगाए गए है। इसी का परिणाम है कि सीसीटीवी फूटेज के आधार पर अभी तक 17 आरोपियों को पकड़ा जा चुका हैं। उन्होंने बताया कि सभी थाना प्रभारी व एसडीओपी गली- मोहल्लों, गांव कस्बे में जाकर लोगों को सीसीटीवी कैमरे की महत्वता के बारे में समझाइश देकर ज्यादा से ज्यादा कैमरे लगाए जाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

कैमरे से निगरानी में यह फायदा होगा

इससे क्षेत्र में होने वाली अनचाही आपराधिक घटनाओं पर अंकुश लगेगा। एक्सीडेंट की सही तस्वीर मिलेगी, जिससे कोई भी व्यक्ति टक्कर मारकर भाग नहीं पाएगा। व्यापारियों को सुरक्षा मिलेगी। जलसा, जुलूस, शोभायात्रा की निगरानी हो सकेगी। चुनावों में भी कारगर सिद्ध होंगे। बालिकाओ को कैमरे के माध्यम से सुरक्षा मिलेगी।

टीकमगढ़-छतरपुर हाइवे पर पेड़ से टकराई कार,3 गंभीर

टीकमगढ़, देशबन्धु। जिले के बल्देवगढ़ थाना के अंतर्गत देवरदा बुदोरा के पास रविवार की दोपहर करीब 3 बजे एक वैगनार कार अनियंत्रित होकर पेड़ से टकरा गई। इस घटना में कार में सवार तीन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। स्थानीय लोगों की सूचना पर 108 एंबुलेंस द्वारा घायलों को बल्देवगढ़ अस्पताल में लाकर भर्ती कराया गया। जहां घायलों का इलाज किया जा रहा है।

108 एंबुलेंस के डिस्ट्रिक्ट मैनेजर सुरेंद्र गंगवार ने बताया कि जिले की बल्देवगढ़ थाना क्षेत्र की देवरदा चौकी अंतर्गत टीकमगढ़ छतरपुर मार्ग पर रविवार की दोपहर करीब 3 बजे एक वैगनार कार अनियंत्रित होकर पेड़ से टकरा गई। इस घटना में एक कार में सवार मीरा बाई झां 65 वर्ष, लखनलाल झां 67 वर्ष व नर्मदा देवी झां 72 वर्ष सभी निवासी बिजावर गंभीर रूप से घायल हो गए। बताया जा रहा है कि यह घायल लोग महरौनी जिला ललितपुर से लौटकर अपने घर बिजावर जिला छतरपुर जा रहे थे। स्थानीय लोगों की सूचना पर पायलेट हरिशंकर तिवारी 108 एंबुलेंस लेकर मौके पर पहुंच गए। एंबुलेंस के ईएमटी प्रहलाद सिंह राजपूत ने घायलों का प्राथमिक उपचार किया और बल्देवगढ़ अस्पताल में ले जाकर भर्ती कराया गया। अस्पताल में इन सभी घायलों का उपचार किया जा रहा है।

भाजपा नेता पटेरिया बोले- यादवेंद्र 7 दिन में माफी मांगें, नहीं तो मानहानि का मामला करेंगे

जतारा, देशबन्धु। भाजपा किसान मोर्चा के जिलाध्यक्ष किशन पटेरिया ने कांग्रेस विधायक यादवेंद्र सिंह बुंदेला के आरोपों को खारिज कर दिया है। श्री पटेरिया ने विधानसभा में दिए गए बुंदेला के बयान को झूठा करार दिया। उन्होंने कहा कि यादवेंद्र सिंह ने विधानसभा में बेबुनियाद आरोप लगाकर सदन को गुमराह किया है। पटेरिया ने विधायक को 7 दिन के अंदर सार्वजनिक माफी मांगने की चेतावनी दी है। उन्होंने कहा कि माफी नहीं मांगने पर मानहानि का नोटिस भेजा जाएगा। किशन पटेरिया ने कहा कि बुंदेला के बेटे खुद करोड़ों रुपए के फ्रॉड के मामले में फरार चल रहे हैं। उनका आरोप है कि विधायक अपनी गलतियों को छिपाने के लिए भाजपा नेताओं को बदनाम कर रहे हैं। मामला एक दिन पहले शनिवार को विधानसभा में उठा था, जब टीकमगढ़ के विधायक बुंदेला ने जतारा क्षेत्र में अवैध अफीम खेती का मुद्दा उठाया था। उन्होंने आरोप लगाया था कि दो गांवों में 20 करोड़ रुपए की अफीम की अवैध खेती पटेरिया के ड्राइवर के संरक्षण में हो रही थी। बुंदेला ने एक नाबालिग से दुराचार के मामले की भी जांच की मांग की थी।

अकेले रह रहे युवक ने की आत्महत्या

टीकमगढ़, देशबन्धु। कोतवाली थाना क्षेत्र के पुराना बस स्टैंड के पास प्रजापति मोहल्ले में रविवार दोपहर एक बजे 23 वर्षीय युवक का शव फांसी के फंदे पर लटका मिला। मृतक की पहचान सनी प्रजापति के रूप में हुई। कोतवाली थाना प्रभारी पंकज शर्मा के अनुसार, सनी अपने पुराने मकान में अकेला रहता था। उसका परिवार कुंडेश्वर में रहता है। परिजनों की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची। शव को पंचनामे की कार्रवाई के बाद पोस्टमॉर्टम के लिए जिला अस्पताल भेजा गया। एफएसएल अधिकारी डॉ. प्रदीप यादव ने घटनास्थल का बारीकी से निरीक्षण किया। प्रारंभिक जांच में यह आत्महत्या का मामला प्रतीत हो रहा है। पुलिस ने परिवार से पूछताछ की, लेकिन अभी तक मौत के कारणों का पता नहीं चल सका है। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के सटीक कारणों का खुलासा हो सकेगा।

बोलेरो की टक्कर से बाइक सवार की मौत, 2 गंभीर

टीकमगढ़, देशबन्धु। सागर हाईवे पर बड़ा गांव धसान थाना क्षेत्र में तेज रफ्तार बोलेरो ने बाइक सवार तीन लोगों को टक्कर मार दी। हादसे में एक व्यक्ति की मौके पर ही मौत हो गई। दो अन्य लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि बाइक बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। हादसे के बाद बोलेरो चालक वाहन छोड़कर मौके से फरार हो गया। स्थानीय लोगों ने तुरंत पुलिस को सूचना दी। घायलों को पहले सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बड़ागांव ले जाया गया। वहां 108 एंबुलेंस की सुविधा नहीं मिलने से घायलों को 2 घंटे तक इंतजार करना पड़ा। इस दौरान वे दर्द से कराहते रहे। एंबुलेंस के आने के बाद प्राथमिक उपचार किया गया। डॉक्टरों ने घायलों की गंभीर स्थिति को देखते हुए उन्हें जिला अस्पताल रेफर कर दिया। पुलिस मामले की जांच कर रही है। फरार बोलेरो ड्राइवर की तलाश जारी है। बड़ागांव थाना प्रभारी एमपी सिंह गोंड ने बताया कि घायलों से नाम और पते के बारे में पूछताछ की जा रही है। मृतक के नाम और पते के बारे में फिलहाल जानकारी नहीं लगी है।

भाजपा कार्यालय में पहली बार होली मिलन समारोह

कार्यकर्ताओं ने बुंदेली फाग और फिल्मी गीतों पर किया डांस

टीकमगढ़, देशबन्गु। सिविल लाइन रोड स्थित भाजपा कार्यालय में रविवार को पहली बार होली मिलन समारोह हुआ। इसमें भाजपा कार्यकर्ताओं ने फिल्मी और बुंदेली फाग गीतों पर जमकर डांस किया। भाजपा जिला अध्यक्ष सरोज राजपूत ने कहा कि होली के दिन लोग परिवार के साथ व्यस्त रहते हैं। इसलिए आज पार्टी कार्यालय में कार्यकर्ताओं के साथ होली मिलन का कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा प्रदेश महामंत्री और जतारा विधायक हरिशंकर खटीक मौजूद थे। महिला मोर्चा की कार्यकर्ताओं ने एक-दूसरे के साथ होली खेली और गीतों पर डांस किया। दोपहर 2 बजे शुरू हुआ कार्यक्रम करीब 3 घंटे तक चला। सभी ने एक-दूसरे को गुलाल लगाकर और गले मिलकर होली की बधाई दी। विधायक हरिशंकर खटीक ने कहा कि इस तरह के आयोजन से आपसी सद्भाव बढ़ता है। कार्यक्रम के बाद सामूहिक सहभोज का आयोजन किया गया। इस मौके पर महिला मोर्चा जिला अध्यक्ष विभा श्रीवास्तव, पूर्व बैंक अध्यक्ष विवेक चतुर्वेदी, अभिषेक खरे रानू, जन्मेजय तिवारी, अभय यादव, शिवम रिछारिया, प्रीति शर्मा, मीरा खरे, सुशीला राजपूत, बलवीर जोशी, शशिप्रभा होण्डा, समेत कई भाजपा कार्यकर्ता मौजूद थे।

महिला सुरक्षा, सम्मान, स्वतंत्रता अभियान , के तहत किया कार्यक्रम

टीकमगढ़, देशबन्धु। पुलिस अधीक्षक मनोहर सिंह मंडलोई द्वारा जिले में जिला मुख्यालय सहित सभी थाना, चौकी क्षेत्र में महिलाओं की सुरक्षा को जन्म के पहले से (गर्भ से) बुढ़ापे तक सुनिश्चित करने के लिए जिला स्तरीय अभियान महिला सुरक्षा, सम्मान,स्वतंत्रता चलाया जा रहा है। जिसमें महिला के जन्म के पहले (गर्भ से) बुढ़ापे तक सुरक्षा, सम्मान, स्वतंत्रता सुनिश्चित करने के लिए महिलाओं की उम्र एवं परिस्थिति के अनुसार नीड, परी, भरोसा, आसरा, सहारा वर्गों में अभियान में गत दिवस परी, भरोसा एवं सहारा वर्ग में कार्यक्रम आयोजित किए गए। थाना प्रभारी बमहोरी कलाँ उप निरीक्षक रश्मि जैन द्वारा सह स्टाफ के थाना क्षेत्र में भरोसा वर्ग में युवतियों को सुरक्षा के संबंध में जानकारी दी गई। साथ ही उन्हें महिलाओं के अधिकारों एवं कानूनों से अवगत कराया गया एवं आपातकालीन स्थिति में शासन द्वारा उपलब्ध कराई गई। ऑनलाइन सेवा के संबंध में भी जानकारी दी गई।

खरगापुर में भूमाफिया उड़ा रहे हाईकोर्ट के आदेश की धज्जियां

राजस्व विभाग के जिम्मेवार अधिकारियों ने एक महीने बीतने के वावजूद भी नहीं हुई कार्रवाई

करोड़ों रूपए की बेशकीमती शासकीय भूमि पर लाखों की लागत निर्मित रेन बसेरा शौचालय का टैंक पर अवैध भवन का निर्माण

खरगापुर, देशबन्धु । प्रदेश सरकार भले ही सरकारी जमीनों पर बुलडोजर की कार्रवाई कर भूमाफियाओं के चंगुल से छुड़ाने का काम कर रही हो, लेकिन खरगापुर मे अवैध निर्माण कराने के मामले की खबर को प्रमुखता से दिखाया था जिसमें खरगापुर के तहसीलदार से लेकर बल्देवगढ़ में पदस्थ अनुविभागीय अधिकारी को अवैध निर्माण कराने की जानकारी होने के वावजूद भी अवैध निर्माण की कोई कार्यवाही नहीं की गई। जिससे अवैध कब्जाधारी के हौसले बुलंद है।

गौरतलब है कि खरगापुर की बेशकीमती सरकारी भूमि से अवैध निर्माण हटाने की कोई कार्रवाई नहीं की गई। नगर खरगापुर के वार्ड नंबर 6 ?मना बाबा की टोरिया पर दबंगो द्वारा करोड़ों रूपयों की बेशकीमती सरकारी भूमि का खसरा नंबर 947/1 रकवा 2.582 हैक्टेयर पर लाखों की लगात से निर्मित सरकारी रेन बसेरा का शौचालय का टैंक को तोड़कर दबंगों ने अवैध कब्जा कर दुकान और भवन का निर्माण धड़ल्ले कर रहे है।

वहीं इस मामले में ऐसा प्रतीत हो रहा है कि दबंग व्यक्तियों द्वारा किसी प्रभावशाली व्यक्ति और अधिकारियों के इसारो पर सरकारी भूमि पर अवैध कब्जा किया जा रहा हैं। जिसके चलते नगर इन दिनों सरकारी भूमियों पर अवैध कब्जा करना एक आम बात हो गई कि भूमाफियाओं को शासन प्रशासन का खौफ बेअसर साबित हो रहा है। किन्तु नगर परिषद खरगापुर में राजस्व विभाग के जिम्मेदारों की लापरवाही के चलते सरकारी जमीन पर दबंग भूमाफिया कब्जा करना अब आम हो गया है। इस सम्बंध में बल्देवगढ़ अनुविभागीय अधिकारी भारती ने बताया यह मामला हाईकोर्ट में जनहित याचिका दायर है। अवैध कब्जाधारियों शौचालय टैक पर निर्माण कर रखा है तहसीलदार और सीएमओ से अतिक्रमण हटाने की जांच उपरांत कार्रवाई की जाएगी ।

नर्मदापुरम, सोमवार 17 मार्च 2025

संस्थापक-संपादक : स्व. मायाराम सुरजन

आखिर किसे लात मारेंगे गडकरी?

केन्द्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्री नितिन गडकरी अपने काम के साथ अपनी साफगोई के लिये भी मशहूर हैं। माना जाता है कि वे अपने तरीके से काम करते हैं जिसमें किसी का दखल या दबाव नहीं होता। हर तरह की परियोजना पर उनकी अपनी मुहर होती है। सरकारी धन का इस्तेमाल किये बगैर वे किसी भी योजना को साकार करने में सक्षम माने जाते हैं। इसके लिये वे पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप (पीपीपी) का इस्तेमाल करते हैं। सबसे पहले 1995 में महाराष्ट्र की शिवसेना-भारतीय जनता पार्टी सरकार बनी तब उन्होंने यही पद सम्हाला था। उस दौरान मुम्बई में काफी कम समय में 55 फ्लाईओवर और मुम्बई-पुणे हाईवे बनाने में उन्हें सफलता मिली थी। वरली सी फेस ब्रिज भी उनके प्रयासों से बना था। इन सभी निर्माणों में इसी पद्धति का उन्होंने इस्तेमाल किया था। हालांकि निजी भागीदारों द्वारा भारी-भरकम टोल वसूल करने, अनेक महत्वपूर्ण महामार्गों के धसकने और कई पुलों के ढहने की भी घटनाएं हुई थीं जिसके कारण पीपीपी पर सवालिया निशान भी लगे।

नागपुर में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के एक साधारण कार्यकर्ता से उठकर इस पद तक पहुंचे गडकरी कई कारणों से सुर्खियां बटोरते रहे हैं। वर्ष 2010-13 के दौरान वे भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाये गये थे लेकिन उनके पूर्ती उद्योग समूह पर 2012 में अनियमितताओं के लगे आरोपों के कारण उन्होंने इस्तीफा दे दिया था। बाद में वे आरोप गलत साबित हुए थे। उनमें यह अच्छी बात है कि जो काम वे कर नहीं पाते उसे वे किसी भी मंच से स्वीकारने में संकोच नहीं करते। याद हो कि पिछले वर्ष के लोकसभा चुनाव के पहले नागपुर से प्रकाशित होने वाले एक अखबार में छपे साक्षात्कार ने हलचल मचा दी थी जो नाम न छापने की शर्त पर एक कथित केन्द्रीय मंत्री का था, जिसमें उन्हें यह कहकर उद्धृत किया गया था कि 'वे जब चाहें केन्द्र की भाजपा सरकार को पलटा सकते हैं।' उस इंटरव्यू में उन मंत्री का यह उद्धरण भी छपा था कि 'उनके साथ बहुमत है और वे प्रधानमंत्री बन सकते हैं।' भाजपा की मातृसंस्था राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बेहद करीबी माने जाने वाले गडकरी की ओर सभी का संदेह गया था। माना गया था कि उनके जरिये नरेन्द्र मोदी को खबरदार किया गया है। हालांकि गडकरी ने कभी स्वीकार नहीं किया कि वह साक्षात्कार उनका था। कोई करेगा भी नहीं।

एक विनम्र तथा काम से काम रखने वाले नेता की उनकी छवि है। वे दलगत राजनीति या गुटबाजी में नहीं उलझते, लेकिन कभी-कभार उनकी ओर से आये कुछ बयान इसलिये चर्चा में आ गये कि वे पार्टी लाइन से हटकर रहे हैं। मसलन, पिछले दिनों एक कार्यक्रम में उन्होंने बतलाया कि जिस लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से वे निर्वाचित होते हैं उनमें बड़ी तादाद मुस्लिमों की है और उनका उन्हें पूरा समर्थन मिलता है। वे यह बतलाने से भी गुरेज़ नहीं करते कि विभागीय निर्णय लेते वक्त वे यह नहीं देखते कि उन इलाकों में किस समुदाय के लोग रहते हैं। जाहिर है कि एक मंत्री के नाते उन्हें यही कहना होता है। बेशक, उनके लोकसभा क्षेत्र नागपुर में बड़ी तादाद में अल्पसंख्यक रहते हैं; लेकिन सभी को यह भी पता है कि चुनाव केवल विचारधारा के आधार पर नहीं लड़े जाते। उसमें बूथ मैनेजमेंट से लेकर बहुत सारे अन्य तथ्य भी प्रभाव डालते हैं।

बहरहाल, संघ से नज़दीकी बतलाती है कि गडकरी संगठन की विचारधारा से अलग नहीं हो सकते। मोदी और आरआरएस प्रमुख मोहन भागवत तक इस आशय के बयान देते रहे हैं जो एक तरह से भाजपा-संघ का उदार चेहरा बतलाने की कोशिश रहती है। मोदी कहते हैं कि 'वे यदि हिन्दू-मुसलमान करेंगे तो उन्हें सार्वजनिक जीवन में रहने का अधिकार नहीं है।' उधर भागवत को भी गाहे-बगाहे याद आ जाता है कि 'मुस्लिम हमारे भाई ही हैं' अथवा 'हिन्दुओं और मुस्लिमों का डीएनए एक ही है'। पीएम, संघ-प्रमुख या संगठन के नेता कुछ भी कहते रहें लेकिन कार्यकर्ताओं को पता है कि असलियत क्या है। यदि मोदी या भागवत की बातों में उनका सच्चा यकीन होता तो आज देश में साम्प्रदायिक सौहार्द्र की बयार बह रही होती और जगह-जगह पर देश के इन दो प्रमुख धार्मिक समुदायों के बीच टकराव नहीं हो रहे होते।

खैर, अब गडकरी नयी बात कह रहे हैं जो उनके जैसे संघ, एबीवीपी, भाजपा और मंत्रिमंडल के सदस्य के रूप में कहा जाना न केवल आश्चर्यजनक है बल्कि उनकी विचारधारा के बेहद प्रतिकूल भी। उनके तेवर भी कुछ अधिक आक्रामक हैं। नागपुर के अंजुमन-ए-इस्लाम इंजीनियरिंग संस्थान के दीक्षांत समारोह में भाषण करते हुए उन्होंने कहा कि, 'मैं कभी धर्म व जाति की राजनीति नहीं करता। मैं अपने तरीके से काम करता हूं। मुझे चिंता नहीं कि कौन उन्हें वोट देगा और कौन नहीं।' उन्होंने यह भी बताया कि इस इंजीनियरिंग कॉलेज की अनुमति उन्हें मिली थी लेकिन उन्होंने यह कहकर इस संस्थान को दे दी कि 'मुस्लिमों को इसकी ज़रूरत अधिक है।' कहा जा सकता है कि वे अपनी धर्मनिरपेक्ष नेता की छवि गढ़ रहे हैं, परन्तु अब गडकरी एक कदम आगे बढ़कर कहते हैं कि 'जो जात की बात करेगा उसको वे लात मारेंगे।' जिस तरह संघ की विचारधारा धार्मिक भेदभाव में भरोसा रखती है, उतना ही उसका विश्वास वर्ण व्यवस्था में भी है। संघ स्वयं इससे परिचालित होता है। उसका नेतृत्व सिर्फ एक अपवाद को छोड़कर ब्राह्मणों के ही हाथ में रहा है। ऐसे में गडकरी लात मारने की बात करते हैं, तो समझना होगा कि वे किसकी ओर इशारा कर रहे हैं।

मुस्लिम के बिना भारत की राजनीति नहीं चल सकती

बीजेपी मुसलमानों को जीने नहीं देगी। और विपक्ष उसे मरने नहीं देगा! कल्पना कीजिए बिना मुसलमान के भारत में राजनीति कैसी होगी?

सारी शामत दलित, पिछड़ा, आदिवासी, महिलाओं की आ जाएगी। मुसलमान इनके और बीजेपी के बीच में एक दीवार है। अगर दीवार हट गई तो मनुवाद के हमले दलित पिछड़ा झेल नहीं पाएगा।

कर्नाटक की केबिनेट ने एससी, एसटी, अन्य पिछड़े, सभी अल्पसंख्यक के लिए एक करोड़ तक की सरकारी खरीद में केवल पांच प्रतिशत के आरक्षण का प्रस्ताव पारित किया है। मगर बीजेपी ने हंगामा मचा दिया। उसे मनचाही मुराद मिल गई।

अभी कहीं लागू नहीं हुआ। लेकिन देश भर के मीडिया में यही खबर चल रही है। केवल पांच प्रतिशत के इस ग्रूप में मुसलमान कितना फायदा उठा लेंगे किसी को नहीं मालूम। मगर बीजेपी इस तरह बोल रही है, मीडिया इस तरह चला रहा है जैसे मुसलमानों को कोई बहुत बड़ा लाभ मिलने जा रहा हो।

कर्नाटक सरकार ने कोई नया काम नहीं किया है। करीब 25 साल पहले मध्य प्रदेश में दलित अजेंडा लेकर आने वाले उस समय के मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने दलितों के लिए सरकारी खरीद में 30 प्रतिशत आरक्षण किया था। उसका इतना विरोध हुआ कि कांग्रेस को सत्ता से बाहर जाना पड़ा।

इससे आप समझ सकते हैं कि दलित, पिछड़ों, आदिवासियों के लिए अगर कुछ वास्तविक काम किया जाता है तो उसका क्या राजनीतिक परिणाम होता है। उस दलित अजेंडे के बाद ही आए 2003 के विधानसभा चुनाव में जो कांग्रेस हारी तो अभी तक मध्यप्रदेश में वापस नहीं आ पाई है। वह 2018 में कुछ समय के लिए आई कमलनाथ सरकार का कोई मायने नहीं है। वह चार दिन की चांदनी वह भी कमलनाथ और उनके कुछ खास लोगों के लिए रही बाकी पूरी मध्यप्रदेश कांग्रेस के लिए अधेंरी रात 2003 से ही जारी है।

मुसलमान बीच में से हट जाए तो दलित पिछड़ों का जीना मुश्किल है! यह कर्नाटक सरकार का फैसला मूलतः अनुसूचित जाति, जनजाति, अन्य पिछड़ों को बड़े ताकतवर समुदायों के ठेकेदारों के मुकाबले थोड़ा सा सशक्त करने के लिए है। लेकिन अन्य पिछड़ों में मुसलमान भी आते हैं इसलिए इसे विवाद का विषय बना दिया गया।

मुस्लिम बीजेपी के लिए एक ऐसी चीज हैं जिसके बिना उसकी राजनीति नहीं हो सकती। एक किस्सा सुनाते हैं आपको। 2004 में जब अटलबिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री बन गए और सब बधाइयां वधाइयां हो गईं। केवल अडावानी और वाजपेयी बचे। तो वाजपेयी जी ने कहा कि कहिए आडवानी जी अब मुसलमानों को कहां फेंक आएं अरब सागर में या आपके हिन्दू नाम वाले प्रशांत महासागर में? आडवानी जी घबराए! बोले नहीं नहीं! फिर मेरी राजनीति का क्या होगा?

हालांकि राजनीति फिर भी नहीं चली। प्रधानमंत्री नहीं बन पाए। और बड़े बेआबरू होकर बाकी जिन्दगी बिताना पड़ रही है।

शकील अख्तर

> सारी शामत दलित, पिछड़ा, आदिवासी, महिलाओं की आ जाएगी। मुसलमान इनके और बीजेपी के बीच में एक दीवार है। अगर दीवार हट गई तो मनुवाद के हमले दलित पिछड़ा झेल नहीं पाएगा। कर्नाटक की केबिनेट ने एससी, एसटी, अन्य पिछड़े, सभी अल्पसंख्यक के लिए एक करोड़ तक की सरकारी खरीद में केवल पांच प्रतिशत के आरक्षण का प्रस्ताव पारित किया है। मगर बीजेपी ने हंगामा मचा दिया। उसे मनचाही मुराद मिल गई।

अभी होली के ठीक बाद भाजपा का एक बड़ा अफ्तार प्रोग्राम हुआ। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता पहली बार किसी सार्वजनिक प्रोग्राम में दिखीं। कांग्रेस से और दूसरे विपक्षी दलों से तो यह हमेशा कहते रहते हैं कि अफ्तार में जाते हो हिन्दुओं के कार्यक्रमों में नहीं जाते। लेकिन खुद कोई होली मिलन का बड़ा कार्यक्रम करने के बदले रोजा अफ्तार में सारे बड़े नेता भाजपा के, केन्द्रीय मंत्री पहुंचे। कोई बुरी बात नहीं है। खुद वाजपेयी जी रोजा अफ्तार करते थे। सफेद नमाजी टोपी लगाते थे।

लेकिन सोनिया गांधी के करने पर हमेशा सवाल उठाए। अब सोनिया गांधी ने बंद भी कर दिया। हम तो हमेशा से इन राजनीतिक रोजा अफ्तार के विरोध में लिखते रहे। इसका आम मुसलमानों को कोई फायदा नहीं। मगर निशाने पर उन्हीं को लिया जाता है। सवाल उन्हीं से होते हैं। आज जो गोदी मीडिया के बड़े-बड़े धुरंधर हैं उनमें से किसी को अहमद पटेल, गुलामनबी आजाद, सलमान खुर्शीद से यह सवाल पूछते नहीं देखा कि रोजा अफ्तार क्यों? हां, गरीब मुसलमानों की बस्ती में यह सवाल जरूर पूछवाते हैं। अब दिल्ली की भाजपा की मुख्यमंत्री से पूछने की हिम्मत भी किसी ने नहीं दिखाई।

मीडिया का एक और बड़ा रूप है। होली दीवाली पर कभी-किसी गोदी मीडिया के एंकर पत्रकार की हिम्मत नहीं पड़ी कि बिना बुलाए प्रधानमंत्री मोदी के या बीजेपी के किसी बड़े नेता के यहां पहुंच जाएं। मगर कांग्रेस के मुसलमान नेताओं के यहां पहुंच जाते हैं। उनके या उनकी नेता सोनिया के रोजा अफ्तार की आलोचना भी करते हैं और ईद पर तो खिलाना ही पड़ेगा के अधिकार के साथ भी पहुंच जाते हैं।

एक मुस्लिम ग्रंथी जो बीजेपी संघ ने पैदा की। वह भाजपा और संघ के लोगों से ज्यादा मीडिया में है और जितना मुस्लिम विरोध की भावना उनमें है उससे कई गुना ज्यादा दलित पिछड़े, आदिवासी के लिए है। राहुल का यह सवाल सही है जो वे कई बार प्रेस कान्फ्रेंस में भी पूछ चुके हैं कि यहां मौजूद पत्रकारों में दलित पिछड़े कितने हैं? हालांकि वे खुद इस सवाल का जवाब नहीं दे सकते कि उनके अखबारों जिनमें तो सारी भर्ती ही नई की गई है कितने दलित पिछड़े हैं? कांग्रेस के अखबार नेशनल हेराल्ड, नवजीवन, कौमी आवाज पहले भी बंद इसीलिए हुए कि वह पूरे संघियों के हाथों में चले गए थे।

इतनी ओवर भर्तियां हो गई थी कि तनखा देना मुश्किल हो गया था। कई रिटायर्ड अफसर हैं। आईएएस आईपीएस। पूरे संघी हो गए हैं। कुछ डबल इंजन की सरकारों में मिला भी हुआ है। राहुल का मजाक उड़ाना तो पहला काम है। मगर कभी-कभी यह बताने के लिए हम भी कभी लिखते थे। अपनी पुरानी कटिंग्स सोशल मीडिया पर डालते हैं। मिलने पर दिखाते भी हैं। नेशनल हेराल्ड में छपे लेख। हम कहते हैं आर्गनाइजर (संघ का मुखपत्र) में क्यों नहीं लिखते थे?

कहते हैं वह कोई अख़बार है? फिर आज टेबल पर यह क्यों रखा है? हें.. हें .. हें! नेशनल हेराल्ड क्यों नहीं? वह अब कोई अख़बार बचा है? कांग्रेस के नेता तक नहीं पढ़ते। अभी हमें पिछले हफ्ते के नेशनल हेराल्ड और नवजीवन के पहले पेजों के फोटो किसी ने भेजे थे। बाद में अख़बार भी। पहले पेज पर टाप पर करीब 6-6 कालमों में मोदी जी के फोटो लगे थे। क्यों इसका जवाब किसी के पास नहीं है।

नई भर्तियों की बात आई तो याद आया कि पहले लोकसभा चैनल और फिर राज्यसभा चैनल कांग्रेस के राज में ही शुरू हुए। और सब नई भर्तियां ही हुईं। खूब संघ के लोगों ने अपने लोगों को भर्ती कराया। बहुत बड़े पदों पर रहने वाले भी अपनी सफाई में यह लिखते रहते हैं कि हम कांग्रेसी नहीं। कौन पूछ रहा है कि आप क्या हो? मगर कांग्रेस राज में पूरा फायदा उठाने वाले यह जरूर कहते रहते हैं।

दूरदर्शन रेडियो में तो संघी रहे ही। किसी एक संदर्भ में हमने किसी एक के बारे में लिख दिया था तो कांग्रेसी बड़े खुश हुए। कहने लगे अब वह हमें गालियां देता है। हमने कहा कम देता है और ज्यादा देना चाहिए। आपके लोगों ने दस साल उससे काम लिया। वह आप सबकी औकात जानता है।

तो इस समय जब होली, रमजान के एक जुमे के साथ आने पर भाजपा ने और उसकी गोदी में बैठे मीडिया ने खूब अफवाहें फैलाईं। झूठ बोला। गैरकानूनी बात कर रहे एक पुलिस के सामान्य अधिकारी सीओ को हीरो बना दिया। खुद मुख्यमंत्री उसकी बात कि जुमे को निकलोगे तो यह होगा का समर्थन करने लगे। उस समय कर्नाटक की कांग्रेसी सरकार ने यह फैसला लिया है।

जाहिर है कि होली और जुमा दोनों शांतिपूर्ण गुजर जाने से हताश मीडिया को यह एक नया मौका मिल गया। बीजेपी को तो मिला ही है। कांग्रेस को इससे क्या मिला? क्या मिलेगा? यह सवाल ऐसा ही है जिसका कोई जवाब नहीं आएगा। हां, कांग्रेस को होने वाले नुकसान जरूर सामने आएंगे और मुसलमान को क्या? मुसलमान को कुछ नहीं। 11 साल में वह सीख गया है कि शांत रहना है। चुप। वह असली निशाना नहीं है। एक बहाना है। असली निशाना तो दलित पिछड़ा आदिवासी है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार है)

आम लोगों के गिरते जीवन स्तर और बेरोज़गारी पैदा कर रही सामाजिक तनाव

■ कृष्णा झा

भारत में कॉर्पोरेट पूंजीवाद आज संकट की चपेट में है। अर्थव्यवस्था लगातार गिरती जा रही है। 8 जनवरी, 2025 को जारी सरकारी आंकड़ों के अनुसार, अनुमान है कि 2024-25 में यह चार साल के निचले स्तर 6.4 प्रतिशत पर आ जायेगी, जिसका मुख्य कारण विनिर्माण और सेवा क्षेत्रों में खराब प्रदर्शन है। अंबानी और अडानी के नेतृत्व में कुछ ही हाथों में धन और पूंजी का बहुत बड़ा संकेन्द्रण है। छोटे और मध्यम उद्यम जो राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के साथ-साथ रोज़गार सृजन में अधिकतम योगदान देते हैं, वे गहरे संकट में हैं और नष्ट हो रहे हैं।

यह स्थिति इसलिए पैदा हुई है क्योंकि भारत को वित्तीय पूंजी के लिए एक खेल का मैदान बनने दिया गया है, जो बैंकिंग और औद्योगिक पूंजी के विलय के अलावा और कुछ नहीं है। वित्त वर्ष 24 के लिए संस्थान-वार निवेश डेटा के विश्लेषण से पता चलता है कि निजी क्षेत्र का निवेश जीडीपी के 11.2 प्रतिशत के तीन साल के निचले स्तर पर आ गया है, जो वास्तव में वित्त वर्ष 2016 और 2020 के बीच 11.8 प्रतिशत के पूर्व-कोविड औसत से कम है, जो निजी क्षेत्र की कमजोर निवेश भावनाओं को दर्शाता है, जैसा कि इंडिया रेटिंग्स ने 5 मार्च, 2025 को एक नोट में कहा।

> भारत को वित्तीय पूंजी के लिए एक खेल का मैदान बनने दिया गया है, जो बैंकिंग और औद्योगिक पूंजी के विलय के अलावा और कुछ नहीं है। वित्त वर्ष 24 के लिए संस्थान-वार निवेश डेटा के विश्लेषण से पता चलता है कि निजी क्षेत्र का निवेश जीडीपी के 11.2 प्रतिशत के तीन साल के निचले स्तर पर आ गया है।

विभिन्न पीएलआई योजनाओं की अनुमानित सफलता और निजी क्षेत्र द्वारा निवेश के लिए अन्य सरकारी प्रयासों जैसे आवश्यक आकर्षणों के बावजूद, यह वहीं का वहीं बना हुआ है। आर्थिक सर्वेक्षण 2025 के अनुसार देश को 2047 तक विकसित राष्ट्र के लक्ष्य तक पहुंचने के लिए, अर्थव्यवस्था को दो दशकों तक निरंतर 8 प्रतिशत से अधिक की दर से बढ़ना चाहिए। इसके लिए कम से कम 35 प्रतिशत की निवेश दर की आवश्यकता होती है, जिसमें निजी क्षेत्र अग्रणी भूमिका निभाता है। लेकिन नए टैरिफ युद्धों से उपजे भू-राजनीतिक जोखिमों को देखते हुए यह चुनौतीपूर्ण लग रहा है, जो निजी खिलाड़ियों के निवेश निर्णयों को सतर्क कर सकता है, साथ ही परिवारों की बचत दर में गिरावट भी हो सकती है।

सकल पूंजी निर्माण और जीडीपी के अनुपात से मापी गयी निवेश दर, वित्त वर्ष 2016-20 के दौरान कई कारणों से 29.9 प्रतिशत पर स्थिर रही थी, जैसे कि परियोजनाओं के कार्यान्वयन में आने वाली कठिनाइयां, बैंकों की उच्च गैर-निष्पादित संपत्तियाँ, कमजोर घरेलू/बाहरी मांग आदि। महामारी के कारण यह वित्त वर्ष 2021 में 27.5 प्रतिशत के दो दशक के निचले स्तर पर आ गयी। हालांकि महामारी के बाद वित्त वर्ष 2022-23 के दौरान निवेश में सुधार हुआ, लेकिन वित्त वर्ष 2024 में यह घटकर 32 प्रतिशत रह गया। क्षेत्रीय संरचना पर एक नज़र डालने से पता चलता है कि वित्त वर्ष 2024-25 में समग्र निवेश दर में मंदी सेवाओं और औद्योगिक क्षेत्रों के कारण थी। सेवा क्षेत्र में निवेश घटकर 19.3 प्रतिशत रह गया, जबकि औद्योगिक क्षेत्र में यह वित्त वर्ष 2024 में घटकर 10.1 प्रतिशत रह गया। इन क्षेत्रों में निवेश दर वित्त वर्ष 2024में घटकर क्रमशः 3.1 प्रतिशत और 6.2 प्रतिशत रह गयी, जो वित्त वर्ष 2023 में क्रमशः 4.3 प्रतिशत और 6.7 प्रतिशत थी।

राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय ने परिवारों, सरकार, सार्वजनिक और निजी क्षेत्र द्वारा सकल पूंजी निर्माण के लिए विस्तृत डेटा प्रदान किया है और वित्त वर्ष 2024 में निवेश में गिरावट निजी और घरेलू क्षेत्रों के खराब प्रदर्शन के कारण हुई। यह ध्यान दिया जा सकता है कि निजी क्षेत्र की निवेश दर में गिरावट के बावजूद, वित्त वर्ष 2024 में परिवारों द्वारा निवेश में 12.8 प्रतिशत की कमी आई।

दूसरी ओर, समग्र बचत दर, आज की कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद के अनुपात के रूप में वित्त वर्ष 2024में 30.7 प्रतिशत पर स्थिर रही। सरकार को छोड़कर, परिवारों, निजी और सार्वजनिक क्षेत्र ने अपनी बचत दर में कमी देखी। वित्त वर्ष 2021 में 22.7 प्रतिशत के हालिया शिखर पर पहुंचने के बाद परिवारों की बचत दर में गिरावट का रुख रहा है और वित्त वर्ष 2024 में यह सात साल के निचले स्तर 18.1 प्रतिशत पर आ गयी।

घरेलू बचत के लिए एक और नकारात्मक कारक वित्तीय देनदारियों में वृद्धि है, जो वित्त वर्ष 24 में जीडीपी के 6.2 प्रतिशत के साथ 17 साल के उच्चतम स्तर पर पहुंच गयी। अध्ययनों के अनुसार, यह अनुमान लगाया गया है कि यह गिरावट वित्त वर्ष 2025 में भी जारी रहने की संभावना है, जिसमें निजी क्षेत्र का निवेश संभावित रूप से जीडीपी के 11 प्रतिशत से नीचे गिर सकता है। वित्त वर्ष 25 के लिए समग्र निवेश दर भी घटकर 31.1 प्रतिशत रहने का अनुमान है, जैसा कि वर्ष के लिए दूसरे अग्रिम अनुमानों से संकेत मिलता है।

वित्त वर्ष 2024 में भारत में निजी क्षेत्र के पूंजीगत व्यय में गिरावट इस बात पर प्रकाश डालती है कि निजी क्षेत्र के खिलाड़ियों के बीच कमजोर निवेश भावनाओं ने इस गिरावट में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन क्षेत्रों में सुस्त प्रदर्शन निजी क्षेत्र के निवेश को पुनर्जीवित करने में व्यापक चुनौतियों को दर्शाता है, जो सतत आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है। कारकों का संयोजन भारत की दीर्घकालिक आर्थिक महत्वाकांक्षाओं का समर्थन करने के लिए सभी क्षेत्रों में निवेश और बचत दरों को बढ़ावा देने के लिए नीतिगत हस्तक्षेप की आवश्यकता को रेखांकित करता है। यह ध्यान देने योग्य है कि भारत का विनिर्माण क्रय प्रबंधक सूचकांक (पीएमआई) जनवरी में 57.7 से फरवरी 2025 में 56.3 तक गिर गया, जो दिसंबर 2023 के बाद से सबसे धीमा विस्तार है। यह गिरावट उत्पादन और बिक्री में कमजोर वृद्धि के साथ-साथ इनपुट खरीद में 14 महीने के निचले स्तर तक मंदी के कारण हुई।

निवेश में गिरावट पर विचार करने से पहले, यह विचार किया जा सकता है कि वित्त वर्ष 2024-25 की अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में 6.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जो पिछली तिमाही की 5.6 प्रतिशत वृद्धि से अधिक है। यह वृद्धि दूसरी तिमाही में सात तिमाहियों के निचले स्तर 5.4 प्रतिशत पर आने के बाद हुई है, जो अनुमान से काफी कम है। यह वृद्धि मुख्य रूप से सरकार और उपभोक्ता खर्च में वृद्धि, खरीफ फसल उत्पादन में मजबूती और ग्रामीण मांग में सुधार के कारण हुई।

हालांकि तथ्य यह सामने लाते हैं कि भारत में नब्बे प्रतिशत लोगों के पास विवेकाधीन खर्च करने की शक्ति नहीं है। ब्लूम वेंचर्स की इंडस वैली वार्षिक रिपोर्ट 2025 में कहा गया है कि भारत की शीर्ष 10 प्रतिशत आबादी उपभोग और आर्थिक विकास का प्राथमिक चालक बनी हुई है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि एशिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था में यह 'उपभोक्ता वर्ग' आकार में विस्तार नहीं कर रहा है, बल्कि और अधिक अमीर बन रहा है, जिसका अर्थ है कि अमीर और अधिक अमीर हो रहे हैं, जबकि कुल मिलाकर अमीर व्यक्तियों की संख्या स्थिर बनी हुई है, जैसा कि रिपोर्ट के बीबीसी विश्लेषण से पता चलता है।

ललित सुरजन की कलम से

वैज्ञानिक जिन्हें हम भूल न जाएं

'पिछले दिनों हमने अपने तीन महान वैज्ञानिकों को खो दिया, लेकिन उनके निधन पर न तो मीडिया में कोई खास चर्चा सुनने मिली और न उन उच्च शिक्षण संस्थानों में उन्हें शायद ही याद किया गया जिनको बनाने संवारने में उन्होंने अपना पूरा जीवन खपा दिया। हमें कभी भारत का अर्थ बताया गया था कि जो भा अर्थात बुद्धि और ज्ञान की साधना में रत हो वह भारत है। आज का दृश्य देखकर लगता है कि यह परिभाषा शायद मनगढ़ंत है। यहां टीवी के छोटे-मोटे कलाकारों को देखने के लिए भीड़ उमड़ती है, नामचीन फिल्मी सितारों के मिनट-दो मिनट के कार्यक्रम के लिए करोड़ों लुटा दिए जाते हैं, लेकिन विश्वगुरु होने का दावा करने वाले इस देश में उन गुरुओं का कोई सम्मान नहीं, उन्हें कोई याद नहीं करता, जिन्होंने सचमुच मां भारती की सेवा की है।'

'हमारी शासन व्यवस्था, समाज व्यवस्था और शिक्षा व्यवस्था-सब में ज्ञान, विवेक और तर्कबुद्धि, इन सबका मानो कोई स्थान नहीं रह गया है। अंग्रेजी में जिसे सॉफ्ट पावर कहा जाता है उसे हम लगभग भूलते जा रहे हैं।'

(देशबन्धु में 10 अगस्त 2017 को प्रकाशित)

https://lalitsurjan.blogspot.com/2017/08/blog-post_9.html

गुरवाणी विचार

बिलावल महला 3

सतगुरि सेवेहि से वडभागी- हउमें मारि सचि लिव लागी
तेरे रंगि राते सहजि सुभाये- तूं सुख दाता लेहि मिलाये
ऐकस ते दूजा नाही कोय- प्रंदह थिती ते सतबार
माह रूती आवे बारो वार दिनस रंगि तिवै संसार
आवागमन कीआ करतारि निहचल साच रहिआ कल धारि

नानक गुरमुख बूझै को शब्द विचार वाणी की इन पंक्तियों द्वारा तीसरे नानक श्री गुरू अमरदास दास जी मानव मन को समझाइश देते हुए फरमा रहे है वे जीव बहुत ही भाग्यशाली हे जो प्रभु प्रमात्मा की सिमरन बंदगी में रमे रहते हैं क्यों सिमरन करते रहने से उनके अंदर ऐ मै मेरी का चक्कर खत्म हो जाता है।

मेरा मुझ में किद्द नहीं जो कि किद्द है सो तेरा

इस सिंद्धांत पर चलकर अपना जीवन यापन करते हैं यह सारा संसार प्रभु प्रमात्मा की उत्पत्ति है हर एक में प्रभु प्रमात्मा बिराज मान है इसलिये हम सब भाई भाई है।

एक पिता ऐकस के हम बारिक तूं मेरा गुरू हाई।

जिनका ध्यान प्रभु प्रमात्मा में लगा रहता हे जो प्रभु प्यारे में रंग जाते हैं वे ही आत्मिक अडोलता में जीवन यापन करते हैं क्यों कि फिर वे कहीं इधर-उधर पीर फकीरों के मढ़ी मसानों के चक्कर नहीं काटते वे फिर सीधे प्रभु प्रमात्मा से ही जो कुछ मांगना है बिनती करते रहते हैं क्योंकि जिनके मन में प्रभु प्रमात्मा बस गया है उन्हें फिर किसी बात की कमी रहने वाली ही नहीं है।

जाका मीत साजन है समिया तिस जनको कहो का की कमिया

फिर उसे सिवाय प्रभु प्रमात्मा के और कुछ नजर ही नहीं आता हर जगह उसे प्रभु प्रमात्मा ही दिखाई देने लगता है। आगे आप फरमाते हैं कि तस तरह पंद्रह तिथियां है सात वार है बारह महीने है दिन रात है सब प्रभु की आज्ञा में ही चल रही है आपने अपने समय नुसार दिन रात पहर घड़ियां आती है सब प्रभु के हुकमानुसार ही हो रहा है सारी कायनात भी प्रभु हुकम में चल रही है सब चलाये मान है सिवाय प्रभु प्रमात्मा के। प्रभु प्रमात्मा ही स्थ्रि है बाकी हर जीव हर वस्तु चलायमान है। वही सदा अटल रहने वाला है। इस सारी सृष्टि को प्रभु प्रमात्मा ने अपनी सत्ता हुकम में टिका रखा है। हुकमे अंदर सबको बाहर हुकम नहीं कोय जिस जिस ने प्रभु प्रमात्मा को अपने मन में बसा लिया है उन्हें इस बात का ज्ञान हो गया है कि हर चीन प्रभु प्रमात्मा की आज्ञा में ही चल रही है उनकी आज्ञा के बिना एक पत्ता भी हिल नहीं सकता, इस तरह इंसान अज्ञानता वश थितवार माह ऋतु इत्यादि के चक्कर में पड़ा रहा है कि फलाने दिन यह काम नहीं करना है फलाने दिशा में नहीं जाना है वरना इतना नुकसान हो जाएका इत्यादि इत्यादि।) हर वार प्रभु प्रमात्मा ने बनाये हैं अतएव कोई अशुभ नहीं है सारे शुभ ही शुभ है कोई दिशा खराब नहीं है कोई जगह खराब नहीं हैखराब दिन वही है जिस दिन हमारे मन में प्रभु की याद बिसरजाती है और हम सांसारिक मोहमाया में फंस जाते हैं वरना हर्रा दन अच्छा है हमें चाहिये कि प्रभु प्रमात्मा द्वारा दी गई शंवासों की पूंजी का हम पूर्ण रूपेण लाभ उठाते हुये प्रभु सिमरन बंदगी में रमे रहें तभी हमारा लोक और परलोक सुहेला यापन कर पायेंगे और फिर प्रभु लोक जाकर भी साची दरगाह में स्थान प्राप्त कर पावेंगे जहा फिर सदा हमें आनंद ही आनंद की अनुभूति होती रहेगी।

-इंदर सिंह आहूजा

आपके पत्र

खालिस्तान समर्थकों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई जरूरी

पंजाब में अमृतसर के एक मंदिर में बम फेंकने की घटना चिंतित करने वाली है। यह घटना इसलिए भी ज्यादा चिंताजनक है क्योंकि अब खालिस्तान समर्थक हिंदू मंदिरों पर भी हमला करने में नहीं हिचक रहे हैं। इसके पहले भी कई पुलिस चौकियों पर बम फेंकने की घटनाएं हो चुकी हैं और कई नेताओं की हत्या की जा चुकी है, जिनकी जिम्मेदारी खालिस्तान समर्थकों ने ली है।

इस घटना से हमें भिंडरावाला के आतंक की याद आती है, जिन्होंने स्वणर्द मंदिर को आतंक का अड्डा बना दिया था। इसी तरह, भारत में और विदेशों में रहने वाले खालिस्तान समर्थकों को पाकिस्तान की भरपूर सहायता मिल रही है। पाकिस्तान नशीले ड्रग्स और हथियारों की सप्लाई कर रहा है, जिससे आतंकवाद को बढ़ावा मिल रहा है।

भारत के संविधान के तहत पुलिस एक राज्य का विषय है, केंद्र संस्थान को प्रभावित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जिसके परिणामस्वरूप अक्सर पुलिस का राजनीतिकरण होता है। इस समस्या का समाधान के लिए सरकार को पुलिस प्रशासन के साथ मिलकर काम करना होगा। इसके लिए जरूरी है कि पुलिस को अधिक शक्तियां दी जाएं और उन्हें आतंकवाद के खिलाफ लड़ने के लिए पूरी तरह से तैयार किया जाए। इसके अलावा, सरकार को खालिस्तान समर्थकों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करनी होगी और उन्हें आतंकवाद के लिए धन और हथियारों की सप्लाई करने वालों के खिलाफ भी कार्रवाई करनी होगी।

-सुभाष बुडावन वाला, रतलाम, मप्र

भारत ने ICC चैंपियंस ट्रॉफी का ख़िताब जीतकर 140 करोड़ भारतीयों का जीता दिल

ICC चैंपियंस ट्रॉफी 2025 को जीतकर भारतीय क्रिकेट टीम ने एक बार फिर दुनिया में अपना परचम लहराया है। यह सिर्फ एक ट्रॉफी नहीं, बल्कि 140 करोड़ भारतीयों के सपनों और उम्मीदों की जीत है। यह ऐतिहासिक जीत क्रिकेट प्रेमियों के दिलों में हमेशा जिंदा रहेगी। टीम इंडिया के हर खिलाड़ी ने मैदान पर जोश और जुनून के साथ खेलते हुए हिंदुस्तान का सिर गर्व से ऊंचा किया है। रोहित शर्मा की कप्तानी में भारत ने पहली बार चैंपियंस ट्रॉफी का खिताब जीता है। इस तरह से भारत तीसरी बार चैंपियंस ट्रॉफी का खिताब अपने नाम किया। इसके साथ ही भारत ने सातवीं बार आईसीसी टूर्नामेंट अपने नाम किया। भारत इस टूर्नामेंट में अजेय रहा है। दरअसल, ICC चैम्पियंस ट्रॉफी 2025 के फाइनल मुकाबले में रविवार (9 मार्च) को भारतीय टीम ने न्यूजीलैंड को 4 विकेट से हराकर यह खिताब जीता। बता दें कि रोहित शर्मा की कप्तानी में भारतीय टीम ने 25 साल बाद न्यूजीलैंड से अपना बदला पूरा कर लिया है। यह बदला ICC चैम्पियंस ट्रॉफी का है। 25 साल पहले यानी 2000 के चैम्पियंस ट्रॉफी के फाइनल में न्यूजीलैंड टीम ने सौरव गांगुली की कप्तानी वाली भारतीय टीम को हराकर खिताब जीता था। वहीं अब भारत ने 9 महीने के अंदर दूसरा ICC टाइटल जीता है। इससे पहले रोहित शर्मा की कप्तानी में टीम ने जून 2024 में टी-20 वर्ल्ड कप भी जीता था। वहीं अब भारतीय टीम का अगला लक्ष्य इस साल होने वाले एशिया कप और अगले साल यानी 2026 में आईसीसी T20 वर्ल्ड कप का ख़िताब जीतने का रहेगा।

राहुल उपाध्याय, असनवार, बलिया.

खेल जगत

अगर भारत में ओलंपिक होते हैं तो यह देश के लिए गर्व की बात होगी : योगेश्वर

नई दिल्ली। ओलंपिक कांस्य पदक विजेता पहलवान योगेश्वर दत्त ने कहा है कि हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 2036 ओलंपिक के लिए प्रयास कर रहे हैं और भगवान की कृपा से अगर ओलंपिक भारत में आयोजित होते हैं तो यह देश के लिए बहुत गर्व की बात होगी। योगेश्वर ने आईएएनएस से बातचीत में कहा कि यह देखकर अच्छा लगता है कि हमारे पहलवान लगातार अंतर्राष्ट्रीय टूर्नामेंटों में शानदार प्रदर्शन कर रहे हैं। हमारे पास कुश्ती में ओलंपिक में कांस्य और रजत पदक भी है। हमारा प्रयास रहेगा कि हम 2028 लॉस एंजेलिस ओलंपिक में गोल्ड जीतें। उन्होंने कहा कि हमने ओलंपिक में जो हासिल किया है, हम चाहेंगे कि मौजूदा पहलवान भविष्य में हमसे अच्छा प्रदर्शन करें।

ट्रॉफी जिताने में हरमनप्रीत की अहम भूमिका: शार्लेट

■ हरमनप्रीत ने 44 गेंदों की अपनी पारी में नौ चौके और दो छक्के लगाए

मुंबई, 16 मार्च (एजेंसियां)। मुंबई इंडियंस (एमआई) ने महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) का दूसरा खिताब जीत लिया। उन्होंने फाइनल मुकाबले में दिल्ली कैपिटल्स (डीसी) को आठ रनों से हराया। इस जीत के बाद एमआई की मुख्य कोच शार्लेट एडवर्ड्स ने कप्तान हरमनप्रीत कौर की 66 रनों की शानदार पारी को मैच का टर्निंग पॉइंट बताया। ब्रेबोर्न स्टेडियम में खेले गए इस मुकाबले में हरमनप्रीत ने घुटने की परेशानी के बावजूद बेहतरीन शॉट खेले और शानदार 66 रन बनाए। उन्होंने 44 गेंदों की अपनी पारी में नौ चौके और दो छक्के लगाए। हालांकि एमआई की शुरुआत धीमी रही और पहले छह ओवर में सिर्फ 20 रन बने, लेकिन इसके बाद टीम ने संभलकर 149/7 का स्कोर खड़ा किया। एमआई के गेंदबाजों ने इस लक्ष्य को बचाने में शानदार प्रदर्शन किया, जिसमें नैट साइवर ब्रंट ने तीन विकेट चटकाए और डीसी को 141/9 तक सीमित कर दिया। शार्लेट एडवर्ड्स ने मैच के बाद कहा कि हम जानते थे कि इस मैदान पर पहले छह ओवरों में बल्लेबाजी करना मुश्किल होगा, लेकिन बाद में हम वापसी कर सकते हैं। उन्होंने हरमनप्रीत की पारी की तारीफ करते हुए कहा कि जब वह अपनी बेहतरीन लय में होती हैं, तो वह दुनिया की सबसे बेहतरीन खिलाड़ी बन जाती हैं। निश्चित तौर पर वह दूसरा खिताब जीतना चाहती थीं और उसके लिए उन्होंने अपने पारी में वह सब कुछ किया। इस मैदान पर पहले छह ओवर मुश्किल होते हैं, तो मुझे लगता है हरमनप्रीत ने हालातों को बहुत अच्छे से समझा। वह जानती थीं किस गेंदबाज के खिलाफ आक्रामक होना है और यह एक निर्णायक पारी थी जिसने हमें गेम में आगे कर दिया। डीसी के मुख्य कोच जोनाथन बैटी ने भी हरमनप्रीत की इस पारी को सराहा और कहा कि उन्होंने एमआई को ट्रॉफी जिताने में अहम भूमिका निभाई। उन्होंने कहा कि हमने अच्छी गेंदबाजी की, लेकिन हरमनप्रीत ने जोखिम उठाए और उन्हें अपने खेल पर पूरा भरोसा था, इसलिए वह सफल रहीं। यह मैच एमआई के लिए इस हफ्ते का चौथा मुकाबला था, लेकिन टीम ने लगातार बेहतरीन खेल दिखाया और खिताब अपने नाम किया। शार्लेट ने अपनी टीम की मेहनत की सराहना करते हुए कहा कि खिलाड़ियों ने छह दिनों में चार मैच खेले, जो आसान नहीं था। लेकिन उन्होंने दबाव में शानदार प्रदर्शन किया और इस जीत के लिए पूरी ताकत लगा दी।

मुझे नहीं लगता कि दिल्ली की टीम पर कोई मानसिक दबाव है : डीसी कोच बैटी

मुंबई। ब्रेबोर्न स्टेडियम में 2025 के फाइनल में मुंबई इंडियंस से आठ रन से हारने के बाद लगातार तीसरी बार दिल्ली कैपिटल्स महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) में उपविजेता रही। लीग चरण में तालिका में शीर्ष पर रहने के बावजूद खिताबी मुकाबले में एक और दिल टूटने के बाद मुख्य कोच जोनाथन बैटी ने अपनी टीम का बचाव करते हुए मेग लैनिंग की अगुआई वाली टीम में मानसिक दबाव की बातों को खारिज कर दिया। बैटी ने कहा कि लड़कियां वास्तव में सकारात्मक रही हैं, मैं उन्हें दोष नहीं दे सकता। कोई भी नकारात्मक बात नहीं हुई जैसे कि हमने पिछले दो फाइनल में गड़बड़ कर दी है, हम इस बार भी यही बोझ उठाने जा रहे हैं, ऐसा कुछ भी नहीं। मुझे लगा कि वे वास्तव में सकारात्मक थीं, वास्तव में आत्मविश्वास से भरी हुई थीं। लड़कियां शानदार रही हैं, उन्होंने शानदार प्रशिक्षण लिया है। मुझे नहीं लगता कि यह बिल्कुल भी मानसिक दबाव है। आप देखें कि हमने पहले हाफ में गेंद और फील्डिंग के साथ कैसा प्रदर्शन किया और उन्हें उस विकेट पर 149 रन पर रोक दिया। आप देखें कि पूरे सप्ताह में क्या हुआ, एलिमिनेटर और यहां के अन्य मैचों में, हम उम्मीद कर रहे थे कि शायद 180 के बराबर स्कोर होगा, इसलिए हम इससे वास्तव में प्रसन्न थे।

डब्ल्यूपीएल 2025 में अमेलिया केर की फिरकी में उलझीं बल्लेबाज

नई दिल्ली। मुंबई के ब्रेबोर्न स्टेडियम में खेले गए महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) 2025 के रोमांचक फाइनल में मुंबई इंडियंस वूमेन टीम ने दिल्ली कैपिटल्स वूमेन टीम को 8 रनों से हराकर खिताब अपने नाम किया। पहले बल्लेबाजी करते हुए मुंबई इंडियंस ने 20 ओवर में 7 विकेट खोकर 149 रन बनाए, जिसके जवाब में दिल्ली कैपिटल्स 20 ओवर में 9 विकेट पर 141 रन ही बना सकी। इस जीत के साथ मुंबई इंडियंस ने एक बार फिर अपनी बादशाहत साबित की। मुंबई इंडियंस की कप्तान हरमनप्रीत कौर ने फाइनल में शानदार प्रदर्शन करते हुए 44 गेंदों पर 66 रन बनाए, जिसमें 9 चौके और 2 छक्के शामिल थे। उनकी 150 की स्ट्राइक रेट वाली पारी ने टीम को मजबूत स्कोर तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई। इसके लिए उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच का पुरस्कार भी मिला। दूसरी ओर, नेट स्किवर-ब्रंट ने 28 गेंदों में 30 रन बनाकर टीम को स्थिरता प्रदान की। अंत में अमनजोत कौर (14*) और संस्कृति गुप्ता (8*) ने नाबाद रहकर स्कोर को 149 तक पहुंचाया। लक्ष्य का पीछा करने उतरी दिल्ली कैपिटल्स की शुरुआत अच्छी नहीं रही।

स्पेशल ओलंपिक वर्ल्ड विंटर गेम्स

भारत ने 33 पदकों के साथ अभियान का अंत किया

■ हमारे एथलीटों ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि समर्पण और दृढ़ता के साथ, वे जो हासिल कर सकते हैं उसकी कोई सीमा नहीं है : डॉ. मल्लिका नड्डा

नई दिल्ली, 16 मार्च (एजेंसियां)। स्पेशल ओलंपिक वर्ल्ड विंटर गेम्स 2025 के अंतिम दिन, भारत ने भारतीय एथलीटों के कौशल और दृढ़ संकल्प का असाधारण प्रदर्शन देखा, जिन्होंने चार स्पर्धाओं में 12 पदक जीते, जिससे उसके कुल पदकों की संख्या 33 हो गई। स्नोशूइंग में, भारत ने पहले जीते गए छह पदकों में चार और पदक जोड़े। वासु तिवारी, शालिनी चौहान और तान्या ने 25 मीटर स्नोशूइंग स्पर्धा में रजत पदक जीता, जबकि जहांगीर ने इसी श्रेणी में कांस्य पदक जीतकर पदकों की संख्या में इजाफा किया। अल्पाइन स्कीइंग सेगमेंट में भी भारतीय एथलीटों ने शानदार प्रदर्शन किया। राधा देवी और निर्मला देवी ने इंटरमीडिएट स्लैलम (क्रमशः एफ01 और एफ 04 श्रेणियों) में रजत पदक जीते, जबकि अभिषेक कुमार ने नोविस स्लैलम (एम02 श्रेणी) में एक और रजत पदक जीता, जिससे टूर्नामेंट में भारत की सफलता मजबूत हुई।इस उपलब्धि के अलावा, आकृति ने क्रॉस कंट्री स्कीइंग में शानदार प्रदर्शन करते हुए 100 मीटर क्लासिकल टेक्नीक (एफ 02 श्रेणी) में कांस्य पदक हासिल किया। फ्लोरबॉल स्पर्धा में, भारत की महिला पारंपरिक टीम ने अपनी टीमवर्क और कौशल का प्रदर्शन किया, कांस्य पदक जीतकर स्पेशल ओलंपिक में एक अविश्वसनीय यात्रा का समापन किया। स्पेशल ओलंपिक भारत की अध्यक्ष डॉ. मल्लिका नड्डा ने एथलीटों पर गर्व व्यक्त करते हुए कहा कि हमारे एथलीटों ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि समर्पण और दृढ़ता के साथ, वे जो हासिल कर सकते हैं उसकी कोई सीमा नहीं है। जीता गया प्रत्येक पदक उनकी कड़ी मेहनत और कोचों, परिवारों और पूरे स्पेशल ओलंपिक भारत परिवार के अटूट समर्थन का प्रमाण है। हमें उनकी उपलब्धियों पर अविश्वसनीय रूप से गर्व है और हम उनकी यात्रा को और अधिक ऊंचाइयों तक ले जाने में उनका समर्थन करना जारी रखेंगे। स्पेशल ओलंपिक वर्ल्ड विंटर गेम्स 2025 का समापन भारतीय दल द्वारा 8 स्वर्ण, 18 रजत और 7 कांस्य पदक सहित कुल 33 पदक जीतने के साथ हुआ। भारत ने स्नोशूइंग और अल्पाइन स्कीइंग में 10-10 पदक जीते, जबकि स्नोबोर्डिंग में 6 पदक आए।

युवराज की धमाकेदार पारी से इंडिया मास्टर्स आईएमएल के फाइनल में

रायपुर, 16 मार्च (एजेंसियां)। युवराज सिंह की 30 गेंदों पर खेली गई 59 रनों की तूफानी पारी की बदौलत इंडिया मास्टर्स ने ऑस्ट्रेलिया मास्टर्स को 94 रनों से हराकर पहली इंटरनेशनल मास्टर्स लीग (आईएमएल) 2025 के फाइनल में जगह बना ली है। इस शानदार जीत ने न केवल इंडिया मास्टर्स के दबदबे को मजबूत किया है, बल्कि रविवार को शहीद वीर नारायण सिंह इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में वेस्टइंडीज मास्टर्स के खिलाफ होने वाले रोमांचक फाइनल मुकाबले के लिए भी मंच तैयार कर दिया है। बल्लेबाजी में सचिन तेंदुलकर (156) और युवराज सिंह (166) ने इंडिया मास्टर्स के अभियान में अहम भूमिका निभाई है, जबकि गेंदबाजी में पवन नेगी (8 विकेट), इरफान पठान (6 विकेट) और स्टुअर्ट बिन्नी (6 विकेट) ने शानदार प्रदर्शन किया है। सेमीफ़ाइनल में उप-कप्तान युवराज सिंह ने अपनी अर्धशतकीय पारी में सात छक्के लगाये जबकि कप्तान सचिन तेंदुलकर ने 30 गेंदों पर 42 रन बनाकर पारी को संभाला। यूसुफ़ पठान और स्टुअर्ट बिन्नी की शानदार पारियों की बदौलत भारत ने सात विकेट पर 220 रन का चुनौतीपूर्ण स्कोर बनाया। गेंदबाज़ी के मोर्चे पर, शाहबाज़ नदीम के सनसनीखेज 4/15 ने ऑस्ट्रेलियाई लाइन-अप को हिलाकर रख दिया।

न्यूजीलैंड की महिला टीम ने श्रीलंका को सात विकेट से हराया

क्राइस्टचर्च, 16 मार्च (एजेंसियां)। गेंदबाजों के बेहतरीन प्रदर्शन के बाद कप्तान सूजी बेट्स (47) और ब्रुक हैलीडे (नाबाद 46) की शानदार बल्लेबाजी की बदौलत न्यूजीलैंड की महिला टीम ने रविवार को दूसरे टी-20 मुकाबले में श्रीलंका को नौ गेंदे शेष रहते सात विकेट से हरा दिया। इसी के साथ न्यूजीलैंड ने तीन मैचों की सीरीज में 1-1 से बराबरी कर ली हैं।

114 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी न्यूजीलैंड की महिला टीम की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसने दूसरे ही ओवर में उसने जॉर्जिया प्लिमर (चार) का विकेट गवां दिया। इसके बाद एम्मा मैकलियोड (11)रन बनाकर पवेलियन लौट गई। ब्रुक हैलीडे ने कप्तान सूजी बेट्स के साथ पारी को संभाला। दोनों बल्लेबाजों ने तीसरे विकेट के लिए 43 रन जोड़े। 15वें ओवर में इनोशी प्रियदर्शनी फर्नांडो ने सूजी बेट्स (46) रन बनाकर आउट कर श्रीलंका को तीसरी सफलता दिलाई। हालांकि तक तक न्यूजीलैंड जीत के द्वार तक पहुंच चुकी थी। न्यूजीलैंड ने 18.3 ओवर में तीन विकेट पर 117 रन बनाकर मुकाबला सात विकेट से जीत लिया। ब्रुक हैलीडे (46) और इजी शार्प (आठ)रन बनाकर नाबाद रही। श्रीलंका की ओर से इनोशी प्रियदर्शनी फर्नांडो, सुगंधिका कुमारी और अचिनी कुलसुरिया ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।इससे पहले आज यहां न्यूजीलैंड की महिला टीम ने टॉस जीतकर पहले क्षेत्ररक्षण का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी श्रीलंका की शुरुआत अच्छी नहीं रही है और उसने पहले ही ओवर में विशमी गुणरत्ने (शून्य) का विकेट गवां दिया। इसके बाद इसके बाद श्रीलंका अंतराल पर अपने तीन और विकेट जल्द ही गवां दिये। हर्षिता समरविक्रमा (11), चामरी अट्टपटू (23) और कविशा दिलहारी (12) रन बनाकर आउट हुई। एक समय श्रीलंका ने 53 स्कोर पर अपने चार विकेट गवां कर संकट में थी। ऐसे समय में मनुडी नानायक्कारा और नीलक्षिका सिल्वा ने पारी को संभालने का प्रयास किया।

■ न्यूजीलैंड ने 18.3 ओवर में तीन विकेट पर 117 रन बनाकर मुकाबला सात विकेट से जीत लिया

सार संक्षेप

बाला देवी की हैट्रिक से श्रीभूमि एफसी ने सेतु एफसी को हराया

बैरकपुर। भारत की अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी नगांगोम बाला देवी की हैट्रिक की बदौलत मेजबान श्रीभूमि एफसी ने रविवार को बिभूति भूषण स्टेडियम में इंडियन विमेंस लीग 2024-25 में सेतु एफसी को 3-2 से हराकर पूरे अंक हासिल किए। बाला देवी की क्लास और अनुभव का पूरा प्रदर्शन देखने को मिला, क्योंकि इस तेजतर्रार स्ट्राइकर ने 39वें, 49वें (पेनल्टी) और 65वें मिनट में विजेता टीम के लिए गोल किये, जबकि सेतु ने 37वें मिनट में हदीजा नंदगो के जरिए गोल करके टीम को बढ़त दिलाई। लिशाम बबीना देवी ने 88वें मिनट में मेहमान टीम के लिए एक गोल किया, लेकिन यह मैच का रुख बदलने के लिए काफी नहीं था। इस जीत से श्रीभूमि एफसी के आठ मैचों में 12 अंक हो गए हैं और वह तालिका में तीसरे स्थान पर पहुंच गई है, जबकि सेतु के आठ मैचों में 10 अंक हैं। पहले 30 मिनट पूरी तरह से घरेलू टीम के नाम रहे। श्रीभूमि ने इस तरह से आक्रामक खेल दिखाया कि सेथु वास्तव में भाग्यशाली रहे कि वे मुकाबले की शुरुआत में कुछ गोल से पीछे नहीं रहे।

ऑल इंग्लैंड बैडमिंटन चैंपियनशिप के फाइनल में पहुंचे यूशी

बीजिंग। चीन के पुरुष एकल के शीर्ष वरीयता प्राप्त खिलाड़ी श्यी यूशी ने 15 मार्च को अपने साथी ली शिफेंग को तीन सेटों में हराया और चौथी बार ऑल इंग्लैंड ओपन के फाइनल में पहुंचे। वह 2023 में ऑल इंग्लैंड फ़ाइनल और एशियन गेम्स फ़ाइनल में ली शिफेंग से हार गए थे, लेकिन उसके बाद 29 वर्षीय श्यी यूशी अपने से चार साल छोटे हमवतन के खिलाफ तीन बार कोर्ट में उतरे हैं और जीत हासिल की है। मैच के बाद श्यी यूशी ने कहा कि उस दिन के खेल के आखिरी दो गेम बहुत तीव्र थे। अत्यधिक शारीरिक थकावट के कारण अंत में दोनों ने अधिक गलतियां कीं। महिला एकल का फाइनल दक्षिण कोरिया की शीर्ष वरीयता प्राप्त एन से-यंग और चीन की दूसरी वरीयता प्राप्त वांग जयी के बीच होगा।

चीनी फुटबॉल टीम ने एक वॉर्मअप मैच में कुवैत की टीम को 3-1 से हराया

■ चीन, सउदी अरब, बहरीन और इंडोनेशिया के पास छह-छह अंक हैं

बीजिंग, 16 मार्च (एजेंसियां)। संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के दुबई में वर्ष 2026 विश्व कप के एशियाई क्षेत्र की क्वालीफाइंग प्रतियोगिता के टॉप-18 के दौर की तैयारी कर रही चीनी पुरुष फुटबॉल टीम ने 15 मार्च को एक वॉर्मअप मैच में कुवैत की टीम को 3-1 से हरा दिया। चीनी टीम 20 मार्च को टॉप-18 प्रतियोगिता के सी ग्रुप के सातवें दौर में विदेशी मैदान के मैच में सउदी अरब के साथ मुकाबला करेगी। सी ग्रुप में अब जापान 16 अंकों के साथ पहले और ऑस्ट्रेलिया सात अंकों के साथ दूसरे स्थान पर है। चीन, सउदी अरब, बहरीन और इंडोनेशिया के पास छह-छह अंक हैं। कुवैत बी ग्रुप में अस्थाई तौर पर पांचवें स्थान पर है।

इस टीम की शैली सउदी अरब से मिलती-जुलती है। वॉर्मअप मैच के पहले हाफ में चीनी टीम ने आसानी से 3-0 की बढ़त बनाई। दूसरे हाफ में कुवैत की टीम ने एक गोल कर अंतर कम किया। चीनी टीम 17 मार्च को दुबई से रियाद रवाना होगी और अंतिम दौर की तैयारी करेगी।

इंग्लैंड के जोशुआ बेरी ने प्लेऑफ में जीता कोलकाता चैलेंज

कोलकाता, 16 मार्च (एजेंसियां)। उन्नीस वर्षीय अंग्रेज जोशुआ बेरी ने प्रतिष्ठित रॉयल कलकत्ता गोल्फ क्लब (आरसीजीसी) में खेले गए होटलप्लानर टूर और पीजीटीआई संयुक्त स्वीकृत इवेंट, 300,000 डॉलर के कोलकाता चैलेंज 2025 में खिताब के साथ शानदार सप्ताह का समापन किया। जोशुआ बेरी (72-62-70-73), जिन्होंने पहले राउंड दो में 10-अंडर 62 का कोर्स रिकॉर्ड बनाया था, ने आखिरी दिन रेगुलेशन प्ले में एक ओवर 73 का साधारण स्कोर बनाया और तीन अन्य खिलाड़ियों, नॉर्वे के एंड्रियास हल्वोर्सन (69-66-71-71), ऑस्ट्रिया के लुकास नेमेज (67-70-68-72) और भारत के ओम प्रकाश चौहान (66-68-73-70) के साथ कुल 11-अंडर 277 का स्कोर बनाया। चारों खिलाड़ी प्लेऑफ में पहुंचे, जहां जोशुआ ने दूसरे अतिरिक्त होल पर नाटकीय 19-फीट बर्डी रूपांतरण के साथ जीत हासिल की। इस प्रकार हल्वोर्सन, नेमेज और चौहान की तिकड़ी संयुक्त उपविजेता रही। चौहान, जो पूरे दिन अपने शॉर्ट पट से जूझते रहे, पहले प्लेऑफ होल पर तीन-फुटर से बराबरी करने से चूक गए, जबकि हल्वोर्सन और नेमेज दूसरे प्लेऑफ होल पर बेरी से हार गए। ओम प्रकाश चौहान के दूसरे स्थान पर रहने से उन्हें 20,64,000 रुपये का चेक मिला, जिससे वे पीजीटीआई ऑर्डर ऑफ मेरिट 2025 में 41 पायदान ऊपर तीसरे स्थान पर पहुंच गए। एक शॉट से ओवरनाइट लीडर रहे किशोर जोशुआ बेरी ने दिन की धीमी शुरुआत की, क्योंकि उन्होंने फ्रंट-नाइन पर दो बोगी मारी। इसके बाद जोशुआ ने 15वें होल पर एक महत्वपूर्ण टैप-इन बर्डी बनाकर प्रतिस्पर्धा में प्रवेश किया।

■ चारों खिलाड़ी प्लेऑफ में पहुंचे, जहां जोशुआ ने दूसरे अतिरिक्त होल पर नाटकीय 19-फीट बर्डी रूपांतरण के साथ जीत हासिल की

अवनी 65 का कार्ड खेलकर ऑस्ट्रेलिया में संयुक्त 13वें स्थान पर रहीं

काफ्स हार्बर (ऑस्ट्रेलिया), 16 मार्च (एजेंसियां) अवनी प्रशांत ने ऑस्ट्रेलियाई महिला क्लासिक के अंतिम दौर में शानदार 5-अंडर 65 का स्कोर बनाया और लेडीज यूरोपीय टूर पर अपने पहले सीजन में शीर्ष 15 में जगह बनाई। पहले 72-70 के स्कोर के साथ उनका कुल स्कोर 3-अंडर 207 रहा और वे विजेता मैनन डी रोए से छह शॉट पीछे रहीं, जिन्होंने अंतिम होल में बर्डी करके कारा गेनर को पछाड़कर खिताब अपने नाम किया। कट में जगह बनाने वाली दूसरी भारतीय प्रणवी उर्स ने 72 का स्कोर बनाया और संयुक्त 65वें स्थान पर रहीं। दीक्षा डागर कट से चूक गईं। अवनी ने दसवें होल से शुरुआत की और 10वें, 12वें, 14वें, 17वें और 18वें होल में बर्डी की। उसने दूसरे दिन छठा शॉट लगाया और 6-अंडर पर थी तथा शीर्ष-10 में पहुंचने की ओर अग्रसर थी। तभी उसने तीसरे और पांचवें शॉट पर शॉट छोड़े लेकिन सातवें पर अंतिम शॉट लिया।

■ अवनी ने दसवें होल से शुरुआत की और 10वें, 12वें, 14वें, 17वें और 18वें होल में बर्डी की।

मांडविया ने अहमदाबाद में 'फिट इंडिया संडे ऑन साइकिल' की अगुवाई की

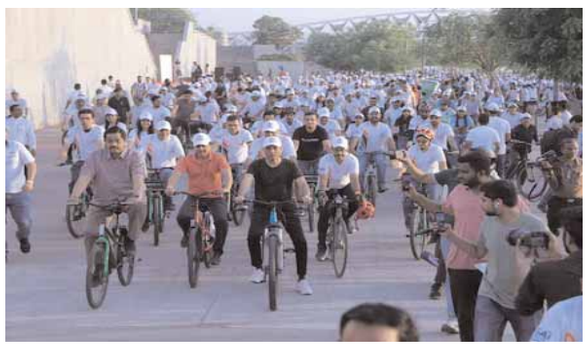

■ चीन और अमेरिका के बाद भारत में मोटापे के मामले दुनिया में तीसरे सबसे ज्यादा हैं :डॉ. मनसुख मांडविया

■ हमारे देश के विकास के लिए फिट रहना बहुत जरूरी है

नई दिल्ली, 16 मार्च (एजेंसियां)। केन्द्र सरकार की फिटनेस को लेकर चलाई जा रही मुहिम के तहत रविवार को देश भर में 25 जगहों पर आयोजित 'फिट इंडिया संडे ऑफ साइकिल' कार्यक्रम में लोगों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। केंद्रीय खेल मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने भी अहमदाबाद में साबरमती रिवरफ्रंट पर कार्यक्रम की अगुवाई की।

भारतीय खेल विकास प्राधिकरण (साई) के गांधीनगर केन्द्र द्वारा आज आयोजित इस कार्यक्रम में करीब 650 साइकिल चालकों ने भागीदारी की। इनमें इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आईएमए) गुजरात, अहमदाबाद मेडिकल एसोसिएशन के सदस्य और सांसद हसमुखभाई पटेल और दिनेशभाई मकवाना शामिल थे। पैरालंपियन एथलीट भावना चौधरी ने हरी झंडी दिखाकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस दौरान राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के मेजर ध्यानचंद नेशनल स्टेडियम में गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड धारक रोहताश चौधरी ने इस कार्यक्रम में भाग ले रहे प्रतिभागियों को प्रेरित किया। रोहताश चौधरी को पुश-अप मैन ऑफ इंडिया के नाम से भी जाना जाता है। इस साइकिलिंग कार्यक्रम में इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आईएमए) के चिकित्सकों, स्कूल और कॉलेज के छात्रों, योगासन भारत के सदस्यों और कॉर्पोरेट पेशेवरों सहित 500 साइकिल चालक शामिल हुए। इस अवसर पर रोहताश ने कहा कि संडे ऑन साइकिल फिट इंडिया द्वारा एक बेहतरीन पहल है। इसको लेकर प्रतिभागियों में उत्साह है मैं सभी से, विशेषकर युवाओं से, सिर्फ रविवार को ही नहीं बल्कि प्रतिदिन साइकिल चलाने का आग्रह करता हूं। उन्होंने फिटनेस की जरूरत पर बल देते हुए कहा चीन और अमेरिका के बाद भारत में मोटापे के मामले दुनिया में तीसरे सबसे ज्यादा हैं।

रूण ने मेदवेदेव को हराकर चौथी बार एटीपी मास्टर्स 1000 के फाइनल में प्रवेश किया

इंडियन वेल्स, 16 मार्च (एजेंसियां)। होल्गर रूण ने इंडियन वेल्स ओपन में दो बार के उपविजेता दानिल मेदवेदेव को हराकर सेमीफाइनल में अपनी सात मैचों की हार का सिलसिला तोड़ दिया और चौथी बार एटीपी मास्टर्स 1000 के फाइनल में पहुंच गए। 21 वर्षीय डेन ने मेदवेदेव को 7-5, 6-4 से हराकर शानदार प्रदर्शन किया और पिछले साल जनवरी में ब्रिसबेन के बाद से अपने पहले टूर-लेवल फाइनल में पहुंचे। रूण ने कहा कि काम अभी खत्म नहीं हुआ है, लेकिन यह अद्भुत लगता है। टूर पर दानिल के साथ खेलना मेरे लिए सबसे कठिन चुनौतियों में से एक है। मैं पहली बार उसे हराने में कामयाब रहा, लेकिन हम एक-दूसरे को अच्छी तरह से जानते हैं। जाहिर है कि मेरे पास सही रणनीति थी, लेकिन यह अभी भी बहुत मुश्किल था क्योंकि वह बहुत प्रयास करता है और बहुत मजबूत है। इसलिए, मुझे खुद पर बहुत गर्व है। उन्होंने कहा कि यह सही गति खोजने के बारे में है, और सौभाग्य से मेरे पास अच्छा लेग वर्क है, इसलिए मैं कई गेंदों तक पहुंच सकता हूं। यह एक बहुत ही विशिष्ट सामरिक योजना है जिसे मैंने कल शाम और आज सुबह अपने कोच के साथ बनाया है। यह सही गति खोजने और कौन से शॉट मारने हैं, इसके बारे में है, क्योंकि बहुत से खिलाड़ी दानिल के खिलाफ बहुत सारे शॉट चूक जाते हैं। वह आपको और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है, इसलिए मुझे बहुत गर्व है कि मैं सही लय पाने में कामयाब रहा।

34वीं राष्ट्रीय सबजूनियर कबड्डी चैम्पियनशिप 27 मार्च से गया में

पटना। एमेच्योर कबड्डी फेडरेशन ऑफ इंडिया के तत्वावधान में बिहार राज्य कबड्डी संघ और गया जिला कबड्डी संघ की मेजबानी में 27 से 30 मार्च तक गया के जीडी गोयनका पब्लिक स्कूल परिसर में 34वीं राष्ट्रीय सबजूनियर (बालक एवं बालिका) कबड्डी चैंपियनशिप का आयोजन किया जायेगा। बिहार राज्य कबड्डी संघ के चेयरमैन कुमार विजय सिंह ने बताया कि इस प्रतियोगिता के सफल आयोजन के लिए एक आयोजन समिति का गठन किया गया, जिसके आयोजन अध्यक्ष जीडी गोयनका पब्लिक स्कूल के चेयरमैन रवींद्र सिंह राठौर होंगे, जबकि आयोजन सचिव आनंद शंकर तिवारी एवं संयोजक जितेंद्र कुमार होंगे। उन्होंने बताया कि इस प्रतियोगिता में देशभर से भारतीय खेल प्राधिकरण समेत कुल 58 टीमें दोनों वर्गों में भाग लेगी।

[अर्थ जगत]

सर्वाधिक बढ़ने वाले शेयर

एसबीआई	0.67 प्रतिशत
आईसीआईसीआई बैंक	0.62 प्रतिशत
एनटीपीसी	0.48 प्रतिशत
सन फार्मा	0.45 प्रतिशत
टाटा स्टील	0.37 प्रतिशत

सर्वाधिक घटने वाले शेयर

जोमैटो	1.97 प्रतिशत
टाटा मोटर्स	1.95 प्रतिशत
इंडसइंड बैंक	1.84 प्रतिशत
एशियन पेंट	0.98 प्रतिशत
बजाज फाइनेंस	0.94 प्रतिशत

सर्राफा

सोना (प्रति दस ग्राम)स्टैंडर्ड	88,003
बिटुर	47,320
गिन्नी (प्रति आठ ग्राम)	39,795
चांदी (प्रति किलो) टंच हाजिर	1,02,000
वायदा	70,857
चांदी सिक्का लिवाली	900
बिकवाली	880

मुद्रा विनिमय

मुद्रा	क्रय	विक्रय
अमेरिकी डॉलर	87. 33	87.40
पौंड स्टर्लिंग	106.21	106.45
यूरो	88.45	88.78
चीन युआन	08.24	13.38

अनाज

देसी गेहूँ एमपी	2400-3000
गेहूं दड़ा	3100-3200
आटा	2800-2900
मैदा	2900-2950
चोकर	2000-2100

मोटा आनाज

बाजरा	1300-1305
मक्का	1350-1500
ज्वार	3100-3200
जौ	1430-1440
काबुली चना	3500-4000

शुगर

चीनी एस	4280-4380
चीनी एम	4280-4380
मिल डिलीवरी	3620-3720
गुड़	4250-4350

दाल-दलहन

चना	5700-5800
दाल चना	6700-6800
मसूर काली	7300-7400
उड़द दाल	9200-9300
मूंग दाल	9250-9350
अरहर दाल	8400-8500

पेट्रोल और डीजल की कीमतें अपरिवर्तित

नई दिल्ली। अंतराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में तेजी जारी रहने के बावजूद घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल के दाम अपरिवर्तित रहे, जिससे दिल्ली में पेट्रोल 94.72 रुपए प्रति लीटर तथा डीजल 87.62 रुपए प्रति लीटर पर पड़े रहे। तेल विपणन करने वाली प्रमुख कंपनी हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन की वेबसाइट पर जारी दरों के अनुसार, देश में आज पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली में इनकी कीमतों के यथावत रहने के साथ ही मुंबई में पेट्रोल 104.21 रुपए प्रति लीटर पर और डीजल 92.15 रुपए प्रति लीटर पर रहा।

तेजी से बढ़ रहा भारत का डिफेंस सेक्टर, बनेगा ग्लोबल पावरहाउस : नुवामा

- पिछले एक दशक में 31 गुना बढ़ा भारत का डिफेंस सेक्टर
- सरकार ने वर्ष 29 के लिए 50 हजार करोड़ रुपए के निर्यात का रखा लक्ष्य

नई दिल्ली, 16 मार्च (एजेंसियां)। भारत की डिफेंस इंडस्ट्री तेजी से आगे बढ़ रही है और देश आने वाले समय में इस सेक्टर में ग्लोबल पावरहाउस के रूप में उभरेगा। वित्त वर्ष 24 में देश का डिफेंस एक्सपोर्ट 21,083 करोड़ रुपए रहा, जो कि इससे पिछले वित्त वर्ष में 15,920 करोड़ रुपए था। इसमें सालाना आधार पर 32.5 प्रतिशत का इजाफा देखने को मिला। यह जानकारी एक रिपोर्ट में दी गई।

नुवामा रिपोर्ट के अनुसार, पिछले एक दशक में भारत का डिफेंस सेक्टर 31 गुना बढ़ गया है, जिससे वैश्विक बाजार में इसकी स्थिति मजबूत हुई है और अंतरराष्ट्रीय मांग में वृद्धि हुई है। रिपोर्ट में आगे कहा गया कि भारत सरकार ने वित्त वर्ष 29 के लिए 50 हजार करोड़ रुपए के निर्यात का लक्ष्य

> वित्त वर्ष 26 की पहली छमाही में यूरोपीय डिफेंस ऑर्डर की पहली लहर भारत में देखने को मिलेगी : नुवामा

रखा है, जो कि दर्शाता है कि आने वाले समय में सेक्टर मजबूत रहेगा। अकेले वित्त वर्ष 2025 में निर्यात 20,300 करोड़ रुपए तक पहुंचने का अनुमान है, जिससे अंतरराष्ट्रीय डिफेंस सप्लाई चेन में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में भारत की स्थिति मजबूत होगी। इस वृद्धि के लिए सबसे बड़ा कारण यूरोप से बढ़ती मांग है। यूरोपीय देशों में विनिर्माण बाधाओं और कार्यबल की कमी के कारण भारत डिफेंस उपकरणों के एक भरोसेमंद आपूर्तिकर्ता के रूप में उभर रहा है। रिपोर्ट में बताया गया कि वित्त वर्ष 26 की पहली छमाही में यूरोपीय डिफेंस ऑर्डर की पहली लहर भारत में देखने को मिलेगी।

भारत 2028 तक बनेगा दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था : मॉर्गन

नई दिल्ली। भारत 2028 तक दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है, जो जर्मनी को पीछे छोड़ देगा। यह दावा वैश्विक वित्तीय सेवा कंपनी मॉर्गन स्टेनली की एक रिपोर्ट में किया गया है। रिपोर्ट के अनुसार भारत का सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) 2026 तक 4.7 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है। 2028 तक यह 5.7 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच जाएगा, जिससे भारत जर्मनी को पीछे छोड़ते हुए तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। यह असाधारण वृद्धि संयोग नहीं, बल्कि वर्षों की दूरदृष्टि और साहसिक आर्थिक सुधारों का परिणाम है। जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सत्ता संभाली, तब उन्होंने देश के कायाकल्प के लिए एक मजबूत दिशा तय की थी। प्रधानमंत्री मोदी द्वारा शुरू मेक इन इंडिया और डिजिटल इंडिया जैसे अभियानों ने औद्योगिक नवाचार की एक लहर को जन्म दिया, जिसने गांवों को विनिर्माण केंद्र और शहरों को समृद्ध आर्थिक केंद्रों में बदल दिया। इन पहलों से न केवल उद्योगों में वृद्धि हुई, बल्कि भारत को एक डिजिटल महाशक्ति बनने की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया गया।

डिजिटल प्रतिस्पर्धा विधेयक लाने की तैयारी में सरकार : हर्ष मल्होत्रा

- छोटे व्यापारियों को मिलेंगे समान अवसर

नई दिल्ली, 16 मार्च (एजेंसियां)। केंद्रीय कारपोरेट कार्य मंत्रालय और सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय में राज्य मंत्री हर्ष मल्होत्रा ने रविवार को कहा कि सरकार छोटे व्यापारियों को समान अवसर उपलब्ध कराने के लिए लगातार काम कर रही है। इसके लिए डिजिटल प्रतिस्पर्धा विधेयक का ड्राफ्ट भी तैयार हो चुका है।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि भारत के कारोबार में सूक्ष्म, लघु और मध्यम (एमएसएमई) सेक्टर का बहुत बड़ा योगदान है और देश के ट्रेड और मैन्युफैक्चरिंग में एमएसएमई की हिस्सेदारी 80 प्रतिशत, निर्यात में 45 प्रतिशत और जीडीपी में 30 प्रतिशत है। इस वजह से सरकार का फोकस एमएसएमई सेक्टर पर बना हुआ है।

नई दिल्ली में एक कार्यक्रम में लोगों को संबोधित करते हुए मल्होत्रा ने कहा कि आज का समय काफी बदल गया है। प्रतिस्पर्द्धा केवल स्थानीय स्तर पर ही नहीं रह गया है, बल्कि वैश्विक स्तर पर पहुंच गया है। इस वजह से प्रतिस्पर्द्धा कमीशन ऑफ इंडिया (सीसीआई) की भूमिका काफी अहम हो गई है और हमारी जिम्मेदारी है कि अपने कानूनों को फेयर प्रैक्टिस के मुताबिक ही बनाए और लागू करें।

उन्होंने आगे कहा कि सीसीआई की जिम्मेदारी बाजार में गैर-प्रतिस्पर्धी प्रथाओं को रोकने के साथ छोटे और नए उद्योगों के लिए ऐसा माहौल तैयार करना है, जिससे सभी को समान अवसर मिले। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि हमारे रेगुलेशन पहले के मुकाबले काफी प्रभावी हुए हैं और बाजार में किसी एक कंपनी के प्रभाव को रोकते हैं। मल्होत्रा ने कहा कि 2023 में सरकार ने प्रतिस्पर्द्धा एक्ट में बदलाव किए हैं, जो कि पूरी तरह से किसी एक कंपनी के बाजार पर प्रभाव को रोकने में सक्षम हैं, लेकिन डिजिटल कंपटीशन बिल समय की आवश्यकता है। उन्होंने आगे कहा कि डिजिटल प्रतिस्पर्द्धा बिल का ड्राफ्ट मंत्रालय की वेबसाइट पर है। इस पर 100 से ज्यादा सुझाव आ चुके हैं।

2025 में जारी रहेगी सोने के दाम में तेजी : रिपोर्ट

नई दिल्ली, 16 मार्च (एजेंसियां)। केंद्रीय बैंकों और गोल्ड एक्सचेंज ट्रेडेड फंड (ईटीएफ) की खरीद के कारण 2025 में सोने की कीमतों में तेजी जारी रहेगी। यह जानकारी एक रिपोर्ट में दी गई।

मोतीलाल ओसवाल प्राइवेट वेल्थ रिपोर्ट में बताया गया कि भू-राजनीतिक तनाव और आर्थिक अनिश्चितताओं के कारण सोने की कीमतों में बढ़ोतरी होने की उम्मीद है। वहीं, केंद्रीय बैंकों की खरीद सोने के मार्केट को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

रिपोर्ट में कहा गया कि 2024 में सोना भारत में सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाला एसेट क्लास था। इसने सालाना आधार पर 21 प्रतिशत का रिटर्न दिया है। भारतीय बाजारों में सोने में मजबूत निवेश देखने को मिला है। 2024 में देश में गोल्ड ईटीएफ में 112 अरब रुपए का निवेश हुआ और गोल्ड होल्डिंग में 15 टन का इजाफा हुआ, जिसके कारण वर्ष के अंत में कुल गोल्ड होल्डिंग बढ़कर 57.8 टन हो गई है। रिपोर्ट में कहा गया कि रिटेल और संस्थागत निवेशकों दोनों से मजबूत मांग देखने को मिल रही है। आरबीआई ने 2024 में भी सोने की खरीद को जारी रखा।

एफआईआई की बिकवाली में आई कमी

- अगली तिमाही से सुधार होने की उम्मीद

नई दिल्ली, 16 मार्च (एजेंसियां)। एफआईआई की बिकवाली मार्च की शुरुआत से जारी है, लेकिन इसमें धीमापन आया है। इसकी वजह शेयर बाजार में वैल्यूएशन का तर्कसंगत होना है। यह जानकारी एक्सपर्ट्स की ओर से दी गई। इस महीने (14 मार्च) तक एफआईआई द्वारा 30,015 करोड़ रुपए की इक्विटी की बिकवाली की गई है।

विदेशी निवेशकों द्वारा कैलेंडर वर्ष 2025 अब तक कुल 1,42,616 करोड़ रुपये की इक्विटी की बिक्री की गई है।

बाजार के जानकारों ने कहा कि डेट कैटेगरी में एफआईआई मार्च में अब तक शुद्ध खरीदार रहे हैं। इस महीने अब तक डेट में विदेशी निवेशकों द्वारा 7,029 करोड़ रुपए का निवेश किया गया है। डेट में निवेश बढ़ने की वजह अमेरिका और अन्य देशों के बीच ट्रेड वार का शुरू होना है, जिससे वैश्विक अस्थिरता बढ़ गई है। इस कारण लोग अधिक पैसा सुरक्षित संपत्तियों जैसे गोल्ड और डॉलर में निवेश कर रहे हैं।

केनरा रोबेको म्यूचुअल फंड के इक्विटी प्रमुख श्रीदत्त भंडवालदार के अनुसार, पिछले तीन महीनों में एफआईआई भारतीय इक्विटी बाजार में विक्रेता रहे हैं, और उन्होंने 15-20 अरब डॉलर की निकासी की है। उन्होंने कहा कि अगली तिमाही में एफआईआई इफ्लो स्थिर होने की संभावना है और समय के साथ ये सकारात्मक हो जाएंगे।

भंडवालदार ने आगे कहा कि हालांकि ऐसा होने के लिए हमारी आय को मौजूदा स्तरों से पर्याप्त सुधार दिखाने की आवश्यकता होगी।

निफ्टी सूचकांक का मूल्यांकन पहले से ही एक वर्ष की अग्रिम आय के लिए 10 वर्ष के औसत से नीचे है।

बीते हफ्ते भारतीय शेयर बाजार सीमित दायरे में रहा और हल्की गिरावट के साथ बंद हुआ। इसकी वजह वैश्विक स्तर पर मिले-जुले संकेत होना था।

रेलिगेयर में रिसर्च के एसवीपी, अजित मिश्रा ने कहा कि साप्ताहिक आधार पर बाजार एक सीमित रेंज में रहा और हल्की गिरावट के साथ बंद हुआ। बड़े शेयरों में बिकवाली के कारण निफ्टी 22,397.20 पर बंद हुआ। बीते हफ्ते बैंकिंग को छोड़कर बाकी सभी इंडेक्स लाल निशान में बंद हुए हैं।

सार संक्षेप

विदेशी मुद्रा भंडार बढ़ोतरी लेकर 653.9 अरब डॉलर पर

मुंबई। विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति, स्वर्ण भंडार, विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के पास आरक्षित निधि में भारी बढ़ोतरी होने से 07 मार्च को समाप्त सप्ताह में देश का विदेशी मुद्रा भंडार पिछले सप्ताह की गिरावट से उबरा और 15.3 अरब डॉलर के रिकॉर्ड इजाफे के साथ 653.9 अरब डॉलर पर पहुंच गया। वहीं, इसके पिछले सप्ताह देश का विदेशी मुद्रा भंडार 1.8 अरब डॉलर घटकर 638.7 अरब डॉलर पर रहा था। रिजर्व बैंक की ओर से जारी साप्ताहिक आंकड़े के अनुसार 7 मार्च को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार के सबसे बड़े घटक विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति 13.9 अरब डॉलर की बढ़ोतरी लेकर 557.3 अरब डॉलर पर पहुंच गई। इस अवधि में स्वर्ण भंडार 1.1 अरब डॉलर उछलकर 74.33 अरब डॉलर हो गया। इसी तरह आलोच्य सप्ताह विशेष आहरण अधिकार 21.2 करोड़ डॉलर बढ़कर 18.2 अरब डॉलर हो गया।

नवी मुंबई एयरपोर्ट का जून में होगा उद्घाटन

मुंबई। अडानी ग्रुप के चेयरमैन गौतम अडानी ने रविवार को कहा कि नवी मुंबई इंटरनेशनल एयरपोर्ट का उद्घाटन जून में किया जाएगा और यह कनेक्टिविटी और ग्रोथ को फिर से परिभाषित करेगा। अरबपति उद्योगपति ने नवी मुंबई इंटरनेशनल एयरपोर्ट लिमिटेड (एनएमआईएएल) साइट का दौरा किया और इसके साथ प्रोजेक्ट से जुड़ी टीमों से मुलाकात की। साथ ही अपने सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर एक शॉर्ट वीडियो फिल्म साझा करते हुए कहा कि आगामी एयरपोर्ट भारत के लिए एक सच्चा तोहफा है। गौतम अडानी ने पोस्ट में लिखा कि आज नवी मुंबई इंटरनेशनल एयरपोर्ट लिमिटेड की साइट का दौरा किया और यहां एक नया वर्ल्ड क्लास एयरपोर्ट आकार ले रहा है। अडानी ग्रुप के चेयरपर्सन ने कहा नया एयरपोर्ट जून में उद्घाटन के लिए तैयार है और कनेक्टिविटी और ग्रोथ को फिर से परिभाषित करेगा।

अडानी ग्रीन एनर्जी नेट वाटर पॉजिटिव बनने के लिए प्रतिबद्ध

अहमदाबाद। देश की सबसे बड़ी रिन्यूएबल एनर्जी कंपनी अडानी ग्रीन एनर्जी ने रविवार को कहा कि वह वित्त वर्ष 2025-26 में नेट वाटर पॉजिटिव होने के लिए प्रतिबद्ध है। इसके लिए कंपनी साफ पानी की अपनी खपत को घटाएगी और पानी के पुनर्चक्रण पर जोर देगी। कंपनी वित्त वर्ष 2022-23 में ही 200 मेगावाट से अधिक क्षमता वाले परिचालन स्थानों पर पहले ही नेट वाटर पॉजिटिव बन चुकी है और उसका लक्ष्य सभी आगामी प्रोजेक्ट्स पर सौर मॉड्यूल की सफाई के लिए मीठे पानी का उपयोग बंद करने के लिए रोबोटिक सफाई को लागू करना है। नवीकरणीय ऊर्जा सेक्टर में सौर पैनल रखरखाव जैसे कार्यों के लिए पानी की काफी आवश्यकता होती है। 12.5 गीगावाट से अधिक परिचालन परिसंपत्तियों वाली देश की सबसे बड़ी नवीकरणीय ऊर्जा कंपनी अडानी ग्रीन एनर्जी जल प्रबंधन में अग्रणी है।

फेड रिजर्व के निर्णय पर रहेगी बाजार की नजर

-साप्ताहिक समीक्षा-

- सेंसेक्स 0.7 प्रतिशत की गिरावट लेकर सप्ताहांत पर 73828.91 अंक पर
- निफ्टी 155.3 अंक यानी 0.7 प्रतिशत उतरकर 22397.20 पर रहा

मुंबई, 16 मार्च (एजेंसियां)। देश में इस वर्ष फरवरी में खुदरा महंगाई में नरमी आने के बावजूद अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के टैरिफ लगाने से व्यापार युद्ध छिड़ने की चिंता में हुई भारी बिकवाली से बीते सप्ताह 0.7 फीसदी तक लुढ़के घरेलू शेयर बाजार की अगले सप्ताह फेडरल रिजर्व की मौद्रिक नीति समीक्षा बैठक के निर्णय के साथ ही चीन के आर्थिक आंकड़ों पर नजर रहेगी।

बीते सप्ताह बीएसई का तीस शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 503.67 अंक अर्थात 0.7 प्रतिशत की गिरावट लेकर सप्ताहांत पर 73828.91 अंक पर आ गया। इसी तरह नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 155.3 अंक यानी 0.7 प्रतिशत उतरकर 22397.20 अंक रह गया।

समीक्षाधीन सप्ताह में बीएसई की दिग्गज कंपनियों के मुकाबले मझौली और छोटी कंपनियों के शेयरों में अधिक बिकवाली हुई। इससे मिडकैप 825.47 अंक अर्थात 2.07 प्रतिशत कमजोर रहकर सप्ताहांत पर 39062.82 अंक पर बंद हुआ। इसी तरह स्मॉलकैप 1761.88 अंक यानी 3.9 प्रतिशत का गोता लगाकर 43844.98 अंक पर रहा।

विश्लेषकों के अनुसार, वैश्विक व्यापार युद्ध के बढ़ते प्रभाव ने बाजार की धारणा पर गहरा असर डाला है, जिससे अनिश्चितता बढ़ी है और सूचकांक सीमित दायरे में उतार-चढ़ाव कर रहे हैं।

हालांकि, घरेलू कारकों ने कुछ राहत प्रदान की है। भारतीय अर्थव्यवस्था ने मुद्रास्फीति में नरमी और मजबूत आर्थिक बुनियादी ढांचे के चलते सुधार के सकारात्मक संकेत दिखाए हैं। इस वर्ष फरवरी में खुदरा महंगाई अपेक्षा से अधिक घटी है, जिससे ब्याज दरों में कटौती की संभावनाएं बढ़ गई हैं। इसके अलावा जनवरी में औद्योगिक उत्पादन अनुमान से बेहतर रहा, जिससे बाजार की धारणा को बल मिला और गिरावट पर अंकुश लगा। वित्त वर्ष 2026 में बढ़ा हुआ सरकारी खर्च और उपभोक्ता आय में वृद्धि इस सुधार को समर्थन प्रदान कर सकते हैं। हालांकि, वैश्विक व्यापार की अनिश्चितताएं और अमेरिकी मंदी की आशंका घरेलू बाजार की गति को प्रभावित कर सकती हैं।

इसके बावजूद हाल के सुधारों के कारण मूल्यांकन में आई नरमी, कच्चे तेल की गिरती कीमतें, डॉलर इंडेक्स में नरमी और आगामी तिमाहियों में घरेलू आय में संभावित वृद्धि जैसे कारक अस्थिरता को सीमित कर सकते हैं और बाजार में स्थिरता लाने में सहायक हो सकते हैं।

अगले सप्ताह 18 और 19 मार्च को अमेरिकी फेडरल रिजर्व की ओपेन मार्केट कमेटी की द्विमासिक मौद्रित नीति समीक्षा बैठक होने वाली है। बैठक में ब्याज दरों को स्थिर रखने की व्यापक संभावना है। फेड अधिकारी किसी भी मौद्रिक नीति संबंधी कदम उठाने से पहले प्रतीक्षा कर रहे हैं ताकि यह स्पष्ट हो सके कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की आर्थिक नीतियां कैसे लागू होंगी और उनका अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ेगा।

यदि श्री ट्रंप के टैरिफ के कारण आर्थिक मंदी आती है तो फेड को संभावित रूप से रोजगार बाजार को समर्थन देने के लिए ब्याज दरों में कटौती करनी पड़ सकती है। वहीं, अगले सप्ताह चीन की खुदरा बिक्री और औद्योगिक उत्पादन के आंकड़े जारी होंगे, जो उसकी आर्थिक वृद्धि को लेकर स्पष्ट दृष्टिकोण देंगे। साथ ही निवेशक अमेरिकी खुदरा बिक्री और उत्पादन आंकड़ों पर भी कड़ी नजर बनाए रखेंगे। बीते सप्ताह शुक्रवार को होली पर अवकाश के कारण बाजार में चार दिन ही कारोबार हुआ, जिनमें से तीन दिन गिरावट और एक दिन घटबढ़ रहा।

साउथ कोरिया ने विदेशी मुद्रा भंडार में बिटकॉइन को शामिल करने से किया इनकार

सियोल, 16 मार्च (एजेंसियां) ।साउथ कोरियाई केंद्रीय बैंक ने बिटकॉइन की कीमतों में उतार-चढ़ाव के कारण, इसे विदेशी मुद्रा भंडार में शामिल करने से इनकार कर दिया है।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा इस महीने की शुरुआत में रणनीतिक बिटकॉइन रिजर्व और डिजिटल एसेट भंडार की स्थापना करने की घोषणा के बाद, साउथ कोरिया के रणनीतिक भंडार में क्रिप्टोकरेंसी को शामिल करने की संभावना के बारे में सांसदों के बीच चर्चा हुई है। माइनर रीबिल्डिंग कोरिया पार्टी के प्रतिनिधि चा ग्यू-ग्यून के एक प्रश्न के जवाब में बैंक ऑफ कोरिया (बीओके) ने कहा कि उसने विदेशी मुद्रा भंडार में बिटकॉइन को शामिल करने की संभावना पर न तो चर्चा की है और न ही इसकी समीक्षा की है और साथ ही कहा कि इस मामले में सतर्क दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है।

योनहाप समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, बीओके ने बिटकॉइन की कीमतों में अधिक उतार-चढ़ाव के कारण इसे विदेशी मुद्रा भंडार में शामिल नहीं किया है। केंद्रीय बैंक ने कहा कि क्रिप्टोकरेंसी में अस्थिरता के कारण इसको भुनाने के लिए लेनदेन की लागत में भारी वृद्धि हो सकती है। उन्होंने आगे कहा कि क्रिप्टोकरेंसी अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) द्वारा निर्धारित विदेशी मुद्रा भंडार के मानदंडों को भी पूरा नहीं करती हैं, जिसमें तरलता,बाजार मूल्य और क्रेडिट रेटिंग शामिल है। इस महीने की शुरुआत में बीओके ने प्रमुख ने कहा कि विभिन्न देशों के बीच चल रहे भू-राजनीतिक तनावों और व्यापार संघर्षों का असर महंगाई पर देखने को मिल सकता है।

बीओके के डिप्टी गवर्नर किम वूंग ने देश के मूल्य रुझानों का आकलन करने के लिए एक बैठक के दौरान यह टिप्पणी की।

खाद्य तेलों में मिलाजुला रुख उड़द दाल सस्ती व चीनी महंगी

नई दिल्ली, 16 मार्च (एजेंसियां)। विदेशी बाजारों की गिरावट के बीच स्थानीय स्तर पर उठाव कमजोर रहने से बीते सप्ताह दिल्ली थोक जिंस बाजार में खाद्य तेलों में मिलाजुला रुख रहा जबकि उड़द दाल सस्ती वहीं चीनी महंगी हो गई। **तेल-तिलहन :** वैश्विक स्तर पर मलेशिया के बुरसा मलेशिया डेरिवेटिव एक्सचेंज में पाम ऑयल का मार्च वायदा सप्ताहांत पर 91 रिंगिट लुढ़ककर 4730 रिंगिट प्रति टन पर आ गया। इसी तरह मार्च का अमेरिकी सोया तेल वायदा 1.45 सेंट की गिरावट लेकर 41.56 सेंट प्रति पौंड बोला गया।

इस दौरान खाद्य तेलों में मिश्रित रुझान रहा। सूरजमुखी तेल 146 रुपए प्रति क्विंटल चढ़ गया जबकि सोया रिफाइंड 220 रुपये प्रति क्विंटल उतर गया। वहीं, सरसों तेल, मूंगफली तेल, पाम ऑयल और वनस्पति तेल के भाव में कोई बदलाव नहीं हुआ। सप्ताहांत पर सरसों तेल 16116 रुपये प्रति क्विंटल, मूंगफली तेल 18168 रुपए प्रति क्विंटल, सूरजमुखी तेल 16849 रुपए प्रति क्विंटल, सोया रिफाइंड 15531 रुपए प्रति क्विंटल, पाम ऑयल 13553 रुपए प्रति क्विंटल और वनस्पति तेल 16336 रुपए प्रति क्विंटल पर रहा।

दाल-दलहन : बीते सप्ताह दाल-दलहन बाजार में उड़द दाल में 200 रुपए प्रति क्विंटल की गिरावट को छोड़कर अन्य दालों में टिकाव रहा। इस दौरान चना, दाल चना, मसूर दाल, मूंग दाल और अरहर दाल के भाव में कोई बदलाव नहीं हुआ। सप्ताहांत पर चना 5700-5800, दाल चना 6700-6800, मसूर काली 7300-7400, मूंग दाल 9250-9350, उड़द दाल 9000-9100, अरहर दाल 8400-8500 रुपए प्रति क्विंटल रही।

अनाज : अनाज मंडी में टिकाव रहा। इस दौरान गेहूं और चावल के भाव पिछले कारोबारी दिवस के स्तर पर पड़े रहे।

महिलाओं की नियुक्ति बढ़ाने में प्रतिभा की सीमित उपलब्धता बड़ी चुनौती

- भारत में ब्लू-कॉलर कार्यबल की हर 5 नौकरियों में से महिलाओं के पास केवल एक नौकरी
- वेतन में असमानता व स्वच्छता की खराब स्थिति के कारण पीछे रह जा रही महिलाएं

नई दिल्ली, 16 मार्च (एजेंसियां)। ब्लू-कॉलर नौकरियां प्रदान करने वाली देश की अधिकांश कंपनियां चालू वर्ष में महिलाओं की नियुक्तयां बढ़ाने की योजना बना रही है लेकिन उनके सामने सबसे बड़ी चुनौती प्रतिभा पूल की उपलब्धता बन रही है।

ग्लोबल जॉब मैचिंग और हायरिंग प्लेटफॉर्म, इनडीड के नए सर्वे के मुताबिक, भारत में ब्लू-कॉलर कार्यबल की हर 5 नौकरियों में से महिलाओं के पास केवल एक नौकरी है। नियुक्ति की बढ़ती इच्छा के बाद भी वेतन में असमानता और स्वच्छता की खराब स्थिति जैसी अनेक चुनौतियों के कारण महिलाएं पीछे रह जा रही हैं। इसमें टियर 1 और टियर 2 शहरों में 14 उद्योगों, जैसे ऑटोमोबाइल, बीएफएसआई, ई-कॉमर्स, ट्रैवल एवं हॉस्पिटैलिटी, एफएमसीजी और मैनुफैक्चरिंग क्षेत्र का अध्ययन किया गया, जिसमें यह वास्तविकता सामने आई। सर्वे में शामिल 73प्रतिशत नियोक्ताओं ने बताया कि उन्होंने 2024 में ब्लू-कॉलर पदों पर महिलाओं की नियुक्ति की थी, लेकिन फिर भी देश में महिलाओं की भागीदारी अभी भी सिर्फ 20 प्रतिशत पर स्थिर है। कुछ उद्योगों का प्रदर्शन बेहतर है। जहां रिटेल (32प्रतिशत), हेल्थकेयर और फार्मास्यूटिकल्स (32प्रतिशत), कंस्ट्रक्शन और रियल एस्टेट (30प्रतिशत), और ट्रैवल एवं हॉस्पिटैलिटी (28प्रतिशत) में महिलाओं का प्रतिनिधित्व सबसे ज़्यादा है, वहीं दूरसंचार, बीएफएसआई और आईटी/आईटीईएस में महिलाओं की संख्या 10 प्रतिशत से भी कम है। सर्वे के अनुसार, 78 प्रतिशत नियोक्ता 2025 में ब्लू-कॉलर पदों पर महिलाओं की नियुक्त बढ़ाने की योजना बना रहे हैं। महिलाओं की भर्ती के इरादे में 2024 में 73 प्रतिशत के मुकाबले 5प्रतिशत की वृद्धि देखने को मिली है। रिटेल (94प्रतिशत), हेल्थकेयर और फार्मा (93प्रतिशत), और ई-कॉमर्स (93प्रतिशत) जैसे उद्योगों में महिलाओं की मांग सबसे मजबूत है।

सर्वे के मुताबिक ज़्यादातर महिलाएं मुख्यत: वित्तीय आत्मनिर्भरता (70प्रतिशत) पाने के लिए ब्लू-कॉलर नौकरियां तलाशती हैं, लेकिन कार्यस्थल पर उन्हें कड़वी वास्तविकता का सामना करना पड़ता है।

नर्मदा नियरे

सार-समाचार

वर्दी की राशि के लिए कोटवार 18 को निकालेंगे रैली

बैतूल, देशबन्धु। जिले के समस्त तहसीलों के कोटवार अपनी वर्दी की राशि के लिए अब मैदान में उतरने जा रहे हैं। मध्य प्रदेश ग्राम रक्षक कोटवार चौकीदार संघ ने 18 मार्च, मंगलवार को कलेक्टर कार्यालय बैतूल में रैली निकालकर ज्ञापन सौंपने का निर्णय लिया है। संघ के सचिव लोकेश पाटिल ने बताया कि जिले के सभी कोटवार साथियों, पुरुष और महिलाओं को सूचित किया गया है कि वे अधिक से अधिक संख्या में इस रैली में शामिल हों। सुबह 11 बजे कर्मचारी भवन में एकत्रित होकर रैली की शुरुआत की जाएगी। जिला अध्यक्ष रामदास गुजरे ने सभी कोटवारों से अपील की है कि वे अपनी एकजुटता दिखाते हुए इस रैली में अनिवार्य रूप से शामिल हों।

मालवी सेन समाज का होली मिलन समारोह 19 को

बैतूल, देशबन्धु। मालवी सेन समाज संगठन द्वारा 19 मार्च को दोपहर 11 बजे से दुर्गा वार्ड क्रमांक 3, बड़ी टावर लाइन के पास स्थित श्री चमत्कारी नंदेश्वर शिव धाम में होली मिलन समारोह का आयोजन किया जा रहा है। जिलाध्यक्ष द्वारा समाज जनों एवं मालवी ग्रुप के सभी सदस्यों से अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर इस आयोजन को सफल बनाने की अपील की है।

लायंस क्लब ताप्ती नगरी मुलताई को हंगर एक्टिविटी के लिए मिला प्रथम पुरस्कार

मुलताई, देशबन्धु। लायंस क्लब की रीजन कॉन्फ्रेंस का आयोजन रविवार को प्लेटटिनम रिजॉर्ट इटारसी मेंआयोजित की गई। इस कांफ्रेंस में डिस्ट्रिक्ट गवर्नर लायन मनीष शाह, रीजन चेयरमैन लायन डॉ अतुल सेठा, जोन चेयरमेन लायन रितु राजपूत सहित लायन पदाधिकारी उपस्थित थे रीजन कॉन्फ्रेंस में विभिन्न लोगों को सेवा गतिविधियों के लिए पुरस्कृत किया गया। रीजन कॉन्फ्रेंस में डिस्ट्रिक्ट गवर्नर लायन मनीष शाह ने कहा कि हमारे क्लबो को पीड़ति मानवता की सेवा के लिए अधिक से अधिक सेवा गतिविधियों के आयोजन करना चाहिए जिससे समाज में लायन वाद की छवि से लोग प्रेरित होंगे। रीजन कॉन्फ्रेंस में ताप्ती नगरी मुलताई को रीजन में हंगर एक्टिविटी के लिए प्रथम स्थान प्राप्त हुआ ,जिसे क्लब के अध्यक्ष लायन महेश नायक ने ग्रहण किया। इस अवसर पर लायन हेमंत शर्मा, लायन प्रकाश खड़के, लायन राहुल अग्रवाल, लायन सुधीर पूरी ,लायन आशीष जैन सहित क्लब के वरिष्ठ कनिष्ठ पदाधिकारी उपस्थित थे।

लेदर बॉल क्रिकेट टूर्नामेंट में ग्वालियर ने इंदौर को 6 विकेट से हराया

बैतूल, देशबन्धु। लाल बहादुर शास्त्री स्टेडियम, कोठी बाजार में चल रहे अखिल भारतीय लेदर बॉल क्रिकेट टूर्नामेंट राजीव कप में रविवार 16 मार्च को खेले गए मुकाबले में आदित्य वर्ल्ड क्रिकेट अकादमी, ग्वालियर ने केवाईसीए इंदौर को 6 विकेट से हरा दिया। ग्वालियर के ऑलराउंडर अनुराग वर्मा ने बेहतरीन खेल का प्रदर्शन करते हुए अपनी टीम को शानदार जीत दिलाई और मैन ऑफ द मैच का खिताब जीता।

केवाईसीए इंदौर ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया लेकिन ग्वालियर के गेंदबाजों ने उनके इस फैसले को गलत साबित कर दिया। इंदौर की टीम पूरे 136 रन पर सिमट गई। रोहित जाटव ने सर्वाधिक 50 रन बनाए, लेकिन टीम के अन्य बल्लेबाज कोई खास योगदान नहीं दे सके। ग्वालियर की ओर से अनुज, कौशलेंद्र, आदित्य और बालप्रसाद ने 2-2 विकेट लेकर इंदौर की कमर तोड़ दी। लक्ष्य का पीछा करने उतरी ग्वालियर की टीम ने जबरदस्त बल्लेबाजी की और महज 20 ओवर में 6 विकेट शेष रहते जीत हासिल कर ली। अनुराग वर्मा ने 49 रन की अहम पारी खेली, जबकि रुद्र तोमर 42 रन बनाकर नाबाद रहे। अनुराग वर्मा ने अपनी बल्लेबाजी और गेंदबाजी दोनों में बेहतरीन प्रदर्शन किया, जिसके चलते उन्हें मैन ऑफ द मैच के खिताब से नवाजा गया। अरुणाचल महिला क्रिकेट टीम की फिजियोथेरेपिस्ट डॉली अग्रवाल ने अनुराग वर्मा को यह पुरस्कार प्रदान किया। इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में रेड क्रॉस सोसाइटी के अध्यक्ष डॉ.अरुण जयसिंहपुरे, डॉ.विनय सिंह चौहान, डॉ. दीप कुमार साहू, डॉ. नूतन राठी, पत्रकार सपन दुबे, पत्रकार शेख शब्बीर और गंज माता मंदिर के अध्यक्ष पम्मा बिहारे उपस्थित रहे। मैच के दौरान कॉमेंट्री की जिम्मेदारी आशीष विक्की पवार और हरप्रीत कौशल ने संभाली। ऑनलाइन स्कोरिंग हर्षित पंडाग्रे ने की, जबकि ऑफलाइन स्कोरिंग मनोज दहिकर के हाथों में रही। मेडिकल फिजियो का दायित्व आयुष चढ़ोकार ने निभाया। टूर्नामेंट में विशेष योगदान देने वालों में प्रदीप गुजरे और कृष्णा नाईक का नाम भी शामिल है। अखिल भारतीय लेदर बॉल क्रिकेट टूर्नामेंट राजीव कप में 17 मार्च को समृद्धि क्रिकेट क्लब लखनऊ और सिवनी बानापुरा के बीच मुकाबला खेला जाएगा। यह मैच सुबह 10:30 बजे शुरू होगा। उत्तर प्रदेश की समृद्धि क्रिकेट क्लब इस टूर्नामेंट में खेलने वाली पहली टीम बन गई है, जिससे दर्शकों में जबरदस्त उत्साह है।

बजट सिर्फ गुमराह करने वाला- सोनी

अगर मध्य प्रदेश विकसित होता तो दो बार कर्ज क्यों लेती भाजपा सरकार ?

बैतूल, देशबन्धु। मध्य प्रदेश सरकार द्वारा पेश किए गए बजट को लेकर सेवादल बैतूल ब्लॉक अध्यक्ष गोलू सोनी ने तीखी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा कि यह बजट पूरी तरह किसानों को गुमराह करने वाला है। सरकार एक ऐसी योजना लेकर आई है, जिसमें किसानों को 5रु में कनेक्शन देकर बाद में हजारों लाखों रुपए वसूलने की साजिश रची जा रही है। उन्होंने इसे रिलायंस कंपनी की शुरुआती रणनीति से जोड़ा, जब धीरूभाई अंबानी की कंपनी ने फ्री में सिम बांटे थे, फिर 20-25 में बेचे और बाद में रिचार्ज महंगा कर दिया।

सोनी ने कहा कि पहले 299 में तीन महीने का रिचार्ज होता था, लेकिन अब इसके लिए 1000 तक चुकाने पड़ रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा सरकार किसानों से भी यही करने वाली है। जब वे महंगी दरों पर बिजली का भुगतान नहीं कर पाएंगे, तो उनके घर का सामान कुर्क करने की कार्रवाई की जाएगी। सोनी ने मुख्यमंत्री के उस बयान पर भी सवाल उठाया, जिसमें उन्होंने कहा था कि मध्य प्रदेश भारत का सबसे विकसित राज्य है। गोलू सोनी ने तंज कसते हुए कहा कि अगर यह सच होता तो भाजपा सरकार को दो बार कर्ज लेने की जरूरत नहीं पड़ती। उन्होंने आगे कहा कि प्रदेश के नागरिकों को मजदूरी करने दूसरे राज्यों में नहीं जाना पड़ता अगर यहां वाकई विकास हुआ होता। उन्होंने यह भी कहा कि मध्य प्रदेश पूरे देश में सबसे ज्यादा टैक्स देने वाला प्रदेश है, फिर भी यहां सबसे अधिक कर्ज है। सवाल उठाते हुए उन्होंने कहा कि आखिर सरकार जनता से वसूले गए टैक्स का सही उपयोग क्यों नहीं कर रही? प्रदेश के किसान, मजदूर और व्यापारी महंगाई की मार झेल रहे हैं, लेकिन सरकार सिर्फ झूठे दावे कर रही है। सोनी ने भाजपा सरकार को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि यह बजट सिर्फ जनता को लुभाने के लिए बनाया गया है, लेकिन इसकी असली सच्चाई कुछ और ही है। उन्होंने चेतावनी दी कि अगर सरकार ने किसानों के साथ छलावा किया तो सेवादल सड़कों पर उतरकर विरोध करेगा।

अनियमितताओं के खिलाफ संघर्ष का एक वर्ष पूर्ण

बैतूल, देशबन्धु। ग्रीन आर्मी युवा मंडल बैतूल बाजार के सदस्यों ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बताया कि सीएम राइज शासकीय कृषि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में हो रही अनियमितताओं के खिलाफ विद्यार्थियों और अभिभावकों का संघर्ष एक साल पूरा कर चुका है, लेकिन अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई है। ग्रीन आर्मी युवा मंडल, बैतूल बाजार के नेतृत्व में विद्यार्थियों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने पिछले एक वर्ष में अपनी शिकायतें माध्यमिक शिक्षा मंडल भोपाल, जिला शिक्षा अधिकारी बैतूल, भारत सरकार के जनजातीय कार्य राज्य मंत्री और सांसद, कलेक्टर, विधायक सहित अन्य उच्च अधिकारियों तक पहुंचाईं, लेकिन कोई निर्णायक कदम नहीं उठाया गया। नगर के लोग इस समस्या से परिचित हैं, लेकिन कोई भी आगे आकर आवाज नहीं उठा रहा। संघर्ष के एक साल पूरे होने पर ग्रीन आर्मी युवा मंडल ने इस मुद्दे को फिर से उठाने का संकल्प लिया है। संगठन का कहना है कि अगर जल्द ही समस्या का समाधान नहीं हुआ, तो आंदोलन को और तेज किया जाएगा। प्रशासन से जल्द से जल्द इस मुद्दे पर कार्रवाई की मांग की गई है।

भैंसदेही के डॉ. निरज राठौर को इसरो प्रमुख ने किया पीएचडी डिग्री से सम्मानित

बैतूल, देशबन्धु। भैंसदेही तहसील के कौड़ीढाना गांव के रहने वाले डॉ. निरज राठौर ने जिले का नाम रोशन कर दिया है। उन्हें दुनिया की प्रतिष्ठित संस्था भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अध्यक्ष और प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. वी. नारायणन ने डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएचडी) की उपाधि प्रदान की। यह सम्मान उन्हें कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय के आठवें दीक्षांत समारोह में मिला। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बट्टु सत्यनारायण, कुलसचिव प्रोफेसर आर. आर. बिरादर सहित कई विभागाध्यक्ष मौजूद रहे।

डॉ. निरज राठौर भैंसदेही शहर के एक साधारण परिवार से ताल्लुक रखते हैं। उनके पिता रामदीन राठौर और बड़े भाई पंकज राठौर ने हमेशा उनकी शिक्षा को प्राथमिकता दी। उन्होंने अपनी स्कूली पढ़ाई शासकीय हाईस्कूल भैंसदेही से पूरी की और फिर बैतूल जिले के जे. एच. कॉलेज से बीएससी की डिग्री हासिल की। इसके बाद उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से गणित में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। डॉ. राठौर ने उच्च स्तरीय परीक्षाएं जैसे गेट, मध्यप्रदेश सेट, महाराष्ट्र सेट और नेट पास करने के बाद कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय में गणित विषय में पीएचडी पूरी की। उनकी रिसर्च गणित की शाखा द्रव गतिकी (फ्लुइड डायनामिक्स) पर केंद्रित रही, जिसमें उन्होंने रक्त संचार और शरीर की नाड़ियों में होने वाले विभिन्न रोगों का अध्ययन किया। उन्होंने नैनोकणों की सहायता से कैंसर, रक्त के थक्के और अन्य बीमारियों के उपचार पर भी रिसर्च की।

पीएचडी के दौरान डॉ. निरज राठौर को दुनिया के टॉप 1 प्रतिशत वैज्ञानिकों में शामिल डॉ. एन. संदीप का मार्गदर्शन मिला। उनकी रिसर्च 11 अंतरराष्ट्रीय जर्नल्स और 3 बुक चैप्टर में प्रकाशित हुई। उन्होंने 6 अंतरराष्ट्रीय और 5 राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलनों में अपनी रिसर्च प्रस्तुत की। वर्ष 2022 में कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय ने उन्हें सोलर एनर्जी से चलने वाली कारों पर नई रिसर्च के लिए प्रथम पुरस्कार दिया था। वर्तमान में डॉ. निरज राठौर कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय में लेक्चरर के रूप में कार्यरत हैं और स्नातक व स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को पढ़ाने के साथ आगे की रिसर्च कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि देश की कई संस्थाएं और केंद्रीय विश्वविद्यालय पीएचडी के दौरान आर्थिक सहायता प्रदान करते हैं, जिससे छात्रों को उच्च शिक्षा में मदद मिलती है। उन्होंने युवाओं को सलाह दी कि वे सरकार की योजनाओं का लाभ उठाकर अपने-अपने क्षेत्रों में समाज के विकास और भारत को सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र बनाने में योगदान दें।

फिल्म निर्माता प्रदीप उईके को मिली पीएचडी की उपाधि

बैतूल, देशबन्धु। जिले के जंगल सत्याग्रह फिल्म निर्माता, लेखक व निदेशक प्रदीप उईके को बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल की ओर से पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई है। यह उपाधि शासकीय नर्मदा महाविद्यालय नर्मदापुरम रिसर्च सेंटर में डॉ.एस.के. उदयपुरे के मार्गदर्शन में रसायन शास्त्र बैतूल जिले के विभिन्न क्षेत्रों में मिट्टी के रासायनिक गुणों और पोषक तत्वों में परिवर्तन पर जैविक और अकार्बनिक उर्वरकों के प्रभाव पर अध्ययन विषय पर शोध कार्य पूर्ण करने पर दी गई है। यह शोध जिले के किसानों के लिये वरदान साबित होंगा। इसके अलावा श्री उईके ने मध्यप्रदेश राज्य पात्रता परीक्षा (स्श्वज्ञ) रसायन शास्त्र से उत्तीर्ण की है। प्रदीप ने अपनी दोनों सफलता का श्रेय पिता मधु उइके, माता श्रीमती गुनीता उइके और मार्गदर्शक डॉ. एस के उदयपुरे सहित अपने कोल्हिया प्राथमिक शिक्षक श्री आठनेरे, मोंग्या परते, हतनापुर माध्यमिक शिक्षक कमलेन्द्र वानखे?, मनोहर भिकोंडे, राजकुमार खापरे, ज्योति नागले, बीआर साबले, मुलताई नवीव हाईस्कूल शिक्षक नंदकिशोर इवने, श्री हरफो?, श्री नागौसे, रघुवंशी मैडम, धर्माधिकारी मैडम, शाहपुर हायर सेकेंडरी एकलव्य शिक्षक विजयन्तसिंह ठाकुर, योगेश तिवारी, मल्होत्रा मैडम, शैली जैन, नासिर खान, श्री प्रधान, बैतूल स्नातक जेएच प्राध्यापक सतीश मासोदकर, गोपाल साहू, एकनाथ निरापुरे, महेंद्र सलाम, श्री मेहता एवं श्रीमती मेहता, श्री वर्मा, श्री बघेल, अल्का पांडे, पीजी इंदौर देविहिल्या वि वि प्राध्यापक अशोक शर्मा, श्री पांडे, श्री प्रसाद, श्री बजाज, श्री चौहान, श्रीमती खरे, श्रीमती शर्मा,जोशी मैडम, सभी गुरुजनों को दिया है।

55 साल बाद बचपन के रंगों में रंगे दो दोस्त, रोंढा की जतरा में उड़ाई गुलाल

बैतूल, देशबन्धु। जिले के रोंढा गांव में हर साल फागुन शुक्ल तीज पर लगने वाली जतरा में इस बार एक खास नजारा देखने को मिला। 55 साल पहले के दो सहपाठी, कुंज बिहारी चुरागले और रामकिशोर पवार, बचपन की यादों में डूब गए और उसी स्थान पर गुलाल उड़ाकर पुराने दिनों को ताजा किया, जहां कभी उनके पास रंग खरीदने के पैसे नहीं होते थे। उस दौर में जब फटी पैंट और बदहाल जिंदगी के बीच गोबर और कीचड़ से होली खेली जाती थी, बैलगाड़ियों के पहियों से बने कीटन में मस्ती होती थी और मेले के झूलों पर बैठने के लिए कपड़ा जमीन पर रखकर उसे पकड़ने का खेल चलता था, आज उन्हीं पलों को याद कर दोनों दोस्त भावुक हो उठे।

रोंढा गांव में हर साल तीज के दिन यह जतरा भरती है और यहां मेघनाथ की पूजा की जाती है। यह मेला अपनी अनोखी परंपराओं के लिए मशहूर है। बताया जाता है कि मेघनाथ की पूजा करने से भूत-प्रेत बाधाएं दूर होती हैं और मन्नतें पूरी होती हैं। इसी वजह से बैतूल जिले के अलग-अलग गांवों से हजारों लोग इस मेले में पहुंचते हैं। इस मेले की खास परंपरा 60 फीट ऊंचे एक चिकनाईयुक्त सागौन के खंभे पर चढ़कर ऊपर रखे नारियल और पैसे को प्राप्त करना है, जिसे %जीरी तोड़ना% कहा जाता है। यह बेहद जोखिम भरा होता है, लेकिन परंपरा के अनुसार हर साल यह रोमांचक आयोजन होता है। मेघनाथ की पूजा के साथ आदिवासी समाज के लोग पारंपरिक नृत्य और फाग गायन करते हैं, जिससे मेले का माहौल पूरी तरह रंगीन हो जाता है।

ग्राम पंचायत रोंढा के सरपंच और उपसरपंच के साथ कांग्रेस जिलाध्यक्ष हेमंत वागद्रे ने आदिवासी भाइयों का गमछा और श्रीफल देकर स्वागत किया। जयगुरुदेव सेवा समिति के शिवकिशोर डिगरसे, राजेंद्र देवासे, मोहनलाल डोगरदिये, प्रदीप देवासे, दीपांशु डिगरसे सहित अन्य सदस्यों ने मेले में जल सेवा की व्यवस्था की, जिससे हजारों लोगों को राहत मिली। प्रदीप डिगरसे ने बताया कि मेघनाथ मेले की अलग-अलग गांवों में अलग-अलग परंपराएं हैं।

होली मिलन समारोह में मेधावी विद्यार्थियों, बुजुर्गों और युवाओं का हुआ सम्मान

आठनेर, देशबन्धु। श्री बाथरी साहू समाज ट्रस्ट आठनेर द्वारा श्री राम मंदिर मंगल भवन में होली मिलन समारोह धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम में समाज के सैकड़ों लोगों ने एक-दूसरे को तिलक लगाकर शुभकामनाएं दीं।

साहू समाज के मीडिया प्रभारी विनोद पिपरोले ने बताया कि समाज की आराध्य देवी मां कर्मा की जयंती के उपलक्ष्य में श्री बाथरी साहू समाज श्रीराम मंदिर ट्रस्ट द्वारा विशेष आयोजन किया गया। इसमें मां कर्मा देवी जन्मोत्सव पूजन, समाज के वरिष्ठ बुजुर्गों का सम्मान, मेधावी छात्र-छात्राओं और विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त युवक-युवतियों का सम्मान किया गया। समारोह में वर्ष 2023 और 2024 में 10वीं और 12वीं कक्षा में 85 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। साथ ही सरकारी सेवा में चयनित और विशिष्ट उपलब्धि हासिल करने वाले युवक-युवतियों को भी सम्मानित किया गया।

समाज की विभिन्न क्रियान्वयन समितियों का गठन किया गया और आगामी राम नवमी पर्व को लेकर चर्चा की गई। इसके अलावा समाज की कृषि भूमि ठेका नीलामी की योजना पर भी विचार-विमर्श हुआ। कार्यक्रम में क्षेत्र के 52 गांवों से बड़ी संख्या में सामाजिक बंधु उपस्थित रहे और उन्होंने पारंपरिक तरीके से होली मिलन समारोह में भाग लिया। समाज के सभी वरिष्ठ और युवा सदस्यों ने उत्साह के साथ आयोजन में सहभागिता की और सामाजिक एकता को मजबूत करने का संकल्प लिया।

पूर्व जूनियर कमिशन ऑफिसर्स का होली मिलन समारोह सम्पन्न

बैतूल, देशबन्धु। जिले के पूर्व जूनियर कमीशन आफीसरो द्वारा परिवार के साथ रविवार को शिव मंगल भवन टीकारी में सेवानिवृत्त कैप्टन सुमित सिंह जिला सैनिक कल्याण बोर्ड अधिकारी की उपस्थिति में और सेवानिवृत्त कैप्टन एलआर पवार की अध्यक्षता में धूमधाम से होली मिलन समारोह सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में जिले के सभी जूनियर कमीशन आफीसर्स के परिवार के सभी सदस्यों ने सहभागिता की और एक दूसरे को गुलाल लगाकर फूलों की वर्षा कर होली की शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आनंद लिया। समारोह के मुख्य अतिथि कैप्टन सुमित सिंह ने सभी आफिसर्स और उनके परिवार के सदस्यों को होली की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि इसी प्रकार से हर त्यौहार पर पारिवारिक मिलन समारोह आयोजित करते रहना चाहिए जिससे एक जूट होकर पुरानी स्मृति को ताजा कर खुशियां मनाई जा सके। अध्यक्ष कैप्टन एलआर पवार ने कहा कि सभी जेसीओ और उनके परिवार के सदस्यों को ऐसे आयोजनों में अधिक से अधिक संख्या में शामिल होना चाहिए जिससे बैतूल जिले के जेसीओ और उनके परिवारों की एक पहचान बन सके। समारोह के अंत में सामूहिक भोज का आयोजन किया गया। समारोह को सफल बनाने में सूबेदार मेजर दिवाकर डोंडे, सूबेदार मेजर पंढरी डांगे, सूबेदार मेजर संतोष चौधरी, सूबेदार गुलाबराव डांगे, सूबेदार जगदीश साहू, सूबेदार वासुदेव सोनारे और एम डब्ल्यू ओएएल पवार सहित सभी साहबानो और मात्र शक्ति बहनों का सराहनीय योगदान रहा।

ग्रीष्मकालीन मूंग फसल में कीटनाशक और नीदानाशक का उपयोग कम से कम करें- कंषाना

नकली बीज और नरवाई जलाने पर हो सख्त कार्रवाई

नर्मदापुरम। किसान कल्याण एवं कृषि विकास मंत्री श्री एदल सिंह कंषाना ने कहा है कि नकली बीज विक्रय और किसानों द्वारा गेहूं एवं चने की फसल की नरवाई खेतों में जलाने पर सख्त कार्रवाई की जाये। मंत्री श्री कंषाना ने अधिकारियों को यह निर्देश मंत्रालय में विभागीय समीक्षा बैठक के दौरान दिए। श्री कंषाना में कहा कि खरीफ 2025-26 के लिए सोयाबीन, कपास और मक्का के बीज की कार्य योजना तैयार कर ली जाए। केंद्रीय योजनाओं के प्रदान किए गए लक्ष्य की शत-प्रतिशत पूर्ति सुनिश्चित की जाए। प्रदेश में गेहूं के लिए स्थापित किए गए उपार्जन केंद्रों पर किसानों की बैठने एवं पानी की उचित व्यवस्था की जाए। श्री कंषाना ने कहा कि प्रदेश में मिट्टी परीक्षण प्रयोगशालाओं का बेहतर संचालन किया जाए और किसानों के खेतों की मिट्टी का अधिकाधिक परीक्षण सुनिश्चित करें। फसल बीमा योजना का लाभ लेने के लिए किसानों को जागरूक भी किया जाए। बैठक में इंदौर संभाग के संयुक्त संचालक कृषि और जिलों के उप संचालक कृषि एवं अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

श्री कंषाना ने कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग पर कहा कि यद्यपि मूंग की पैदावार से प्रदेश में किसानों की आय में वृद्धि हुई है। किसान इसे जल्दी पकाने के लिए कई बार नीदानाशक दवा (पेराक्वाट डायक्लोराइड) का छिड़काव करते हैं। इस दवा के अंश मूंग फसल में कई दिनों तक विद्यमान रहते हैं, जो मानव स्वास्थ्य एवं पशु-पक्षियों के लिए अत्यंत हानिकारक हैं। कृषि मंत्री ने बताया कि कृषि एवं स्वास्थ्य विशेषज्ञों, पर्यावरणविद् और कृषि सुधार के क्षेत्र में कार्य कर रहे संगठनों ने अनुसंधान रिपोर्ट के आधार पर मूंग फसल में आवश्यकतानुसार ही कीटनाशकों के उपयोग का सुझाव दिया है। राज्य सरकार जैविक खेती को विभिन्न योजनाओं के माध्यम से प्रोत्साहित कर रही है एवं किसानों को जैविक खेती के लिए प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। प्रदेश के नर्मदापुरम, हरदा, सीहोर, नरसिंहपुर, बैतूल, जबलपुर, विदिशा, देवास और रायसेन में सहित कई जिलों में ग्रीष्मकालीन मूंग किसानों के लिए तीसरी फसल का अच्छा विकल्प बन चुकी है। वर्तमान में मूंग की फसल 14.39 लाख हेक्टेयर रकबे में लगाई जा रही है और इसका उत्पादन 20.29 लाख मीट्रिक टन है। प्रदेश में ग्रीष्मकालीन मूंग का औसत उत्पादन 1410 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है।

असंगठित मजदूर संघ की बैठक आयोजित

हरदा, देशबन्धु। असंगठित मजदूर संघ जिला हरदा की बैठक रविवार को गुप्तेश्वर मंदिर में आयोजित की गई, जिसमे मुख्य रूप से जिला अध्यक्ष अनिल वैद्य, संरक्षक शांति कुमार जैसानी उपस्थित हुए। इस दौरान सभी ने होली उत्सव की एक दुसरे को बधाई दी।

बैठक में जानकारी देते हुए कार्यकारी अध्यक्ष नारायण राजपूत ने बताया कि संगठन की सदस्यता का अभियान चलाया जा रहा है, जो भी असंगठित क्षेत्र में काम करते है, जो किसी भी दुकान या कही भी काम करते है, वह सभी इस संगठन की सदस्यता ले सकते है । कोषाध्यक्ष बनवारी तवर ने बताया कि सभी सदस्यों का पहचान पत्र शीघ्र ही बनाया जा रहा है ताकि सभी लोग संगठन का लाभ ले सके। संगठन के अध्यक्ष अनिल वैद्य ने कहा कि संगठन की शक्ति सबसे बड़ी शक्ति है यदि हम संगठित रहेंगे तो हम हमेशा आगे बढ़ते रहेंगे। संगठन के संरक्षक शांति कुमार जैसानी ने सभी को होली उत्सव की बधाई देते हुए सभी को एकता के साथ संगठन में अपना-अपना दायित्व निभाने की बात कही। इस अवसर पर पवन राजपूत, विष्णु बघेल, दीपक चावडा गणेश शर्मा, करण भूसारे ,फलक राम बनवारी, राहुल गौर, विजय दुबे, लोकेश मालवीय आदि उपस्थित रहे।

पोषण टेकर और संपर्क एप बना आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के लिए सिरदर्द

नेटवर्क न होने से एप नहीं चलते, आंगनवाड़ी केंद्र संचालन में दिक्कतें

बैतूल, देशबन्धु। महिला एवं बाल विकास विभाग में आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की परेशानी लगातार बढ़ती जा रही है। पहले पोषण टेकर एप की दिक्कतें झेल रही कार्यकर्ताओं को अब संपर्क एप का भी बोझ लाद दिया गया है। नेटवर्क की समस्या, खराब क्वालिटी के मोबाइल और बिना किसी प्रशिक्षण के काम करने का दबाव झेल रही आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को अधिकारियों की धमकियों का भी सामना करना पड़ रहा है।

यह आरोप लगाते हुए आंगनवाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिका एकता यूनियन बैतूल जिला अध्यक्ष सुनीता राजपाल ने बताया कि सरकार की नीति के तहत आंगनवाड़ी केंद्रों की गतिविधियों को मोबाइल एप के जरिए अपडेट करने के निर्देश दिए गए थे। पहले पोषण टेकर एप लागू किया गया, लेकिन विभाग ने जो मोबाइल खरीदे, वे कुछ ही दिनों में खराब होने लगे। कार्यकर्ताओं ने विरोध किया, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। उस समय प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के पास महिला एवं बाल विकास विभाग का प्रभार था। इस मोबाइल खरीद में बड़ा घोटाला हुआ था, जिस पर काफी हंगामा हुआ, लेकिन मामला दबा दिया गया। अब एक और नया झंझट खड़ा हो गया है। बिना किसी ठोस समाधान के सरकार ने संपर्क एप लागू कर दिया। पहले से ही खराब क्वालिटी के मोबाइल और नेटवर्क न होने की समस्या झेल रही कार्यकर्ताओं को अब और परेशान किया जा रहा है। विभाग ने उन्हें नए और अच्छे मोबाइल भी नहीं दिए।

आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को महिला एवं बाल विकास विभाग के अलावा पंचायत विभाग, स्वास्थ्य विभाग और निर्वाचन विभाग में भी काम दिया जाता है। यहां तक कि जब मुख्यमंत्री प्रदेश के दौरे पर होते हैं तो उनकी सभाओं में भीड़ जुटाने के लिए बुलाया जाता है। इनके पास न तो शासकीय अवकाश होता है और न ही कोई अतिरिक्त सुविधा। अब पोषण टेकर और संपर्क एप पर काम न कर पाने की स्थिति में अधिकारियों द्वारा कार्यकर्ताओं को धमकियां दी जा रही हैं। सेवा समाप्त करने और मानदेय काटने की धमकी आम हो गई है। ग्रामीण इलाकों में नेटवर्क न होने से एप नहीं चलते, लेकिन इसका खामियाजा कार्यकर्ताओं को भुगतना पड़ रहा है। सुनीता राजपाल का आरोप है सरकार महिला सशक्तिकरण का ढिंढोरा पीट रही है, लेकिन हकीकत में आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं का शोषण किया जा रहा है। कई विधवा और गरीब महिलाएं मजबूरी में कम वेतन में यह काम कर रही हैं, लेकिन उन्हें सम्मान तक नहीं मिल रहा।

मुख्यमंत्री ने राजगढ़ में प्रदान किए हितलाभ, करोड़ों के विकास कार्यों की दी सौगात, बोले-

राजगढ़ अंचल में स्थापित होंगे नए उद्योग

रामगंज मंडी-भोपाल रेल लाइन से बढ़ेगी मध्यप्रदेश-राजस्थान की कनेक्टिविटी

भोपाल, देशबन्धु। डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि राजगढ़ में लगभग 500 करोड़ के निवेश से विभिन्न क्षेत्रों में औद्योगिक इकाइयाँ स्थापित की जाएंगी। उन्होंने कहा कि हाल ही में राजधानी भोपाल में हुई ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में प्रदेश में 30 लाख करोड़ रूपये के निवेश के प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। इससे प्रदेश का प्रत्येक अंचल लाभान्वित होगा। स्कूलों में शिक्षकों के पदों सहित पुलिसकर्मियों के रिक्त पदों की पूर्ति की जा रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राजगढ़ जिला अस्पताल के बाद शीघ्र मेडिकल कॉलेज की सौगात भी मिलेगी। उन्होंने कहा कि पौने तीन सौ किलोमीटर लंबी रामगंज मंडी से भोपाल तक की रेल लाइन की सौगात इस क्षेत्र को मिल रही है। विकास का कारवां निरंतर चलता रहेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कार्यक्रम में स्वामित्व योजना, मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजना, खाद्य प्र-संस्कृत इकाई योजना सहित विभिन्न योजनाओं के हितग्राहियों को हितलाभ प्रदान किए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव रविवार को राजगढ़ में शौर्य स्मारक जिला अस्पताल के लोकार्पण और रैन बसेरा भवन, नए विद्यालय भवन और विधि महाविद्यालय के भूमि-पूजन समारोह को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य और केन्द्र सरकार की योजनाओं के क्रियान्वयन से किसानों के जीवन में समृद्धि आएगी। उन्होंने किसानों से आग्रह किया कि वे अपनी जमीन न बेचें। पार्वती-कालीसिंध-चंबल नदी जोड़ो सिंचाई परियोजना से इस अंचल का बड़ा इलाका लाभान्वित होगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि नदी जोड़ों परियोजना से राजगढ़ क्षेत्र का भूगोल और भाग्य दोनों बदलेंगे। दो दशक पहले यहां सूखे की गंभीर समस्या थी। गत दो दशक से विकास की गति बढ़ी है। आने वाले समय में इस क्षेत्र का तीव्र विकास होगा। पार्वती-कालीसिंध-चंबल परियोजना से राजगढ़, नरसिंहगढ़, ब्यावरा, सारंगपुर, खिलचीपुर को लाभ मिलेगा। फोरलेन सड़कों के निर्माण, मोहनपुरा-कुंडालिया परियोजना और नए औद्योगिक निवेश से पूरा क्षेत्र बदल जाएगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में स्व-रोजगार से स्वावलंबन के जरिए महिलाओं की जीवन-स्थिति में सकारात्मक बदलाव लाने का प्रयास भी किया जा रहा है। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम एवं राजगढ़ जिला प्रभारी मंत्री चैतन्य कुमार काश्यप, राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) कौशल विकास एवं रोजगार विभाग गौतम टेटवाल, राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) मछुआ कल्याण एवं मत्स्य विकास नारायण सिंह पंवार, सांसद रोडमल नागर स्थानीय विधायक ने अपने संबोधन में जिले को दी गई सौगातों के लिये मुख्यमंत्री डॉ. यादव का आभार व्यक्त किया।

मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष मोहन नागर, जिला पंचायत अध्यक्ष चन्दर सिंह सौंधिया, विधायक राजगढ़ अमर सिंह यादव, विधायक खिलचीपुर हजारीलाल दांगी, विधायक नरसिंहगढ़ मोहन शर्मा, दिशा के सदस्य ज्ञानसिंह गुर्जर सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि मौजूद थे।

मुख्यमंत्री कार्यक्रम में भोपाल से वर्चुअली हुए शामिल

बरासों में सुमेरु पर्वत निर्माण का किया शिलान्यास

भोपाल, देशबन्धु। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि राज्य सरकार जनसामान्य की मूलभूत आवश्यकताओं के साथ-साथ उनकी आध्यात्मिक उन्नति के लिए भी कार्य कर रही है। विश्व में भारत की पहचान हमारे आध्यात्मिक विचारों तथा जियो और जीने दो के सिद्धांत को व्यवहार में क्रियान्वित करने से निर्मित हुई है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव भिंड में स्थित अतिशय क्षेत्र बरासों में सुमेरु पर्वत निर्माण के शिलान्यास कार्यक्रम को राजकीय विमानतल भोपाल से वर्चुअली संबोधित कर रहे थे। बरासों में 414 फीट ऊंचे सुमेरू पर्वत का निर्माण किया जाएगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारत की ख्याति सबको जीने का हक देने वाले देश के रूप में रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत विश्व में, जीवन के सभी क्षेत्रों में गौरव अर्जित कर रहा है। भारतीय ज्ञान परम्परा के आध्यात्मिक तेज के साथ-साथ विश्व में देश की साख और धाक बढ़ रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बरासों में बनाए जाने वाले स्कूल, कॉलेज, अस्पताल सहित अन्य जनकल्याण कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि राज्य सरकार द्वारा नई शिक्षा नीति के माध्यम से ज्ञानार्जन के क्षेत्र में भी विशेष नवाचार किए गए हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बरासों के ऐतिहासिक, पुरातात्विक और धार्मिक महत्व पर प्रकाश डाला। भिंड के बरासों में आयोजित कार्यक्रम को नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा मंत्री राकेश शुक्ला, दिगम्बर संत आचार्य श्री 108 सुबल सागर जी महाराज, परम पूज्य रामदास जी महाराज ने भी संबोधित किया।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने लगाया आरोप

कर्ज से चमकाए जा रहे मंत्रियों के बंगले

भोपाल, देशबन्धु। सरकार योजनाओं को संचालित करने के लिए लगातार कर्ज पर कर्ज ले रही है। सरकार 19 मार्च को फिर 6 हजार करोड़ का कर्ज लेने जा रही है। रंग पंचमी के दिन सरकार इस साल में तीसरी बार बाजार से कर्ज लेगी।

प्रदेश में बढ़ रहे कर्ज को लेकर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने प्रदेश सरकार पर बड़ा आरोप लगाते हुए कहा कि कर्ज से जनहित के काम नहीं किए जा रहे हैं बल्कि मंत्रियों के बंगले सुधारे जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश से ऐसा राज्य है, जहां जब बच्चा पैदा होता है तो 60 हजार का कर्जदार होता है। पटवारी ने दावा किया कि प्रदेश पर 5 लाख करोड़ का कर्ज है। समझ में नहीं आता मध्य प्रदेश सरकार आखिर कर्ज किस लिए ले रही है। कर्ज लेकर जनहित की योजनाएं संचालित नहीं की जा रहीं, बल्कि इस राशि का प्रयोग मंत्रियों के बंगले चमकाने में होता है। पटवारी ने कहा कि मप्र को इस वित्तीय वर्ष में कुल 62,835 करोड़ रुपए तक कर्ज लेने की अनुमति है। इस हिसाब से 31 मार्च तक सरकार सिर्फ 5,800 करोड़ रुपये और कर्ज ले सकती है। 19 मार्च को लिया जाने वाला कर्ज 7, 21 और 24 साल की अवधि के लिए होगा।

कुंडालिया बांध के लिए दिए मुआवजे में घोटाले का मामला

लोकायुक्त पुलिस ने 3 कलेक्टरों सहित सौ से ज्यादा अधिकारियों - कर्मचारियों पर किया मामला दर्ज

भोपाल, देशबन्धु। लोकायुक्त पुलिस द्वारा प्रदेश की अब तक की सबसे बड़ी कार्रवाई की है। कुंडालिया बांध के लिए दिए मुआवजे के घोटाले के मामले की पड़ताल के बाद लोकायुक्त पुलिस ने 3 कलेक्टरों और 4 डिप्टी कलेक्टरों सहित 107 अधिकारियों और कर्मचारियों के खिलाफ मामला दर्ज किया है।

दरअसल, लोकायुक्त द्वारा की गई जांच में आगर मालवा जिले के जिला कोषालय से 2016 से 2024 के बीच कुंडालिया बांध के लिए दिए गए मुआवजे की पूरी जानकारी हासिल की गई है। जांच में कई चौंकने वाले खुलासे सामने आए। इसमें कई अधिकारियों और कर्मचारियों पर बड़ी कार्रवाई की गई है। जिसके बाद सभी में हड़कंप मचा हुआ है। इस कार्रवाई के दौरान 107 कर्मचारियों व अधिकारियों पर अपराध पंजीबद्ध किया गया। तकरीबन 4 हजार 6 सौ करोड़ की लागत से निर्मित कुंडालिया बांध के पुनर्वास घोटाला में लोकायुक्त जांच के दायरे में 3 कलेक्टर, 4 डिप्टी कलेक्टर और 3 तहसीलदार समेत अनेक पटवारी, जल संसाधन विभाग के अधिकारी और इंजीनियर्स शामिल हैं। इनमें से कई रिटायर हो चुके हैं। आगर मालवा और राजगढ़ जिले की सीमा पर बने कुंडालिया बांध के भू-अर्जन और अन्य मुआवजा प्रकरणों में घोटाले के इस मामले में वर्ष 2016 से लोकायुक्त द्वारा जांच की जा रही थी। अब लोकायुक्त की कार्रवाई से प्रशासनिक अमले में हड़कम्प मचा हुआ है।

नशीली दवाओं के तस्करों पर कोई रहम नहीं : शाह

नई दिल्ली/गुवाहाटी, एजेंसी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने रविवार को कहा कि सरकार नशीली दवाओं के तस्करों पर कोई रहम नहीं दिखाएगी। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार ने नशा तस्करी से निपटने के लिए नीचे से ऊपर और ऊपर से नीचे की रणनीति अपनाई है। वहीं केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने रविवार को गुवाहाटी में पूर्वोत्तर राज्यों में तीन नए आपराधिक कानूनों के कार्यान्वयन पर समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की। बैठक के दौरान गृह मंत्री ने असम के आपराधिक जांच विभाग द्वारा नए आपराधिक कानूनों पर तैयार मानक प्रक्रिया पुस्तक का विमोचन भी किया। बैठक में पुलिस, जेल, कोर्ट, अभियोजन और फॉरेन्सिक से संबंधित विभिन्न नए प्रावधानों के पूर्वोत्तर राज्यों में कार्यान्वयन और वर्तमान स्थिति की समीक्षा की गई। अमित शाह ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट करते हुए कहा कि मादक पदार्थ माफियाओं के लिए कोई दया नहीं। मोदी सरकार के नशामुक्त भारत के निर्माण के अभियान को गति देते हुए, 88 करोड़ रुपए मूल्य की 'मेथमफेटामाइन' गोलियों की एक बड़ी खेप जब्त की गई और इंफाल तथा गुवाहाटी क्षेत्रों में अंतरराष्ट्रीय मादक पदार्थ गिरोह के चार सदस्यों को गिरफ्तार किया गया।

भाजपा ने विप चुनाव के लिए 3 उम्मीदवारों की घोषणा

मुंबई, एजेंसी। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने रविवार को पांच सीटों के लिए 27 मार्च को होने वाले महाराष्ट्र विधान परिषद (विप) चुनाव के लिए तीन उम्मीदवारों की सूची जारी की। भाजपा उम्मीदवारों में छत्रपति संभाजीनगर से संजय केनेकर, विदर्भ क्षेत्र से संदीप जोशी और दादाराव केचे शामिल हैं। अब सबका ध्यान इस बात पर है कि भाजपा बाकी बची दो सीटों के लिए अपने गठबंधन सहयोगी राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा-अजित गुट) और शिवसेना (शिंदे गुट) में से किसे मौका मिलेगा।

मुख्यमंत्री ने केंद्रीय मंत्री यादव के पिता को दी श्रद्धांजलि

भोपाल, देशबन्धु। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रविवार सुबह केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेंद्र यादव के गुरुग्राम, जमालपुर पहुंचकर उनके पिता कदम सिंह के निधन पर शोक संवेदना व्यक्त की। उन्होंने स्व. यादव के चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शोक संतप्त परिवार को ढांढस बंधाया और दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की है। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने भी श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

ट्रेन मैनेजर ने पेश की ईमानदारी की मिसाल, पूर्व मंत्री ने जताया आभार

भोपाल, देशबन्धु। बीना स्टेशन पर तैनात मेल ट्रेन मैनेजर पीयूष कुमार सिंह की ईमानदारी और सतर्कता की मिसाल पेश की है।

दरअसल, हाल ही में पूर्व मंत्री प्रभु सिंह ठाकुर का परिवार केरला एक्सप्रेस के बी-5 कोच में सीट संख्या 49-50 पर मथुरा से बीना तक यात्रा कर रहा था। यात्रा के दौरान परिवार की एक महिला की चांदी की पायल सीट के नीचे गिर गई, जिसकी जानकारी उस समय परिवार को नहीं हुई। इसी ट्रेन में सवार मेल ट्रेन मैनेजर पीयूष कुमार सिंह की नजर जब इस पायल पर पड़ी तो उन्होंने तुरंत सक्रियता दिखाते हुए सहयात्रियों और टिकट निरीक्षक से संपर्क किया। यात्री के पीएनआर नंबर और मोबाइल नंबर लेकर उन्होंने जानकारी जुटाई और पाया कि यह

पायल पूर्व मंत्री श्री ठाकुर के परिवार की है। श्री सिंह ने न केवल ईमानदारी का परिचय दिया बल्कि अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन करते हुए स्वयं श्री ठाकुर के निवास पर जाकर वह पायल सम्मानपूर्वक परिवार को वापस की। श्री ठाकुर ने उनकी ईमानदारी और जिम्मेदारी की सराहना करते हुए प्रशंसा पत्र प्रदान किया। उन्होंने रेलवे प्रशासन को भी पत्र लिखकर पीयूष कुमार सिंह की प्रशंसा की।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक सौरभ कटारिया ने कहा कि पीयूष कुमार सिंह के सराहनीय कार्य से रेल प्रशासन का मान बढ़ा है और यात्रियों के बीच रेलवे के प्रति विश्वास और भी मजबूत हुआ है।

लक्ष्मण सिंह गहलोत पर केन्द्रित किताब का लोकार्पण

जयपुर, देशबन्धु। देश के विख्यात जादूगर स्व. बाबू लक्ष्मण सिंह गहलोत के जीवन पर आधारित जादू लेखक,जादू पत्रकार जादूगर प्रहलाद राय द्वारा लिखित 'जादूकमल बाबू लक्ष्मण सिंह गहलोत व्यक्तित्व एवं कृतित्व' पुस्तक का पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा लोकार्पण किया गया वरिष्ठ साहित्यकार, व्यंग्य लेखक फारुक आफरीदी नें अध्यक्षता की एंवं आटो लाइट इंडिया लिमिटेड के डायरेक्टर एवं जादूगर एम पी गुप्ता के विशिष्ट अतिथि थे।

लोकार्पण अवसर पर प्रहलाद राय के पुत्र जादूगर विश्वजीत राय (नर्सिंग आफिसर), जादूगर राजीव राय (नर्सिंग अधीक्षक), धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला राय के साथ प्रियंका, रमण राय, संतोष,किरण, तनिष्क, विष्णु, सिद्धिमा और आयुषी आदि उपस्थित रहे। प्रहलाद राय की यह पुस्तक चार खण्डों और 140 पृष्ठों मे है जिसमें बाबू लक्ष्मण सिंह गहलोत के रहम दिल परिवार, उनकी जापान यात्रा, समाज सेवा, नेतृत्व क्षमता, सामाजिक समरसता आदि को विस्तार से बताया गया है।लेखक के अनुसार बाबू लक्ष्मण सिंह गहलोत के रक्त में ही जादू था।

उन्होने जीवन भर सामाजिक कुरीतियों, अंधविश्वासों के विरुद्ध संघर्ष किया। नगर परिषद जोधपुर के अध्यक्ष रहते हुए वे सदैव जातपांत से ऊपर उठकर पीड़ित मानवता की सेवा मे लगे रहे। पुस्तक में उनके सभी शिष्यों के उद्गार, उनके जयंती पर आयोजित सम्मेलन समारोहों का विस्तार से वर्णन किया गया है। पुस्तक मे उनकी स्मृति मे आयोजित परिचर्चाओं और संस्थानों का भी वर्णन है। पुस्तक के प्रकाशन से लेकर विमोचन तक साहित्यकार फारुक आफरीदी का विशेष योगदान रहा।

नक्सलियों की आड़ में आदिवासियों का कर रहे सफाया

मंडला, देशबन्धु। विगत दिनों पुलिस और नक्सली मुठभेंड के संबंध में पुलिस महानिरीक्षक बालाघाट जोन संजय कुमार ने पत्रकारवार्ता का आयोजन किया था यह वार्ता खटिया के पुलिस मेस में आयोजित की गई थी जहां पर महानिरीक्षक ने बताया कि थाना खटिया क्षेत्र अंतर्गत कान्हा नेशनल पार्क क्षेत्र में कान्हा भोरम देव डिविजन के नक्सलियों के समूह की सूचना पर 8 मार्च को क्षेत्र में सर्च ऑपरेशन किया गया था। इस दौरान हॉकफोर्स बल और नक्सलियों के बीच गोलीबारी हुई जिसमें नक्सल दल में से एक पुरूष मृत हुआ जिसके पास से 315 बोर हथियार भी जप्त हुआ है। नक्सलियों की ओर से 125 राउंड गोली चली तो वहीं पुलिस की ओर से 80 राउंड गोली चलाई गई।

वहीं नक्सल समर्थक दो व्यक्ति अशोक कुमार वल्को निवासी बंटवार, संतोष कुमार निवासी सौतिया को गिरफ्तार भी किया है जिनसे पूछताछ जारी होने की बात कहीं थी। इस घटना को लेकर पुलिस ने तमाम कहानी मीडिया को बताई और बड़े ही सदे शब्दों में इस घटना क्रम को बताते हुए जमकर वाहवाही लूटी। पुलिस ने यह भी कहा कि अभी भी सर्च अभियान जारी है। लेकिन बीते दिनो जब इस मामले का पूरा खुलासा हुआ तो पुलिस के होश उड़ गए पुलिस जिसे नक्सली बता रही थी वह स्थानीय गांव का निवासी निकला जिसकी पहचान होने के बाद पूरा मामला उलट पड़ा और यह मामला भोपाल से लेकर दिल्ली तक चर्चा में आ गया। सूत्र यह भी कह रहे है कि इस मामले में बड़ा फेरबदल भी समय आने पर दिखाई देगा। वहीं पीडित परिवार से मिलने पूर्व विधायक और कांग्रेस के प्रदेश प्रवक्त डॉ अशोक मर्सकोले पहुंचे उन्होंने पीडित परिवार से बात की और इसे अदिवासियों पर अत्याचार शोषण की संज्ञा दी। वहीं बिछिया विधानसभा के विधायक नारायण सिंह पट्टा भी पीडित परिवार के घर पहुंच चुकें हैं। इसी के साथ तमाम जनप्रतिनिधि इस मामले को लेकर सक्रिय हो गए हैं तो

दूसरी तरफ गोंडवाना गणतंत्र पार्टी इस मामले को लेकर अब आर पार की लड़ाई में दिखाई देने लगी है बीते दिनों गोंडवाना गणतंत्र पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष कमलेश तेकाम ने पत्रकारवार्ता बुलाई यहां पर उन्होंने सरकार को आडे हाथ लेते हुए जिला प्रशासन पर गंभीर आरोप भी लगाए हैं। उनका कहना है कि यह यहां नक्सलियों की आड़ पर आदिवासियों का सफाया किया जा रहा है। लेकिन वे अब शांत नही रहेंगे। उन्होंने कहा कि इस मामले को वे उच्च न्यायालय भी लेकर जायेंगे। बताया जा रहा है कि 8 मार्च को कान्हा नेशनल पार्क में नक्सलियों व सुरक्षा बल के बीच मुठभेड़ हुई थी। जिसमें एक की मौत व दो लोगों को गिरफ्तार किया गया था। मरने वाले के पहचान के काफी प्रयास के बाद हुई।

जिसके परिजनों ने बम्हनीबंजर सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पहुंचकर पहचान की। पुलिस ने शव का पीएम कराया और घर तक छोडकर आए। इस दौरान परिजनों का विरोध भी देखने को मिला। जानकारी के अनुसार मृतक की पहचान मोचा के समीपी ग्राम नारंगी निवासी हीरन बैगा के रूप में हुई। मृतक की पत्नी और भतीजे ने पुलिस पर आरोप लगाते हुए कहा कि हीरन सिंह घर से केवल कुल्हाड़ी और पानी की बोतल लेकर निकले थे। परिजनों ने फर्जी एनकाउंटर बताते हुए जिम्मेदारों पर कार्रवाई की मांग की है। गौरतलब है कि सुरक्षा बल की मुठभेड़ में एक की मौत के साथ ही दो व्यक्ति अशोक कुमार वल्को निवासी बंटवार, संतोष कुमार निवासी सौतिया को गिरफ्तार किया गया था। दोनो के वन विभाग में अस्थाई कर्मचारी के रूप में कार्य करने की बात सामने आई है। मृतक सहित तीनों कान्हा के आसपास गांव के ही है। मृतक के शव को लेकर जब पुलिस कर्मी गांव पहुंचे तो ग्रामीणों ने अंतिम संस्कार करने को तैयार नहीं थे। ग्रामीणों का आरोप था कि पुलिस ने हीरन सिंह की हत्या की है। हालांकि बाद में अंतिम संस्कार कर दिया गया है। मामले में पुलिस अधीक्षक रजत सकलेचा का कहना है कि मृतक व गिफ्तार किए गए व्यक्ति जिले के ही हैं। माना की ये महाराष्ट्र या छत्तीसगढ़ के नहीं है। लेकिन नक्सली या नक्सली समर्थक हैं। मामले की मजिस्ट्रियल जांच की जाएगी। मृतक की पत्नी का कहना है कि मेरी पति की हत्या हुई है, किसने गोली से मार दिया यह बात और आरोप अस्पताल में कहने व लगाने वाली पत्नि का अब आखिर शांत क्यों हो गई है। परिवार को प्रशासन से बैगा आदिवासी की मौत का मरहम लगाने का वायदा कर दिया है यही कारण से अब मृतक परिवार शांत हो गया है लेकिन बैगा समाज के मुखिया सोन सिंह बैगा अब आर-पार की लड़ाई लडने के मूड में है। वहीं गोंडवाना गणतंत्र पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष इंजिनियर कमलेश तेकाम तो बैगा आदिवासी की मृत्यू के मामले में सडक से लेकर न्यायालय की चैखट तक का दरवाजा खटखटाने की तैयारी कर रहे है। जिले के कलेक्टर व पुलिस अधीक्षक को हटाने के साथ ही गोंगपा प्रदेश अध्यक्ष कमलेश तेकाम ने न्यायायिक जांच में सत्ता से जुड़े हुये आदिवासी जनप्रतिनिधियों को छोडकर विपक्ष के आदिवासी जनप्रतिनिधियों व आदिवासी समाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों को भी शामिल करने की मांग की है। बिछिया विधानसभा क्षेत्र में हुई बैगा जनजाति सदस्य की मृत्यू की घटना के बाद और मृतक के अंतिम संस्कार के बाद लसरी टोला गांव में राजनैतिक दलों के जनप्रतिनिधियों का हुजुम लग रहा है। मृतक परिवार के सदस्यों में उनके भाईयों का कहना है कि हमने जंगल में जन्म लिये है और जल, जंगल, जमीन ही हमारा जीवन है। एक भाई जो कि रिसोर्ट में काम करता है उनका कहना है कि जिस दिन घटना हुई उस दिन मैं ड्यूटी में था। हमारे भाई बीते दिनों घर से कहीं चले गये थे जिसकी हमने गुमसुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई थी वहीं मृतक के एक ओर भाई नन्हें सिंह बैगा का कहना है कि हमारे भाई मजदूरी का कार्य करते थे। वहीं झाड़ू बनाने का काम भी कभी कभी करते थे। वे बीते रविवार से गायब थे। घर नहीं आने पर हमने सोमवार को उनको ढूढने गये थे। हमने बुधवार के दिन गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराये थे। जिस तरह से पुलिस बता रही है कि नक्सली व पुलिस की फायरिंग के बीच में आने से हमारे भाई की गोली लगने से मृत्यू हो गई है। यदि हम भी ढूढने के दौरान या और कोई भी बीच में या सामने आता तो पुलिस उन्हें भी गोली से मार देते है। पुलिस हमारे घर में आई थी कागजों में दस्तखत करने के लिये बोल रहे थे। हमारे भाई की पुलिस की गोली से मृत्यू हुई है हमें इंसाफ चाहिये। प्रेसवार्ता के दौरान आदिवासी समाज के वरिष्ठ कार्यकर्ता सुमारू सिंह मरावी, देवेन्द्र मरावी, ब्रजेश धुर्वे, सेम परते, दीपक धुर्वे सहित गोंडवाना गणतंत्र पार्टी के अनेक पदाधिकारी व कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

झड़प में घायल युवक की हुई मौत

रांची, एजेंसी। रांची शहर के नामकुम थाना क्षेत्र में दो गुटों के बीच हिंसक झड़प में घायल हुए एक युवक की इलाज के दौरान मौत के बाद तनावपूर्ण स्थिति बनी हुई है। मृतक युवक का नाम सोनू मुंडा था और उसके शव के साथ रविवार को सैकड़ों लोग सड़क पर उतर आए हैं। लोगों ने रांची-पुरुलिया रोड को नामकुम की जोरार बस्ती के पास जाम कर दिया है जिसके चलते सड़क पर गाड़ियों की लंबी कतार लग गई है। पुलिस-प्रशासन के अफसर आक्रोशित लोगों को समझाने में जुटे हैं। नामकुम स्टेशन के पास के लोगों और जोरार बस्ती के युवकों के बीच शुक्रवार को मामूली बात को लेकर विवाद हुआ था। युवकों के बीच उस दिन हल्की मारपीट भी हुई थी। शनिवार को होली के दिन दोनों पक्ष के लोग एक-दूसरे से भिड़ गए।

प्रथम पृष्ठ का शेष

धर्म आधारित आरक्षण का.... प्रस्ताव रखा, जिसे स्वीकृति के बाद इसे विधानसभा में पेश किया जाएगा। इससे पहले, 7 मार्च को बजट पेश करने के दौरान, मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने घोषणा की थी कि सार्वजनिक कार्यों के ठेकों में 4 प्रतिशत आरक्षण अल्पसंख्यक समुदाय को दिया जाएगा। यह आरक्षण श्रेणी सेकेंड बी के तहत आएगा। यह व्यवस्था सरकारी विभागों, निगमों और संस्थानों द्वारा वस्तुओं और सेवाओं की खरीद पर लागू होगी। एससी, एसटी और ओबीसी को इसमें पहले से आरक्षण है।

स्पेस स्टेशन में सुनीता से.... इस खास मुलाकात की तस्वीरें सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रही हैं, जिन्हें लोग खूब पसंद कर रहे हैं। स्पेसएक्स का क्रू-10 मिशन आज अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) पर सफलतापूर्वक पहुंचा। इसी ड्रैगन स्पेसक्राफ्ट से नासा के दो अंतरिक्ष यात्रियों सुनीता विलियम्स और बुच विल्मर की वापसी की उम्मीद जग गई है, जो पिछले कई महीने से अंतरिक्ष में फंसे हुए हैं।

भारत का प्रमुख कूटनीतिक सम्मेलन.... कैसे; (3) डिजिटल पृथ्वी : एजेंट, एजेंसियां और अनुपस्थिति; (4) मिलिटेंट मर्केंटिलिज्म: व्यापार, आपूर्ति श्रृंखला और विनिमय दर की लत; (5) टाइगर की तरह फुर्तीली नई योजना का विकास; (6) शांति, इसके उत्प्रेरक, संस्थान और नेतृत्व में निवेश।

लगभग 125 देशों के 3500 से अधिक प्रतिभागी व्यक्तिगत रूप से संवाद में शामिल होंगे, और कार्यवाही को विभिन्न डिजिटल प्लेटफार्मों पर दुनिया भर के लाखों लोग देखेंगे।

भारतीयों में संघर्ष व टकराव.... उस जिम्मेदारी को स्वीकार किया है। यह पूछे जाने पर कि वह आलोचनाओं को कैसे हैंडल करते हैं, प्रधानमंत्री ने कहा, अगर मुझे एक वाक्य में बताना हो, तो मैं इसका स्वागत करता हूं। मेरा दृढ़ विश्वास है कि आलोचना लोकतंत्र की आत्मा है। मैं सभी युवाओं को यह बताना चाहता हूं। जीवन में रात चाहे कितनी भी अंधेरी क्यों न हो, वह रात ही है, सुबह होनी तय है।

पत्रकार प्रकाशन प्रा.लि. के लिए गिरिराज चाचा द्वारा मेसर्स डी.बी. कार्प लिमिटेड फौजदार गैरेज पवारखेड़ा इटारसी रोड नर्मदापुरम से मुद्रित एवं 45, वार्ड नं. 6, कसेरा मुहल्ला नर्मदापुरम म.प्र. से प्रकाशित, संपादक: पलाश सुरजन, फोन 422297। ई-मेल deshbandhuhbd1@gmail.com समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के तहत जिम्मेदार।